www.deshbandhu.co.in खबरें लगातार...

राष्ट्रीय संस्करण

पत्र नहीं मित्र

देशबन्धु

नई दिल्ली, बुधवार, 26 फरवरी, 2025 | वर्ष-17 | अंक -320 | पृष्ठ - 10 | मूल्य - 3.00 रुपए

बिहार में पीएमसीएच जैसे कई और चिकित्सा ... 02

■ दिल्ली की जनता से किए वादों को पूरा करने के लिए...
■ विकसित दिल्ली संकल्प पत्र को अपनाएगी ... 03

■ बांग्लादेश में बढ़ रही अपराध दर सवालों के घेरे में...
■ ईरान में अफगान शरणार्थियों का बुरा हाल, पुलिस... 07

महाशिवरात्री आज

दिल्ली विधानसभा में कैग रिपोर्ट पेश

नई शराब नीति से दो हजार करोड़ का घाटा

विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों को तत्कालीन आबकारी मंत्री सिसोदिया ने किया था नजरअंदाज

- लाइसेंस प्रक्रिया में गड़बड़ी की बात सामने आई
- कोई भी निजी कंपनी रिटेल लाइसेंस ले सकती

नई दिल्ली, 25 फरवरी (देशबन्धु)। दिल्ली विधानसभा के दूसरे दिन मंगलवार को सदन में शराब नीति पर कैग रिपोर्ट पेश की गई। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने रिपोर्ट सदन में रखी। उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने कहा कि पिछली सरकार ने इस रिपोर्ट को रोककर रखा था। उन्होंने संविधान का खुलेआम उल्लंघन किया। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि नई शराब नीति से दिल्ली सरकार को 2002 करोड़ रुपए का घाटा हुआ। लाइसेंस प्रक्रिया में गड़बड़ी हुई। विशेषज्ञ समिति ने पॉलिसी में कुछ बदलाव के सुझाव दिए थे, जिन्हें तत्कालीन उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने नजरअंदाज कर दिया।

राजनीतिक दखल और भाई भतीजा वाद हुआ

कैग रिपोर्ट में बताया गया है कि थोक का लाइसेंस शराब वितरक और शराब निर्माता कंपनियों को भी दे दिया गया, जो कि उल्लंघन था। नीति में कोई भी निजी कंपनी रिटेल लाइसेंस ले सकती है। लाइसेंस देने से पहले आर्थिक या आपराधिक कोई जांच नहीं की गई। लिक्कर जाइन के लिए 100 करोड़ के निवेश की जरूरत होती थी। लेकिन नई पॉलिसी में इसे खत्म कर दिया गया। कैग की रिपोर्ट में खुलासा हुआ कि शराब लाइसेंस देने में राजनीतिक दखल और भाई भतीजा वाद हुआ।

शराब बिक्री का कमीशन बढ़ाया गया

नई शराब नीति में पहले के एक व्यक्ति को एक लाइसेंस मिलता था। लेकिन नई नीति में एक शख्स को दो दर्जन से ज्यादा लाइसेंस ले सकता था। पहले दिल्ली में 60 फीसदी शराब की बिक्री 4 सरकारी कॉर्पोरेशन से होती थी। लेकिन नई शराब नीति में कोई भी निजी कंपनी रिटेल लाइसेंस ले सकती है। शराब बिक्री का कमीशन 5 फीसदी से बढ़ाकर 12 फीसदी किया गया।

नई शराब नीति अधिक पारदर्शी थी : आतिशी

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा में नेता विपक्ष आतिशी ने कहा है कि आम आदमी पार्टी की सरकार की ओर से लाई गई नई शराब नीति अधिक पारदर्शी थी जिससे कालाबाजारी रूकती और सरकार का राजस्व बढ़ता, लेकिन उपराज्यपाल ने अड़चनें डालकर इसे लागू नहीं होने दिया और इसकी वजह से दिल्ली सरकार को 2000 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ। सुश्री आतिशी ने मंगलवार को संवाददाता सम्मेलन कर कहा कि आम आदमी पार्टी की सरकार द्वारा लाई गई नई शराब नीति अधिक पारदर्शी थी। इससे कालाबाजारी रूकती और सरकार का राजस्व बढ़ता, लेकिन भाजपा के उपराज्यपाल , प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने अड़चनें डालकर इसे लागू नहीं होने दिया और इसकी वजह से दिल्ली सरकार को 2000 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ।

आतिशी समेत आप के 21 विधायक निलंबित

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा में उपराज्यपाल वीके सक्सेना के अभिभाषण के दौरान हंगामे और नारेबाजी के कारण नेता विपक्ष आतिशी समेत आम आदमी पार्टी (आप) के 21 विधायकों को तीन दिन के लिए निलंबित कर दिया गया। श्री सक्सेना के अभिभाषण के दौरान आप विधायकों की ओर से उत्पन्न व्यवधान को लेकर कैबिनेट मंत्री प्रवेश साहिब सिंह ने सदन में एक प्रस्ताव लाकर अमर्यादित कार्य करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की, जिसका विधायक अभय वर्मा ने समर्थन करते हुए सभी 21 सदस्यों को तीन दिन के लिए निलंबित करने की मांग की। विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने आप के 21 विधायकों के आज समेत तीन कार्य दिवस के लिए निलंबन का प्रस्ताव रखा, जिसे सदन ने ध्वनिमत से स्वीकार कर लिया।

1984 सिख विरोधी दंगा मामला

सज्जन कुमार को मिली उम्र कैद

नई दिल्ली, 25 फरवरी (देशबन्धु)। साल 1984 के सिख विरोधी दंगों से जुड़े एक मामले में दिल्ली की राऊज एवेन्यू कोर्ट ने मंगलवार को कांग्रेस नेता सज्जन कुमार को उम्र कैद की सजा सुनाई है। यह मामला 1 नवंबर 1984 को दिल्ली के सरस्वती विहार इलाके में दो सिख नागरिक जसवंत सिंह और उनके बेटे तरुणदीप सिंह को जिंदा जलाने का है। इस दौरान सिखों का नरसंहार हुआ था और उनके घरों को आग के हवाले कर दिया गया था।

बाप-बेटे हत्याकांड में मिली सजा

अदालत ने गत 12 फरवरी को सज्जन कुमार को दोषी करार दिया था। इस मामले को लेकर शुरुआत में पंजाबी बाग थाने में एफआईआर दर्ज की गई थी। बाद में जस्टिस जीपी माथुर कमेटी की सिफारिश पर गठित विशेष जांच दल ने आरोप पत्र दाखिल किया। समिति ने 114 मामलों को फिर से खोलने की सिफारिश की थी, जिनमें यह मामला भी शामिल था। अदालत ने 16 दिसंबर 2021 को सज्जन कुमार के खिलाफ आरोप तय किए थे।

हमले में कई लोग घायल हुए थे

एसआईटी ने आरोप लगाया कि सज्जन कुमार ने भीड़ को हमला करने के लिए उकसाया, जिसके बाद भीड़ ने सरदार जसवंत सिंह और सरदार तरुणदीप सिंह को जिंदा जला दिया। इस दौरान उनका घर भी जला दिया गया था। इस हमले में घर के कई लोग घायल भी हुए थे।

सार संक्षेप

17 महीने बाद जेल से रिहा हुए अब्दुल्ला आजम

हरदोई। समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता आजम खान के बेटे अब्दुल्ला आजम खान को 17 महीने बाद मंगलवार को हरदोई जेल से रिहा कर दिया गया है। उनकी रिहाई के बाद जेल के बाहर समर्थकों और समाजवादी पार्टी के नेताओं का जमावड़ा लग गया। मुरादाबाद से सपा सांसद रुचि वीरा भी हरदोई पहुंचीं और इस फैसले पर खुशी जताई।

भीषण सड़क हादसे में पिता और बेटा-बेटी की मौत

उन्नाव। आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस वे पर मंगलवार सुबह भीषण सड़क हादसा हुआ। यहां बस और कार के बीच हुई टक्कर में एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत हो गई। हादसा आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस वे के बांगरमऊ में माइलस्टोन 229 के पास हुआ। बताया जा रहा है कि महाकुंभ से लौट रही श्रद्धालुओं से भरी बस की एक कार से आमने-सामने की टक्कर हो गई। हादसा इतना भीषण था कि कार सवार मासूम भाई-बहन समेत पिता की दर्दनाक मौत हो गई।

आप विधायक अमानतुल्लाह खान को मिली राहत

नई दिल्ली। दिल्ली की ओखला विधानसभा सीट से आम आदमी पार्टी के विधायक अमानतुल्लाह खान को मंगलवार को बड़ी राहत मिली। राऊज एवेन्यू कोर्ट ने मंगलवार को अमानतुल्लाह खान की अग्रिम जमानत मंजूर कर ली। इस मामले में उन पर सरकारी कर्मचारियों के काम में बाधा डालने का आरोप है।

पंजाब विधानसभा में केंद्र की नीति के खिलाफ प्रस्ताव पास

चंडीगढ़, 25 फरवरी (एजेंसियां)। पंजाब विधानसभा के दो दिवसीय सत्र के आखिरी दिन कृषि मंत्री गुरमीत सिंह खुड्डियां ने राष्ट्रीय कृषि मार्केटिंग नीति के खिलाफ प्रस्ताव पेश किया। इसमें उन्होंने कहा कि इस नीति के साथ राज्य की शक्तियों पर केंद्र काबिज होने की कोशिश कर रहा है। इसमें कहीं भी एमएसपी का जिक्र नहीं किया गया। किसान भी इसके विरोध में हैं।

वहीं, स्पीकर कुलतार सिंह संधवां ने कहा कि किसान इस नीति के खिलाफ हैं। किसानों का मानना है कि राज्यों की मंडियों पर इसका नेगेटिव असर होगा। किसानों को महसूस होता है कि इस नीति से उन्हें अपनी फसलों का उचित मूल्य नहीं मिलेगा।

- राष्ट्रीय कृषि मार्केटिंग नीति के खिलाफ प्रस्ताव पेश किया
- कहा, इससे तीन रद्द कृषि कानून वापस लाने की कोशिश

इससे एपीएमसी मंडियां तबाह हो जाएंगी

इससे एपीएमसी मंडियां तबाह हो जाएंगी। यह सरकारी मंडियों को खत्म करने का प्रयास है। किसानों के लंबे विरोध के बाद 2021 में रद्द किए गए 3 कृषि कानूनों को दोबारा वापस लाने की कोशिश है। मुख्यमंत्री भगवंत मान ने कहा कि हम इस नीति का विरोध करते हैं। इसी के साथ केंद्रीय कृषि मार्केटिंग बिल के खिलाफ विधानसभा में प्रस्ताव पास कर दिया गया।

किसानों की तपस्या अभी जारी है

प्रस्ताव पर मुख्यमंत्री मान ने कहा कि इस बिल में कुछ बदला नहीं जा रहा, सिर्फ 3 काले कानूनों को वापस लाया जा रहा है। किसान आंदोलन में 800 की मौत हो चुकी है। उनकी तपस्या अभी जारी है। अभी पता नहीं, उनकी तपस्या में और कितनी जानें जाएंगी। उन्होंने कहा कि थोड़ी डिटेल में जाएं तो केंद्र सरकार पता नहीं क्यों, पंजाब को नफरत की भावना से देख रही है।

एडवांटेज असम 2.0 समिट में बोले मोदी

भारत के 140 करोड़ लोगों पर दुनिया को भरोसा

गुवाहाटी, 25 फरवरी (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने असम के गुवाहाटी में एडवांटेज असम 2.0 समिट का उद्घाटन किया। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा को बधाई देते हुए भारत के विकास में पूर्वोत्तर के विकास को भी रेखांकित किया।

उन्होंने कहा कि दुनिया का भरोसा भारत के उन 140 करोड़ लोगों पर है, जो राजनीतिक स्थिरता और निरंतरता को सपोर्ट कर रहे हैं। दुनिया का भरोसा भारत की उस गवर्नेंस पर है, जो लगातार स्ट्रांग हो रही है। पीएम मोदी ने कहा, आज जब भारत विकसित होने की तरफ बढ़ रहा है, तो एक बार फिर हमारा ये नॉर्थईस्ट अपना सामर्थ्य दिखाने जा रहा है। मैं असम सरकार को हिमंत बिस्वा सरमा की पूरी टीम को इस भव्य आयोजन के लिए बहुत-बहुत बधाई। उन्होंने कहा, मुझे याद है, 2013 में इलेक्शन कैंपेन के लिए असम का दौरा कर रहा था, तो एक सभा में मेरे मन से सहज ही एक शब्द निकला था। मैंने कहा था, 'वह दिन दूर नहीं जब लोग अल्फाबेट पढ़ाना शुरू करेंगे और कहेंगे 'ए से असम होगा।'

प्रधानमंत्री मोदी ने भारत के विकास में पूर्वोत्तर के विकास को भी रेखांकित किया

प्रधानमंत्री मोदी ने आगे कहा, आज हम सभी वैश्विक परिस्थितियों को बहुत बारीकी से देख और समझ रहे हैं।

कमजोर वर्ग के बच्चों की छात्रवृत्ति में हुई बड़ी कटौती : खरगे

युवाओं की छात्रवृत्तियों को मोदी सरकार ने हथियाने का काम किया

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने मोदी सरकार पर दलित, आदिवासी, पिछड़ा और अल्पसंख्यक वर्ग के छात्रों की छात्रवृत्ति हड़पने का आरोप लगाते हुए कहा है कि जब तक उन्हें पर्याप्त संरक्षण नहीं मिलेगा वे आगे नहीं बढ़ सकते हैं। श्री खरगे ने प्रधानमंत्री को संबोधित करते हुए सोशल मीडिया पोस्ट में कहा नरेन्द्र मोदी जी, देश के एससी, एसटी, ओबीसी तथा अल्पसंख्यक वर्ग के युवाओं की छात्रवृत्तियों को आपकी सरकार ने हथियाने का काम किया है। ये शर्मनाक सरकारी आंकड़े बताते हैं कि सरकार ने लाभार्थियों के सभी वजीफों मे भारी कटौती तो की है साथ ही औसतम साल-दर-साल 25 प्रतिशत फंड भी कम खर्च किया है।

आपका 'सबका साथ, सबका विकास' का नारा, रोज़ाना कमजोर वर्गों के अरमानों का मजाक उड़ाता है : **खरगे**

अगले साल से सीबीएसई बोर्ड परीक्षा में बड़ा बदलाव

साल में दो बार होगी 10वीं की परीक्षा

नई दिल्ली, 25 फरवरी (एजेंसियां)। साल 2026 से सीबीएसई बोर्ड की दसवीं क्लास की परीक्षा में बड़ा बदलाव देखने को मिलेगा। बोर्ड ने बड़े बदलाव को लेकर फैसला भी ले लिया है, जिसके तहत 2026 से कक्षा 10वीं की बोर्ड परीक्षा साल में दो बार आयोजित की जाएगी। इस बदलाव का मुख्य कारण छात्रों को अपनी तैयारी को बेहतर बनाने और परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करने का एक और मौका देना है। 10वीं बोर्ड परीक्षा का पहला चरण फरवरी-मार्च में होगा और दूसरा चरण मई में आयोजित किया जाएगा। छात्रों को दोनों परीक्षाओं में बैठने का ऑप्शन मिलेगा, लेकिन यह जरूरी नहीं होगा। अगर कोई छात्र पहली परीक्षा से संतुष्ट नहीं है, तो वह दूसरी परीक्षा में शामिल हो सकता है और अपने अंकों में सुधार कर सकता है। छात्रों को साल में दो बार परीक्षा देने का मौका मिलेगा। अगर पहली परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन नहीं होता, तो दूसरी परीक्षा में सुधार किया जा सकता है। परीक्षा का दबाव कम होगा, जिससे छात्र बिना टेंशन के पढ़ाई कर सकेंगे।

पहला चरण फरवरी-मार्च में होगा

परीक्षा का डर कम होगा

सीबीएसई का यह फैसला नई शिक्षा नीति के तहत लिया गया है। यह प्रोसेस छात्रों की मानसिक सेहत और उनके सीखने की प्रक्रिया को ध्यान में रखकर लिया गया है। इस बदलाव से परीक्षा का डर कम होगा और छात्रों को अपनी पढ़ाई के लिए ज्यादा मौका मिलेगा।

सूखे पत्ते की तरह होगा भाजपा का सफाया : अखिलेश

गरीब, किसान, महाकुंभ सहित अन्य मुद्दों पर राज्य सरकार को घेरा

कन्नौज, 25 फरवरी (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव अभी दो साल दूर है। इस बीच समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव ने दावा किया है कि आगामी चुनाव में सूखे पत्ते की तरह भाजपा का सफाया हो जाएगा। कन्नौज पहुंचे सपा प्रमुख ने मीडिया से बातचीत में प्रदेश सरकार पर निशाना साधते हुए गरीब, किसान, महाकुंभ सहित अन्य मुद्दों पर राज्य सरकार को घेरा। महाकुंभ की खराब व्यवस्था के लिए उन्होंने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने कहा, मुख्यमंत्री महाकुंभ की व्यवस्था की निगरानी खुद कर रहे थे। लेकिन, महाकुंभ में हादसा हुआ, कई लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी। सरकार मौत का सही आंकड़ा नहीं पेश कर रही है क्योंकि उसे डर है कि अगर कहीं मौत का आंकड़ा जारी कर दिया तो उनकी सच्चाई सबके सामने आ जाएगी।

- सरकार मौत का सही आंकड़ा नहीं पेश कर रही

सपा प्रमुख ने कहा कि उन्होंने कभी गंगा के पानी पर सवाल नहीं उठाया, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने गंगा के पानी को खराब बताया। लेकिन, उत्तर प्रदेश का प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड कह रहा है कि गंगा का पानी साफ है।

लालू, तेजस्वी व अन्य आरोपियों को कोर्ट से समन

दिल्ली, 25 फरवरी (एजेंसियां)। दिल्ली की राऊज एवेन्यू कोर्ट से लैंड फॉर जॉब मामले में मंगलवार को राष्ट्रीय जनता दल (राजद) सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव को झटका लगा है। कोर्ट ने लालू प्रसाद यादव, तेजस्वी यादव और प्रकरण में संलिप्त अन्य आरोपियों को तलब किया है। सभी को 11 मार्च को कोर्ट के समक्ष पेश होने के लिए कहा गया है। स्पेशल सीबीआई जज विशाल गोगने ने केंद्रीय जांच ब्यूरो द्वारा दायर आरोप पत्रों पर संज्ञान लेने के बाद आदेश दिया। केंद्रीय जांच एजेंसी ने इस मामले में 30 सरकारी कर्मचारियों और 78 लोगों को नामजद किया है।

11 मार्च को पेश होने के लिए कहा गया

परेशानी — *कनाडा के नए वीजा नियम हुए प्रभावी*

भारतीय छात्रों और कामगारों पर पड़ेगा असर

ओटोवा, 25 जनवरी, (एजेंसियां)। प्रवासन को रोकने के लिए कनाडा के नवीनतम कदम भारत सहित हजारों विदेशी छात्रों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं। इसका उन लोगों पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा जो वर्क और रेजिडेंट परमिट के लिए आवेदन करते हैं। यह नए नियम फरवरी की शुरुआत से प्रभावी हो गए हैं और इनके तहत कनाडाई बॉर्डर अधिकारियों को (यदि वे ऐसा करना जरूरी समझें) - छात्रों, कामगारों और प्रवासियों के वीजा स्टेट्स में किसी भी समय बदलाव करने की शक्तियां मिल गई हैं।

नए इमिग्रेशन और शरणार्थी संरक्षण विनियमों के तहत, कनाडाई बॉर्डर कर्मियों को अब अस्थायी निवासी दस्तावेजों जैसे इलेक्ट्रॉनिक यात्रा प्राधिकरण या ईटीए और अस्थायी रेजिडेंट वीजा या टीआरवी को अस्वीकार करने की शक्तियां प्रदान की गई हैं। इसका मतलब यह है कि सीमा अधिकारी अब ऐसे डॉक्यूमेंट्स को रद्द कर सकते हैं, जिनमें वर्क परमिट और स्टूडेंट वीजा शामिल हैं। हालांकि परमिट और वीजा को अस्वीकार करने के लिए कुछ दिशा-निर्देशों का पालन करना जरूरी है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक इसमें एक दिशा-निर्देश यह भी है कि अगर कोई अधिकारी इस बात से आश्वस्त नहीं है कि व्यक्ति अपने अधिकृत प्रवास की अवधि समाप्त होने के बाद कनाडा छोड़ देगा, तो वे कनाडा में रहने के दौरान भी उसके प्रवेश को अस्वीकार कर सकता है या उसका परमिट रद्द कर सकता है। इस तरह का निर्णय लेने की विवेकाधीन शक्तियां पूरी तरह से अधिकारी के पास निहित हैं। इन नए नियमों और विनियमों में अनिश्चितता की गुंजाइश है, और यह संभावित रूप से बड़ी संख्या में अंतरराष्ट्रीय छात्रों और श्रमिकों को प्रभावित कर सकते हैं।

- अधिकारियों को मिले ज्यादा अधिकार

कनाडा में 4.2 लाख से अधिक भारतीय छात्र

कनाडा, भारतीय छात्रों, श्रमिकों और कानूनी प्रवासियों के लिए सबसे पसंदीदा गंतव्यों में से एक है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, वर्तमान में कनाडा में अपनी उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले भारतीय छात्रों की संख्या 4.2 लाख से अधिक है। यदि किसी छात्र, कर्मचारी या प्रवासी को प्रवेश से वंचित कर दिया जाता है, तो उन्हें प्रवेश के समय बंदरगाह पर रोक दिया जाएगा और उनके देश वापस भेज दिया जाएगा।

देश

उवाच

"ईवीएम में गड़बड़ी है, जैसा कि मस्क और ट्रंप समेत कई इस बात पर जोर दे रहे हैं, पर प्रधानमंत्र मोदी अपने मित्र की बात को स्वीकार नहीं कर रहे हैं। उनका मानना है कि चुनाव आयोग अब निरंकुश बन चुका है। लोकतंत्र को बचाए रखने को आवश्यक नियंत्रण लागू किया जाए।
–दिग्विजय सिंह, कांग्रेस नेता

तापमान	अधिकतम	न्यूनतम
दिल्ली	26.0	16.0
मुंबई	31.0	24.0
कोलकाता	28.0	18.0
चेन्नई	30.0	26.0

बिहार में पीएमसीएच जैसे कई और चिकित्सा केंद्र हों स्थापित : द्रौपदी मुर्मु

■ **पीएमसीएच के शताब्दी वर्ष समारोह को किया संबोधित**

पटना, 25 फरवरी (एजेंसियां)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने बिहार में पटना चिकित्सा महाविद्यालय एवं अस्पताल (पीएमसीएच) जैसे कई चिकित्सा केंद्र विकसित करने की आवश्यकता पर बल देते हुए मंगलवार को कहा कि इससे राज्य में बेहतर चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध होंगी और आर्थिक प्रगति को भी बढ़ावा मिलेगा। मुर्मू ने मंगलवार को यहां पीएमसीएच के शताब्दी वर्ष समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि पीएमसीएच बिहार की अमूल्य धरोहरों में से एक है, जिसका गौरवशाली इतिहास रहा है। यह संस्थान प्राचीनता और आधुनिकता का बेहतरीन संयोजन है और एशिया के सर्वश्रेष्ठ अस्पतालों में से एक माना जाता है। उन्होंने इस संस्थान के पूर्व छात्रों की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने अपनी प्रतिभा, सेवा और समर्पण से भारत और विदेशों में पीएमसीएच का नाम रोशन किया है। राष्ट्रपति ने बिहार सरकार को ऐसे और चिकित्सा केंद्र खोलने का सुझाव दिया। इलाज के लिए दूसरे राज्यों में जाने से इलाज में देरी, भोजन और आवास की असुविधा, रोजगार संबंधी चुनौतियां और बड़े शहरों के अस्पतालों पर बढ़ते बोझ जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। यदि देश भर में अच्छे चिकित्सा संस्थानों की संख्या बढ़ाई जाए तो इन सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है।

पीएमसीएच बिहार की अमूल्य धरोहरों में से एक है, जिसका गौरवशाली इतिहास रहा है : द्रौपदी मुर्मु

कैंसर को लेकर राष्ट्रपति ने जताई चिंता

राष्ट्रपति ने कहा कि तकनीक के माध्यम से इलाज, शोध में किसी भी कोने से मदद मिल सकती है। इससे न केवल चिकित्सकों को बल्कि रोगियों को भी लाभ होगा। कैंसर को लेकर राष्ट्रपति ने चिंता जताते हुए कहा कि इसके लिए स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर करना और शोध को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है। दरअसल, पटना का पीएमसीएच शताब्दी समारोह मना रहा है। मुर्मू ने कहा कि चेन्नई, हैदराबाद, मुंबई और इंदौर जैसे शहर विशेष चिकित्सा सुविधाओं के हब बन चुके हैं और बिहार को भी इसी दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि इससे राज्य में बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं मिलेंगी और आर्थिक विकास को भी गति मिलेगी। इस मौके पर पटना के बापू सभागार में पीएमसीएच के शताब्दी समारोह में बतौर मुख्य अतिथि राष्ट्रपति शामिल हुईं। कार्यक्रम में 3000 से ज्यादा डॉक्टरों को सम्मानित किया गया। उन्होंने बिहार सरकार के स्वास्थ्य के क्षेत्र के लिए किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि पीएमसीएच में भी बेड की संख्या बढ़ाई जा रही है। उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि

आधुनिक तकनीकों के उपयोग पर दिया जोर

राष्ट्रपति ने आधुनिक तकनीकों के उपयोग पर भी जोर दिया और कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और रोबोटिक्स जैसी उन्नत तकनीकों के समावेश से चिकित्सा प्रक्रियाएं सरल और अधिक सटीक होंगी, जिससे मरीजों को बेहतर इलाज मिल सकेगा। साथ ही चिकित्सकों की दक्षता और ज्ञान भी बढ़ेगा। मुर्मू ने चिकित्सकों से समाज में योगदान देने की अपील की और कहा कि वह केवल चिकित्सक ही नहीं बल्कि शोधकर्ता, शिक्षक और परामर्शदाता भी होते हैं। उनकी भूमिका समाज और राष्ट्र निर्माण में बेहद महत्वपूर्ण है। उन्होंने चिकित्सा समुदाय से रक्तदान और अंगदान के प्रति जागरूकता फैलाने का आग्रह किया ताकि अधिक से अधिक लोगों की जान बचाई जा सके।

मप्र निवेश के लिए प्रत्येक लिहाज से बेहतर : शाह

भोपाल, 25 फरवरी (एजेंसियां)। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने देश विदेश के निवेशकों से मध्यप्रदेश में निवेश करने का अनुरोध करते हुए आज कहा कि यह राज्य निवेश के लिए आकर्षक केंद्र बना हुआ है और निवेश के लिए यहां पर अनुकूल वातावरण है। शाह ने दो दिवसीय ग्लोबल इंवेस्टर्स समिट (जीआईएस) के समापन अवसर पर आयोजित समारोह को संबोधित किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव,

राज्य के मुख्य सचिव अनुराग जैन, अनेक मंत्री और देश विदेश के उद्योग जगत के प्रतिनिधि भी मौजूद थे। इसके पहले डॉ. यादव ने अपने संबोधन में कहा कि राज्य में दो दिन के आयोजन के दौरान निवेश संबंधी 30 लाख 77 हजार करोड़ रुपयों के प्रस्ताव मिले हैं। शाह ने कहा कि दो दिनों के दौरान जो प्रस्ताव मिले हैं, उन्हें उम्मीद है कि ये शीघ्र ही धरातल पर आकार लेंगे। उन्होंने कहा कि यहां पर स्थिर सरकार और पारदर्शी प्रशासन होने के साथ ही अन्य सुविधाएं हैं। कभी इस राज्य की गिनती बीमारू राज्य के रूप में होती थी, लेकिन 20 सालों में भाजपा के शासन के दौरान सड़क, बिजली, पानी, सिंचाई और अन्य

उत्तर प्रदेश शिक्षक भर्ती में हुआ बड़ा घोटाला : कांग्रेस

■ **मामले की उच्च स्तरीय जांच की मांग की**

नई दिल्ली, 25 फरवरी (एजेंसियां)। कांग्रेस ने कहा है कि उत्तर प्रदेश में 69 हजार शिक्षकों की भर्ती में आरक्षित वर्ग के बच्चों के साथ अन्याय हुआ है और उनके लिए निर्धारित कोटे में अनारक्षित वर्ग के युवकों की भर्ती की गई है, जो संविधान का उल्लंघन है इसलिए इस पूरे मामले की उच्च स्तरीय जांच की जानी चाहिए। कांग्रेस सांसद तनुज पुनिया ने मंगलवार को यहां पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में उप्र सरकार द्वारा की जा रही इस शिक्षक भर्ती को बड़ा घोटाला बताया और कहा कि राज्य सरकार आरक्षित वर्ग के युवाओं के साथ धोखा कर रही है और उन्हें मानकों के अनुसार भर्ती प्रक्रिया में आरक्षण नहीं दिया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि उप्र में 69,000 शिक्षकों की भर्ती का एक नया घोटाला सामने आया है। एक मीडिया रिपोर्ट में बताया गया है कि इस भर्ती में 18,500 आरक्षित सीटों में एससी, एसटी तथा ओबीसी वर्ग के लोगों को नौकरी मिलनी थी, लेकिन इसमें से केवल 2,637 सीटों पर ही आरक्षण लागू किया गया। इन आरक्षित सीटों में बाकी 15,863 सीटों पर अनारक्षित वर्ग के लोगों को नौकरी दी गई। यह फैसला संविधान में दिए गए आरक्षण पर हमला है और सामाजिक न्याय के खिलाफ है। उप्र में 69,000 शिक्षक भर्ती में लिया गया यह फैसला संविधान और आरक्षण के खिलाफ है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार दलित, अनुसूचित समाज, ओबी ओबीसी समाज के लोगों को नौकरी से वंचित रखने का काम कर रही है। इस फैसले के खिलाफ जिन छात्रों और शिक्षकों ने आवाज उठाई, उन्हें भी सरकार ने दबाने और कुचलने का काम किया। बाबा साहेब अंबेडकर ने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय की बात कही थी लेकिन सरकार लोगों को इससे वंचित रख रही है। इसी न्याय की लड़ाई हमारे नेता लड़ते आए हैं और लड़ रहे हैं। हमारे नेता लगातार सामाजिक न्याय, हिस्सेदारी,

सार संक्षेप

लोस अध्यक्ष ओम बिरला ने महाशिवरात्रि पर दीं शुभकामनाएं

नई दिल्ली। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने महाशिवरात्रि की पूर्व संध्या पर देशवासियों को शुभकामनाएं दीं। अपने संदेश में बिरला ने कहा भगवान शिव आदि और अनंत हैं, एक संपूर्ण चेतना हैं, जिनका न कोई प्रारंभ है और न कोई अंत। वे आदियोगी हैं और ध्यान और वैराग्य के प्रतीक भी हैं। भगवान शिव की आराधना के महापर्व महाशिवरात्रि के शुभ अवसर पर महादेव का वंदन तथा सभी को मंगलकामनाएं। भोलेनाथ की कृपा से सभी के जीवन में सुख, शांति और समृद्धि बनी रहे।

जम्मू में मादक पदार्थों की तस्करी में एक गिरफ्तार

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने मंगलवार को कान्हाचक क्षेत्र के रिंग रोड कांटवाला में मादक पदार्थों की तस्करी में शामिल एक कुख्यात तस्कर को गिरफ्तार करके उसके पास से अफीम और नकदी जब्त की। पुलिस ने बताया कि उनकी टीम ने नियमित वाहन जांच के दौरान जम्मू से रिंग रोड के रास्ते भवाल की ओर आ रहे एक वाहन को रोका। जांच करने पर वाहन से 1.54 किलोग्राम चूरा पोस्त और 48,000 रुपये नकद बरामद किए गए। चालक जम्मू के भवाल तहसील के कांगेर निवासी शौकत अली है।

अरूणाचल प्रदेश की यात्रा पर जाएंगे जगदीप धनखड़

नई दिल्ली। उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ बुधवार को एक दिन की यात्रा पर अरूणाचल प्रदेश जाएंगे। उप राष्ट्रपति सचिवालय के अनुसार धनखड़ राज्य के कामले जिले के कंपोरिजो मंडल में न्योकुम यूलो उत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे।

50 वर्ष से अधिक उम्र के ज्यादातर भारतीय शिंगल्स बीमारी से अनजान

नई दिल्ली। एक हालिया वैश्विक सर्वेक्षण में सामने आया है कि भारत में 50 वर्ष या उससे अधिक उम्र के 56.6 प्रतिशत लोग शिंगल्स बीमारी के बारे में बहुत कम या बिल्कुल भी जानकारी नहीं रखते हैं। जबकि इस आयु वर्ग के 90 प्रतिशत से अधिक लोगों के शरीर में इस वायरस की मौजूदगी होती है, जिससे उन्हें शिंगल्स होने का खतरा बढ़ जाता है। शिंगल्स जागरूकता सप्ताह (24 फरवरी से 2 मार्च, 2025) के अवसर पर जारी इस सर्वेक्षण के नतीजे यह दर्शाते हैं कि बढ़ती उम्र के साथ स्वास्थ्य संबंधी जोखिमों को लेकर जागरूकता काफी सीमित है। विशेष रूप से उन लोगों में भी जागरूकता की भारी कमी पाई गई, जो पहले से डायबिटीज, सीओपीडी, अस्थमा, हृदय रोग या क्रोनिक किडनी डिसीज जैसी बीमारियों से ग्रस्त हैं। भारत में सर्वेक्षण में भाग लेने वाले 61 प्रतिशत लोगों को कोई न कोई स्वास्थ्य समस्या थी, लेकिन केवल 49.8 प्रतिशत ने ही शिंगल्स को लेकर चिंता जाहिर की।

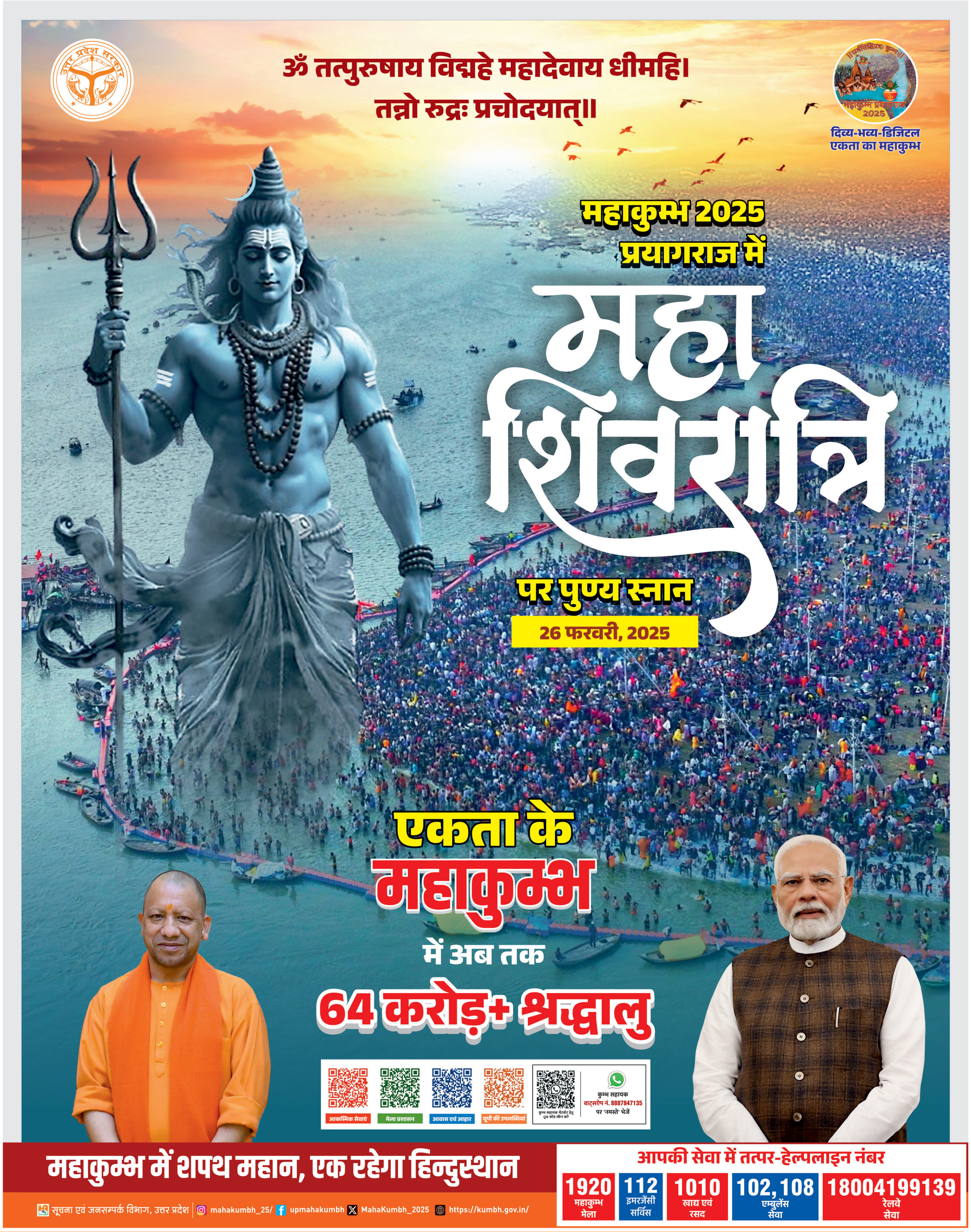

उल्टा पुल्टा

पिता ने बेटे से कहा : लड़की वालों के सामने बड़ी-बड़ी बातें करना, लड़की वालों के आते ही बेटे ने पिता से कहा : पापा चाबी देना वो ट्रेन धूप में खड़ी है, उसे अंदर कर दूं...

दिल्ली की जनता से किए वादों को पूरा करने के लिए आम आदमी पार्टी तत्पर : महेश कुमार

हंगामे के बीच निगम के 12 हजार कच्चे कर्मचारियों को पक्का करने का प्रस्ताव पास

नई दिल्ली, 25 फरवरी (देशबन्धु)। दिल्ली नगर निगम की आम आदमी पार्टी की सरकार ने मंगलवार को एक साथ 12 हजार कर्मचारियों को पक्का करने का प्रस्ताव सदन में पास किया। हालांकि सदन की बैठक के दौरान भाजपा के पार्षदों द्वारा जमकर हंगामा किया। मेयर ने बताया कि भाजपा के हंगामे के बावजूद 100 गज या इससे कम के एरिया में बने मकानों के लिए हाउस टैक्स पूरी तरह से माफ करने का प्रस्ताव भी पारित कर दिया गया। इसके तहत समय से हाउस टैक्स जमा करने पर 100 से 500 गज के मकानों पर 50 फीसद और 1300 रिहायशी सोसायटी को भी हाउस टैक्स में 25 फीसद की छूट मिलेगी। दिल्ली नगर निगम के मेयर महेश कुमार खिंची ने मंगलवार को एमसीडी के सदन में हुए हंगामे के बाद प्रेस वार्ता को सम्बोधित किया। इस मौके पर डिप्टी मेयर रविंद्र भारद्वाज और नेता सदन मुकेश गोयल भी मौजूद थे। मेयर ने कहा कि आम आदमी पार्टी जनता से किए वादों को पूरा करने के लिए तत्पर है। उन्होंने कहा कि आज के सदन में बीजेपी के हंगामे के बावजूद हमने निगम के 12000 कर्मचारियों को नियमित करने का प्रस्ताव पारित कर दिया है। साथ ही 100 गज और उससे कम के क्षेत्र पर बने घरों के लिए हाउस टैक्स पूरी तरह से माफ करने सम्बन्धी प्रस्ताव भी पारित कर दिया गया है। मेयर ने बताया कि इसके तहत 100-500 गज के क्षेत्र के मकानों के लिए हाउस टैक्स को आधा कर दिया जाएगा। साथ ही 1300 रिहायशी सोसायटी को समय से हाउस टैक्स भरने पर हाउस टैक्स में 25 प्रतिशत की छूट दी जाएगी। मेयर महेश खिंची ने बताया कि सदन की बैठक में बीजेपी द्वारा किए गए हंगामे में दो ऑन टेबल प्रस्ताव भी पास कर दिए गए है। इसके साथ ही सदन की कार्यवाही अगली बैठक तक के लिए स्थगित कर दिया गया है। नेता सदन मुकेश गोयल ने बताया कि सदन में 70 से ज्यादा पार्षद आम आदमी पार्टी के थे।

- सौ गज या इससे कम के एरिया में बने मकानों के लिए हाउस टैक्स पूरी तरह से माफ करने का प्रस्ताव भी पारित
- सदन की बैठक के दौरान भाजपा के पार्षदों ने किया जमकर हंगामा

आप बहुमत खो चुकी है, तुरंत सदन बुलाकर बहुमत सिद्ध करें : राजा इकबाल सिंह

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम में नेता प्रतिपक्ष सरदार राजा इकबाल सिंह एवं दिल्ली भाजपा प्रवक्ता प्रवीण शंकर कपूर ने कहा है की गत 2 वर्ष में आम आदमी पार्टी की निगम स्थाई समिति ना बनने देने की हठधर्मी ने दिल्ली नगर निगम के विकास एवं प्रशासनिक कार्यों को ठप्प कर दिया है। गत कुछ माह में अनेक 'आप' पार्षद पार्टी छोड़कर भाजपा में शामिल हुए हैं जिसके बाद 'आप' के बहुमत पर प्रश्नचिन्ह लग गए हैं। इस सबके बाद आज जिस तरह महापौर ने निगम सदन बैठक को असंवैधानिक रूप से विपक्ष की अनुपस्थिति में मात्र तीन मिनट चलाया उसने साबित कर दिया की वह बहुमत खो चुके हैं।

विकसित दिल्ली संकल्प पत्र को अपनाएगी सरकार : वीके सक्सेना

महिला सम्मान योजना और वृद्धा पेंशन को लेकर एलजी ने की बड़ी घोषणा

नई दिल्ली, 25 फरवरी (देशबन्धु)। दिल्ली के उपराज्यपाल वी. के. सक्सेना ने मंगलवार को कहा कि दिल्ली सरकार लोगों से किए गए वादों को पूरा करने के लिए मार्गदर्शक दस्तावेज के रूप में 'विकसित दिल्ली संकल्प पत्र को अपनाएगी। नवगठित आठवीं दिल्ली विधानसभा को संबोधित करते हुए सक्सेना ने राष्ट्रीय राजधानी के लिए दिल्ली सरकार के दृष्टिकोण और प्राथमिकताओं को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि नयी सरकार भ्रष्टाचार मुक्त शासन, महिला सशक्तीकरण, स्वच्छ दिल्ली, यमुना के कायाकल्प और स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने पर ध्यान केंद्रित करेगी। उपराज्यपाल ने दावा किया कि पिछले एक दशक से लगातार राजनीतिक टकराव और आरोप-प्रत्यारोप के कारण दिल्ली की प्रगति बाधित हुई है। प्रभावी शासन सुनिश्चित करने के लिए नयी सरकार केंद्र और अन्य राज्यों के साथ समन्वय में काम करेगी। नयी सरकार की प्रमुख प्राथमिकताओं को सूचीबद्ध करते हुए सक्सेना ने भ्रष्टाचार मुक्त प्रशासन, बेहतर शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, गरीबों का कल्याण, विश्व स्तरीय सड़कें, प्रदूषण मुक्त दिल्ली, स्वच्छ पेयजल, अनधिकृत कॉलोनियों के नियमितीकरण और यमुना के पुनरुद्धार सहित कई क्षेत्रों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सभी विभागों को इन प्राथमिकताओं के क्रियान्वयन के लिए 100 दिन की कार्ययोजना तैयार करने का निर्देश दिया गया है। सरकार सत्र के दौरान नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक कैग की रिपोर्ट भी पेश करेगी, ताकि पिछली सरकार की कमियों का विश्लेषण किया जा सके और सुधार के लिए खाका तैयार किया जा सके। आप के नेतृत्व वाली सरकार की आलोचना करते हुए सक्सेना ने कहा कि मेरी सरकार का प्राथमिक उद्देश्य धुंआधार विज्ञापन के जरिए छिपाई गई घटिया व्यवस्था को खत्म करना और शासन को फिर से पटरी पर लाना होगा।

सार संक्षेप

एबीसी ट्रांसफॉर्मर्स एलेक्रामा 2025 में अभिनव समाधान प्रदर्शित करेगा

नई दिल्ली। एबीसी ट्रांसफॉर्मर्स, इलेक्ट्रिकल ट्रांसफॉर्मर और सर्वो वोल्टेज स्टेबलाइजर्स का एक प्रमुख निर्माता और निर्यातक, एलेक्रामा 2025 में अपनी भागीदारी की घोषणा करते हुए उत्साहित है, जो दुनिया की सबसे बड़ी बिजली और संबद्ध इलेक्ट्रॉनिक्स प्रदर्शनी है। यह आयोजन 22-26 फरवरी, 2025 तक ग्रेटर नोएडा के इंडिया एक्सपो मार्ट में आयोजित किया जा रहा है। एलेक्रामा 2025 में, एबीसी ट्रांसफॉर्मर्स अपने नवीन और ऊर्जा-कुशल ट्रांसफार्मर समाधानों की नवीनतम श्रृंखला का प्रदर्शन करेगा, जिनमें स्किड माउंटेड ट्रांसफार्मर- शहरी क्षेत्रों के लिए निर्मित जहां जगह एक बाधा है। एबीसी ट्रांसफॉर्मर्स के निदेशक गुरिंदर बंसल ने बताया हम एलेक्रामा 2025 का हिस्सा बनकर रोमांचित हैं और हमें ट्रांसफार्मर तकनीक में अपनी नवीनतम प्रगति को प्रदर्शित करने का अवसर मिला है।

ग्लोब टेक्सटाइल्स कंपनी ने तीसरी तिमाही में 53.7 प्रतिशत का लाभ दर्ज किया

नई दिल्ली। टेक्सटाइल उद्योग में अग्रणी कंपनियों में से एक ग्लोब टेक्सटाइल्स ने थर्ड क्वॉर्टर और नौ महीनों के फायनान्शियल रीजल्ट्स की घोषणा की है। कंपनी ने रेवेन्यू और प्रोफिट में महत्वपूर्ण वृद्धि दर्ज की है, जो कंपनी की बिज़नेस स्ट्रेटेजी और ओपरेशन्स की सफलता दर्शाती है। 31 दिसंबर 2024 को खत्म हुए क्वार्टर के लिए रेवेन्यू 46.2 प्रतिशत 15,159.21 लाख हो गया जबकि पिछले वर्ष की इसी समयावधि में यह 10,367.19 लाख था। कंपनी का नेट प्रोफिट 53.7 प्रतिशत बढ़कर 291.42 लाख हो गया जो पहले 189.55 लाख था। ग्लोब टेक्सटाइल्स के चेयरमैन और एम डी भाविक पारिख ने कहा कि हमारा सतत मजबूत प्रदर्शन हमारी स्ट्रेटेजी, इफेक्टिव ओपरेशन्स और सतत ग्रोथ के प्रति स्ट्रोंग कमिटमेन्ट को दर्शाता है।

कार्बन स्टील सोर्सिंग पर विश्व की पहली पुस्तक का किया गया विमोचन

कार्यक्रम में उद्योग जगत के दिग्गज, नीति निर्माता व सम्मानित अतिथि रहे उपस्थित

नई दिल्ली, 25 फरवरी (देशबन्धु)। वैश्विक स्टील उद्योग एक ऐतिहासिक क्षण का साक्षी बना जब कार्बन स्टील सोर्सिंग पर विश्व की पहली और एकमात्र पुस्तक 'मास्टरींग कार्बन स्टील सोर्सिंग' फ्रॉम डोमेस्टिक सप्लायर्स टू ग्लोबल पार्टनरशिप, जो कि केएनडी स्टील के कार्यकारी निदेशक पंकज एन उमरानिया द्वारा लिखी गई है, का आधिकारिक विमोचन हीरो स्टील्स लिमिटेड के कार्यकारी निदेशक एवं सीईओ जितेंद्र शर्मा द्वारा किया गया। इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम में उद्योग जगत के दिग्गज, नीति निर्माता और सम्मानित अतिथि उपस्थित रहे, जिनमें जेबीएम ग्रुप, हीरो स्टील्स, चीफ मेटलर्जिस्ट, हैवेल्स इंडिया, फिलिप्स लाइटिंग इंडिया और एयर इंडिया के प्रतिनिधि शामिल थे। इनकी उपस्थिति ने इस क्रांतिकारी प्रकाशन और स्टील उद्योग पर इसके प्रभाव के महत्व को रेखांकित किया। इस पुस्तक विमोचन के अवसर पर, पंकज एन उमरानिया ने कहा कि यह पुस्तक मेरी उस गहरी समझ से प्रेरित है, जहां कि मैंने विभिन्न व्यवसायों को विश्वसनीय और उच्च-गुणवत्ता वाले कार्बन स्टील की सोर्सिंग में आने वाली चुनौतियों से जूझते हुए देखा है।

सोर्सिंग प्रक्रियाओं को सरल बनाने व लाभप्रदता बढ़ाने के इच्छुक : उमरानिया

पंकज एन उमरानिया ने कहा कि यह उद्योग विशेषज्ञों के लिए व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करती है, जो अपनी सोर्सिंग प्रक्रियाओं को सरल बनाने और लाभप्रदता बढ़ाने के इच्छुक हैं। इस पुस्तक की एक प्रमुख विशेषता भारत के विकसित होते स्टील बाजार पर केंद्रित है, जो वैश्विक खरीदारों के लिए प्रतिस्पर्धात्मक और उच्च-गुणवत्ता वाले सोर्सिंग समाधान प्रदान करने के विविध अवसर प्रस्तुत करता है। यह पुस्तक उद्योग के लिए गेम-चेंजर साबित होगी, जो कंपनियों को सोर्सिंग उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आवश्यक ज्ञान प्रदान करेगी।

आध्यात्मिक कार्यक्रम साई संध्या का किया आयोजन

नई दिल्ली, 25 फरवरी (देशबन्धु)। राजधानी दिल्ली के सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम में बहुप्रतीक्षित वार्षिक आध्यात्मिक कार्यक्रम, साई संध्या का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में प्रसिद्ध सूफी गायक हमसर हयात ने शानदार प्रस्तुति दी, जिन्होंने साईं भजनों और सूफी भक्ति गीतों की मनमोहक प्रस्तुतियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस शुभ अवसर पर एनईसी समूह के प्रबंध निदेशक प्रशांत श्रीवास्तव ने आभार व्यक्त किया और इस आयोजन के महत्व को साझा करते हुए कहा कि साईं संध्या एनईसी समूह और बड़े पैमाने पर समाज से जुड़े सभी लोगों की भलाई के लिए साईं बाबा का आशीर्वाद प्राप्त करने का हमारा तरीका है। इस सभा के माध्यम से, हम सभी के लिए समृद्धि, अच्छे स्वास्थ्य और उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रार्थना करते हैं। इस वर्ष, हमारी प्रार्थनाएं हमारे राष्ट्र की निरंतर प्रगति और मानवता के उत्थान के लिए भी हैं। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई, जिसके बाद पवित्र गणेश वंदना की गई, जिसने कार्यक्रम के लिए शुभ स्वर स्थापित किया। जैसे-जैसे रात बढ़ती गई, दर्शक हमसर हयात द्वारा प्रस्तुत एक के बाद एक भक्ति गीतों से मंत्रमुग्ध हो गए, जिसमें दीवाना तेरा आया बाबा, बंदा गरीब है, साईं बाबा साईं, और साईं तू मेरी फरियाद सुन साईं जैसी उनकी प्रसिद्ध प्रस्तुतियां शामिल थीं। धुनों ने दिव्य संबंध और आध्यात्मिक परमानंद का माहौल बना दिया। बता दें कि नवाचार और उत्कृष्टता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को जारी रखते हुए, एनईसी ग्रुप ने हाल ही में नोएडा में एक और उत्पादन सेटअप खोला है। मेक इन इंडिया पहल में एक गौरवशाली योगदानकर्ता के रूप में, एनईसी समूह देश के विनिर्माण क्षेत्र में भारी निवेश कर रहा है।

साईं भजनों व सूफी भक्ति गीतों की प्रस्तुतियों से दर्शक हुए मंत्रमुग्ध

डीएसएसटीएफ ने किया राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन

नई दिल्ली, 25 फरवरी (देशबन्धु)। द्वारका सेक्टर-6 स्थित एम एल खन्ना डीएवी पब्लिक स्कूल के सभागार में दिल्ली राज्य विज्ञान शिक्षक फोरम डीएसएसटीएफ की ओर से राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन किया गया। फोरम का यह कार्यक्रम सर सी-वी रमन की उत्कृष्ट खोज 'रमन प्रभाव' जिसे 28 फरवरी 1930 में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई और उन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस सुअवसर पर मुख्य प्रवक्ता प्रो. डॉ. राकेश कुमार शर्मा भूतपूर्व वाइस चांसलर एसआई एमएटीएस, पूर्व निर्देशक डीआरडीओ-डीएफआरएल मैसूर तथा वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राजीव वाष्णेय ने अपने अपने क्षेत्र की उपलब्धियों का सरल शब्दों में उल्लेख कर विज्ञान शिक्षकों एवं सभी श्रोताओं का ज्ञानवर्धन कराया और डीआरडीओ जैसी राष्ट्रीय संस्था का प्रमुख योगदान पर भी नवीनतम जानकारी प्रेषित की। इस अवसर पर दिल्ली राज्य विज्ञान शिक्षक फोरम ने कमल, वंदना, गरुग्राम एवं ट्रिनिटी ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस दिल्ली-एनसीआर के अध्यक्ष और अंतरराष्ट्रीय रामलीला एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. वेद टंडन का स्वागत किया तथा शिक्षा के क्षेत्र में तथा भावी पीढ़ी में सनातन संस्कृति के मूल्यों के लिए उनके योगदान की सराहना की।

सनातन संस्कृति के मूल्यों के लिए डॉ. वेद टंडन की हुई सराहना

द स्टेट्समैन विंटेज कार रैली दो मार्च को

नई दिल्ली, 25 फरवरी (देशबन्धु)। राजधानी में गुजरे जमाने की दुर्लभ कारों की बहुप्रतीक्षित ' द स्टेट्समैन विंटेज एंड क्लासिक' कार रैली का 58वां संस्करण इस बार दो मार्च को होने जा रहा है। इस विंटेज कार रैली में दुर्लभ वाहनों के शौकीन लोग, मोटर वाहन इतिहास के प्रेमी और विंटेज और क्लासिक कारों का संग्रह रखने वाले पूरी शानो-शौकत और जोशोखरोश से शामिल होते हैं।

आयोजकों की ओर से उपलब्ध जानकारी के अनुसार इस बार 'द स्टेट्समैन विंटेज एंड क्लासिक कार रैली' के लिये प्रतिभागी वाहनों की प्री-जजिंग (निर्णय पूर्व जांच परख) नयी दिल्ली में बाराखंभा रोड स्थित मॉडर्न स्कूल में 28 फरवरी को अपराह्न 2:00 बजे से शाम 5:00 बजे तक और एक मार्च को पूर्वाह्न 9:30 बजे से शाम 5:00 बजे तक की जाएगी। रैली के कार्यक्रम दो मार्च को पूर्वाह्न 10:00 बजे बाराखंभा रोड स्थित द स्टेट्समैन हाउस पर भव्य ध्वजारोहण-समारोह के साथ शुरू होगा। खूबसूरती से संभाल एवं सहेज कर रखी गयी पुरानी और क्लासिक कारों का काफिला वहां से निकलेगा।

अंबेडकर की फोटो को लेकर प्रदर्शन जारी रहेगा : आतिशी

नई दिल्ली, 25 फरवरी (देशबन्धु)। आप के नेता एवं दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री आतिशी ने मंगलवार को कहा कि दिल्ली सरकार के कार्यालयों में बाबा साहेब अंबेडकर के चित्र को पुन: उसके समुचित स्थान पर लगाए जाने की मांग को लेकर उनकी पार्टी धरना प्रदर्शन जारी रखेगी।

उत्तर रेलवे

खुली निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से, मंडल अभियंता-चतुर्थ, मंडल रेल प्रबन्धक कार्यालय उत्तर रेलवे, नई दिल्ली द्वारा निम्न कार्य के लिए ई-निविदाएं आमंत्रित की जाती है।

क्र सं.	कार्य का नाम	अनुमानित राशि	धरोहर राशि	समाप्ति अवधि	निविदा खुलने की तिथि
1	दिल्ली-भटिंडा सेक्शन पर विभिन्न स्टील गर्डर पुलों पर एच-बीम स्लीपर नवीनीकरण टीबीएसआर।	रु 21479426.51/-	रु 257400.00/-	9 माह	21.03.2025

सुचना निविदा रेलवे की वेबसाइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है तथा इसी वेबसाइट पर 21.03.2025 15.00 बजे तक ही भरी जायगी। पत्र सं - 128-डब्ल्यू/280/ओईटी/2024-25/डब्ल्यू-IV/एनआईटी-120 दिनांक 24.02.2025 612/2025

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

उत्तर रेलवे

इलेक्ट्रोनिक निविदा ई-प्रणाली के अंतर्गत मदों की आपूर्ति हेतु निविदा आमंत्रण

टेंडर नोटिस सं. 100/2024-2025 दिनांक 24.02.2025

भारत के राष्ट्रपति की ओर से प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबन्धक, उत्तर रेलवे, नई दिल्ली-110001 द्वारा इच्छुक फर्मों से निम्नलिखित मदों के लिये ई-निविदा आमंत्रित की जाती है :-

क्र. सं.	निविदा सं.	संक्षिप्त विवरण	मात्रा	अंतिम तिथि
01	03240990A	विनाइल कोटेड उपहोल्स्टरी फेब्रिक	165265 मीटर	17.03.25
02	10255030A	प्रीमियम ब्लैंकेट कवर वाइट	27079 नग	28.03.25
03	10255033A	प्रीमियम बेडशीट 1A, 2A, 3A वाइट	3196656 नग	28.03.25
04	10255028A	प्रीमियम पिलो कवर वाइट	1563833 नग	28.03.25
05	09252014	एक्सल एन्ड कैप स्क्रू	198173 नग	01.04.25

निविदा शर्ते-1. विस्तृत जानकारी IREPS वेबसाइट यानि www.ireps.gov.in पर देखी जा सकती है। 2. मैनुअल निविदा स्वीकृत नहीं की जायेगी।

609/25

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

उत्तर रेलवे

खुली ई-निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति के लिए और उनकी ओर से वरिष्ठ मंडल यांत्रिक अभियंता (कोचिंग), उत्तर रेलवे, दिल्ली मंडल अनुभवी और सक्षम निविदाकारों से एक लिफाफिय प्रणाली निम्नलिखित कार्य हेतु मुहरबंद ई-निविदा आमंत्रित की जाती है।

1	कार्य का नाम	दिल्ली मंडल के एलएचबी कोचों पर विनाइल रैपिंग की आपूर्ति, प्रयोग और बहाली का कार्य दो वर्ष की अवधि के लिए
2	कार्यस्थल	दिल्ली
3	कार्य की अवधि	दो (02) वर्ष
4	विज्ञापित मूल्य	रु. 3,06,54,099.00 (जीएसटी के प्रावधान सहित)
5	बयाना राशि जमा की जानी है	रु. 3,03,300/-, केवल नेट बैंकिंग या गेटवे के माध्यम से
6	निविदा प्रपत्र मूल्य	रु. 0.00
7	ई-निविदा प्रपत्र प्राप्त करने का समय	दिनांक 25.02.2025 16:00 बजे से 19.03.2025 12:00 बजे तक
8	ई-निविदा बंद होने की तिथि और समय	दिनांक 19.03.2025 12:00 बजे
9	ई-निविदा खुलने की तिथि और समय	दिनांक 19.03.2025 को 12:00 बजे के बाद, यदि खुलने की तारीख अवकाश होता है, तो अगले कार्य दिवस पर ई-निविदा खोली जाएगी
10	ई-निविदा खोलने का स्थान	यांत्रिक विभाग, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, उत्तर रेलवे, स्टेट एंट्री रोड, नई दिल्ली-55

नोट: निविदा का पूर्ण विवरण वेबसाइट www.ireps.gov.in में मिल सकता है।

संख्या: NR-DLI0MCNW42025 दिनांक: 25.02.2025 620/2025

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

उपलब्धि

डीएमआरसी ने फेज-4 गोल्डन लाइन पर एक और महत्वपूर्ण टनलिंग उपलब्धि हासिल की

छतरपुर मंदिर व इग्नू स्टेशन के बीच भूमिगत सुरंग का निर्माण पूर्ण

नई दिल्ली, 25 फरवरी (देशबन्धु)। दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन डीएमआरसी ने फेज़-4 के निर्माण कार्य में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। तुगलकाबाद- एरोसिटी कॉरिडोर के छतरपुर मंदिर और इग्नू स्टेशन के बीच एक भूमिगत सुरंग का निर्माण पूरा कर लिया गया है। इग्नू स्टेशन पर टनल बोरिंग मशीन टीबीएम की सफल ब्रेकथ्रू प्रक्रिया में मंगलवार को आनंद मोहन बजाज, उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक, प्रमोद कुमार, अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक, डॉ. विकास कुमार, प्रबंध निदेशक, डीएमआरसी और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहें।

टनल बोरिंग मशीन ने मंगलवार सुबह इग्नू स्टेशन पर, 1475.00 मी. लंबी सुरंग का निर्माण पूरा कर लिया। यह कार्य 97 मी. लंबी विशाल टीबीएम का उपयोग करके संपन्न किया गया। इस खंड में अप और डाउन मूवमेंट के लिए दो समानांतर गोलाकार सुरंगों का निर्माण किया जा रहा है। दूसरी समानांतर सुरंग का ब्रेकथ्रू मार्च 2025 में निर्धारित है। यह नई सुरंग औसतन 26.0 मी. की गहराई पर बनाई गई है न्यूनतम गहराई 15.0 मी. और अधिकतम 36 मी., जिससे यह दिल्ली मेट्रो की सबसे गहरी सुरंगों में से एक बन गई है। हौज खास स्थित मैजेंटा लाइन की सुरंग लगभग 30 मी. की गहराई पर बनी है। इस सुरंग में 1048 रिंग्स लगाए गए हैं, जिनका आंतरिक व्यास 5.8 मीटर है। इस सुरंग का निर्माण ईपीबीएम अर्थ प्रेशर बैलेंसिंग मेथड तकनीक का उपयोग करके किया गया है, जिसमें प्रीकास्ट टनल रिंग्स की कंक्रीट लाइनिंग की गई है। इन टनल रिंग्स को मुंडका में स्थापित एक पूरी तरह से स्वचालित कास्टिंग यार्ड में तैयार किया गया था। कंक्रीट सेगमेंट को शीघ्र मजबूती प्रदान करने के लिए स्टीम क्योरिंग सिस्टम के माध्यम का उपयोग किया गया। इस सुरंग की बोरिंग प्रक्रिया 04.12.2023 को शुरू हुई थी, जिसमें तीव्र ढलान और अभ्रक तथा कठोर चट्टान जैसी विविध भूगर्भीय चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इस कारण स्क्रू ऑगर क्षतिग्रस्त हो गया और इसे सुरंग निर्माण के दौरान बदला गया। मौजूदा वायाडक्ट और आसपास के निर्मित ढांचों के नीचे सुरंग निर्माण के दौरान सभी आवश्यक सुरक्षा उपाय अपनाए गए। पास की संरचनाओं पर उच्च संवेदनशीलता वाले उपकरण लगाए गए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कोई भी भूमि धंसाव न हो। अब तक स्वीकृत फेज-4 कार्य के तहत कुल 40.109 कि.मी. भूमिगत लाइनों का निर्माण किया जा रहा है, जिसमें एरोसिटी-तुगलकाबाद कॉरिडोर के तहत 19.343 कि.मी. भूमिगत सेक्शन शामिल हैं। टीबीएम एक ऐसी मशीन है जिसका उपयोग विभिन्न प्रकार की मिट्टी और चट्टानों में गोलाकार क्रॉस-सेक्शन वाली सुरंगों की खुदाई के लिए किया जाता है। ये मशीनें कठोर चट्टानों से लेकर रेत तक किसी भी प्रकार की भूगर्भीय संरचना में सुरंग निर्माण में सक्षम हैं।

टीबीएम ने वैश्विक स्तर पर टनलिंग कार्यों में क्रांति ला दी है, जिससे बिना किसी इमारत या सतही संरचना को नुकसान पहुंचाए सुरंगों की खुदाई संभव हो गई है। शहरी क्षेत्रों में भूमिगत टनलिंग कार्यों के लिए टीबीएम विशेष रूप से उपयोगी हैं। डीएमआरसी फेज़-1 से ही अपने टनलिंग कार्यों में टीबीएम का उपयोग कर रहा है। फेज़-3 के दौरान लगभग 50 कि.मी. भूमिगत सेक्शन का निर्माण किया गया था, जिसमें लगभग 30 टीबीएम का उपयोग किया गया था।

- 97 मीटर लंबी विशाल टीबीएम का उपयोग करके संपन्न किया गया कार्य

कैपिटल ज़ोन

उवाच "

शहर में 53 करोड़ की लागत से चल रहे इंटीग्रेटेड ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम के कार्यों को तेजी से कराया जा रहा है लगभग 41 सिगनलों पर आईटीएमएस लगाया जाएगा। लगभग 300 कैमरे भी स्थापित किए जाएंगे। सर्वे का कार्य संबंधित टीम द्वारा पूर्ण कर लिया गया है, प्रोजेक्ट कंप्लीट करने के लिए आ रहे अवरोधों के बारे में भी बैठक में चर्चा हुई जिसमें निगम अधिकारियों को अन्य सरकारी विभागों से समन्वय स्थापित करते हुए कार्य पूर्ण करने की निर्देश दिए गए हैं : **विक्रमादित्य सिंह मलिक,** नगर आयुक्त।

शीघ्र लगाए जाएंगे दो सौ विद्युत पोल

खोड़ा, 25 फरवरी (देशबन्धु)। निकाय क्षेत्र के तहत जिन गलियों में बिजली के पोल नहीं लगे है या पोल जर्जर हो गए अथवा पोलो की दूरी विद्युत निगम के नियमों के विपरीत है। आरडीएसएस और बिजनेस प्लान योजना के तहत लगभग दो सौ नए पोल जल्द ही लगाए जायेगे। विद्युत निगम के उपखंड अधिकारी ने बताया कि खोड़ा में कई ऐसी पतली गलियां है जहां से पोल की लंबी दूरी है। अथवा गलियों में विद्युत पोल ही नहीं लगे है। पोल से विद्युत केबिल घर की बालकनी या छत के आस पास जा रही है। सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से नए पोल लगाकर दूरी को कम किया जाएगा। उन्होंने बताया कि कई गलियों में नए पोल लगा दिए गए है। जिन विहारों में अभी पोल नहीं लगे है दो माह के अंदर लगा दिए जाएंगे। उन्होंने बताया कि गीतांजलि विहार और प्रताप विहार में पोल लगाए जा चुके है। पोल लगाने के उपरांत केबिल खींची जाएगी। विद्युत पोल और केबिलों के लगने से रखरखाव और निर्बाध विद्युत आपूर्ति में लोगों को सहूलियत होगी।

इंटीग्रेटेड ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम के चल रहे कार्यों की नगर आयुक्त ने की समीक्षा

गाजियाबाद, 25 फरवरी (देशबन्धु)। नगर निगम मुख्यालय पर नगर आयुक्त ने मंगलवार को इंटीग्रेटेड ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम हेतु चल रहे कार्यों की समीक्षा की गई। बैठक में इफकोन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की टीम तथा निगम की संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। नगर आयुक्त द्वारा 30 सितम्बर तक समस्त कार्रवाई पूर्ण करते हुए प्रोजेक्ट कंप्लीट करने के निर्देश टीम को दिए, निर्माण विभाग मुख्य अभियंता निर्माण नरेंद्र कुमार चौधरी को मॉनिटरिंग प्रबल करने के लिए कहा गया।नगर आयुक्त बताया कि शहर में 53 करोड़ की लागत से चल रहे इंटीग्रेटेड ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम के कार्यों को तेजी से कराया जा रहा है लगभग 41 सिगनलों पर आईटीएमएस लगाया जाएगा। लगभग 300 कैमरे भी स्थापित किए जाएंगे। सर्वे का कार्य संबंधित टीम द्वारा पूर्ण कर लिया गया है, प्रोजेक्ट कंप्लीट करने के लिए आ रहे अवरोधों के बारे में भी बैठक में चर्चा हुई जिसमें निगम अधिकारियों को अन्य सरकारी विभागों से समन्वय स्थापित करते हुए कार्य पूर्ण करने की

इंटीग्रेटेड ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम हेतु सर्वे का कार्य हुआ पूर्ण : नगर आयुक्त

निर्देश दिए गए हैं, विद्युत विभाग तथा जल निगम विभाग से समन्वय स्थापित करने के लिए कहा गया है। इंटीग्रेटेड ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम प्रोजेक्ट के लिए किया जा रहे कार्यों को संबंधित टीम द्वारा मॉनिटरिंग किया जा रहा है नगर आयुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक द्वारा इंदिरापुरम के क्षेत्र को भी फेस टू में शामिल करने के लिए टीम को निर्देश दिए हैं जिसके क्रम में इंदिरापुरम के क्षेत्र में भी इंटीग्रेटेड ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम की कार्रवाई की जाएगी योजना बनाई जा रही है, बैठक में अधिशासी अभियंता निर्माण एसके मिश्रा तथा इफकोन से मोहित गिरधर प्रोजेक्ट हेड, संदीप, नीरज, राजीव, विकास, अमन, अंकित व टीम उपस्थिति रही। नगर आयुक्त गाजियाबाद के नेतृत्व ट्रैफिक व्यवस्था को बेहतर करने के लिए निगम की टीम जुटी हुई है इंटीग्रेटेड ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम की शुरुआत से न केवल चालान की कार्रवाई सरल होगी बल्कि होने वाली दुर्घटनाओं में भी कमी आएगी नागरिक को जागरूकता भी होगी।

संभव के अंतर्गत नगर आयुक्त ने सुनी जन समस्याएं

गाजियाबाद, 25 फरवरी (देशबन्धु)। नगर आयुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक ने संभव के अंतर्गत जनसुनवाई की गई लगभग 24 मामले प्राप्त हुए। संभव के दौरान अपर नगर आयुक्त अरुण कुमार यादव, नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉक्टर मिथिलेश, अधिशासी अभियंता जल कामाख्या प्रसाद आनंद, मुख्य कर निर्धारण अधिकारी डॉ. संजीव, प्रभारी उद्यान डॉक्टर अनुज अन्य उपस्थित रहे।

संभव के दौरान निर्माण विभाग से पांच शिकायत स्वास्थ्य विभाग से चार, टैक्स विभाग से चार शिकायत, जलकल विभाग से छह संदर्भ अतिक्रमण संबंधित एक संदर्भ उद्यान संबंधित तीन संदर्भ तथा संपत्ति विभाग संबंधित एक संदर्भ प्राप्त हुआ अधिकांश समस्याएं जलकल विभाग से प्राप्त हुई जिस पर नगर आयुक्त द्वारा कड़े निर्देश टीम को दिए गए प्राप्त संदर्भों का एक सप्ताह में निस्तारण करते हुए रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए कहा गया।

- प्राप्त हुए 24 संदर्भ, अधिकारियों को कार्रवाई के दिए निर्देश
- जलकल विभाग की अधिक शिकायतों पर सख्त हुए नगर आयुक्त, अधिकारियों की लगाई क्लास

गाजियाबाद नगर निगम लगातार जन समस्याओं के समाधान पर विशेष कार्रवाई कर रहा है इसी क्रम में नगर आयुक्त द्वारा भी मॉनिटरिंग प्रबल करने के लिए वरिष्ठ प्रभारी को कहा गया है कई जनप्रतिनिधियों द्वारा भी संभव में शहर के विकास कार्यों पर चर्चा की गई।

सार संक्षेप

परमपिता परमात्मा के यहां देर है अंधेर नहीं : इंद्रजीत

गाजियाबाद। राष्ट्रीय ठोक डाल अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के उपाध्यक्ष सरदार

इंद्रजीत सिंह ने 1984 के दंगा पीड़ितों को इंसाफ देने पर न्यायालय का स्वागत किया है उन्होंने कहा कि इस निर्णय से निश्चित तौर पर पीड़ितों के मन को शांति मिलेगी। उन्होंने कहा है कि कोर्ट गुरु द्वारा श्री गुरु सिंह सभा की पूरी कमेटी ने भी इस नैना का स्वागत किया है साथी उम्मीद की है कि जिन परिवारों को अब तक निर्णय नहीं मिला है और जिन दोषियों को सजा नहीं मिली है अदालत उनके साथ भी इंसाफ करेगी। दिल्ली की (राउज एवेन्यू कोर्ट) ने 1984 के सिख विरोधी दंगों के मामले में (कांग्रेस के पूर्व सांसद सज्जन कुमार) को उम्रकैद की सजा सुनाई है। 1984 में जिन परिवारों के साथ अत्याचार हुआ था उसे समय इस दुखद हादसे में कई परिवारों ने अपने परिवार के सदस्यों को खो दिया था और कई परिवारों के घर जला दिए गए थे दंगाइयों के द्वारा यह एक ऐसा दुखद हादसा था जिसको कभी भूल नहीं जा सकता।

मेट्रो स्टेशन के पास बदमाशों ने आईफोन लूटा

नोएडा। सेक्टर-16 मेट्रो स्टेशन के पास बाइक सवार बदमाशों ने एक व्यक्ति का आईफोन लूट लिया। बदमाशों ने पीड़ित को धक्का देकर नीचे गिराने का भी प्रयास किया। फेज वन थाने में दी शिकायत में बिजनौर के धामपुर निवासी डा. राजेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि 20 फरवरी को वह सेक्टर-16 मेट्रो स्टेशन के पास सर्विस रोड से निरुला होटल की तरफ आ रहे थे। इसी दौरान बाइक सवार दो बदमाश पीछे से आए और शिकायतकर्ता का मोबाइल लूटकर फरार हो गए। बाइक पर पीछे बैठे बदमाश ने झपट्टा मारा था। बाइक चला रहे युवक ने हेलमेट लगा रखा था। पुलिस ने अज्ञात बदमाशों के खिलाफ केस दर्ज कर मामले की जांच शुरु कर दी है।

एयरलाइंस कर्मी की हत्या मामले में गैंगस्टर के भाई पर 25 हजार का इनाम घोषित

नोएडा। बीते साल 19 जनवरी को सेक्टर-104 स्थित हाजीपुर गांव में एयरलाइंस कर्मी सूरज मान की बदमाशों ने गोलियों से भूनकर हत्या कर दी थी। अब इस मामले में दिल्ली के गैंगस्टर कपिल मान के सगे भाई हरजीत मान पर नोएडा पुलिस ने 25 हजार रुपए का इनाम घोषित किया है। लंबे समय तक फरार रहने के चलते उसपर डीसीपी नोएडा की ओर से इनाम घोषित किया गया है। पुलिस के मुताबिक 19 जनवरी 2024 की दोपहर सिकंदर ने साथी शूटर कुलदीप उर्फ कल्लू और अब्दुल कादिर के साथ मिलकर सूरज मान की गोली मारकर हत्या कर दी थी। इस मामले में मुख्य आरोपी सिकंदर समेत 12 आरोपियों को अबतक गिरफ्तार किया जा चुका है। अंतिम गिरफ्तारी शूटर सिकंदर की ही हुई थी। गोली चलाने वाले दो शूटरों को दिल्ली पुलिस ने वारदात के एक सप्ताह के भीतर ही गिरफ्तार कर लिया था। एयरलाइन कर्मी की हत्या जनवरी 2024 में गैंगवार के चलते की गई थी। हत्या जेल में बंद दो गैंगस्टरों कपिल मान और प्रवेश मान के बीच चली आ रही आपसी रंजिश का नतीजा थी। बीते साल ही दिल्ली क्राइम ब्रांच ने गैंगस्टर कपिल मान की पत्नी काजल खत्री को गिरफ्तार किया था।

अवैध कॉलोनियों के खिलाफ जीडीए का अभियान तेज, मुरादनगर में चला बुलडोजर

गाजियाबाद, 25 फरवरी (देशबन्धु)। जीडीए का बुलडोजर मंगलवार को ग्राम भिक्कनपुर मुरादनगर निकट इंद्रप्रस्थ कॉलोनी में

चला। प्रवर्तन दल 2 की टीम ने मुरादनगर में संतोष व रवींद्र आदि द्वारा लगभग 7000 वर्ग मीटर पर मिट्टी भराई व चिनाई का कार्य, देवेन्द्र, नितिन कुमार, रविन्द्र व सचिन आदि लगभग 6000 वर्ग मीटर पर मिट्टी भराई व दीवारों का निर्माण, हेमलता नरेंद्र गर्ग, योगेश शर्मा व दिनेश शर्मा लगभग 18 बीघा पर अनाधिकृत कॉलोनी एवं श्रीमती हेमलता, दिनेश शर्मा व योगेश शर्मा द्वारा पूर्व मे निर्मित कॉलोनी के दायीं एवं बायीं ओर लगभग 20-20 बीघा में अनाधिकृत कॉलोनी का निर्माण एवं विकास कार्य किया जा रहा था।

सभी अवैध निर्माणों के विरुद्ध प्रारंभिक स्तर पर ही ध्वस्तीकरण की कार्यवाही करते हुए सड़क, बाउण्ड्रीवाल, साईट ऑफिस आदि को ध्वस्त किया गया।

ध्वस्तीकरण की कार्रवाई के दौरान कोलोनाईजर / निर्माणकर्ता द्वारा भारी विरोध प्रकट किया गया, लेकिन पुलिस व प्राधिकरण प्रवर्तन दस्ते की प्रभावी कार्रवाई के द्वारा उनको डंडे फटक कर भगा दिया गया।

जीडीए ने शुरू किया राजनगर एक्सटेंशन में बंधा रोड से नूरनगर को जोड़ने वाली सड़क के चौड़ीकरण के लिए पिलरिंग चिन्हीकरण

गाजियाबाद, 25 फरवरी (देशबन्धु)। विकास प्राधिकरण (जीडीए) ने राजनगर एक्सटेंशन में बंधा रोड से नूरनगर को जोड़ने वाली नई सड़क के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है। किसानों की मांग पर 18 मीटर और 24 मीटर चौड़ी सड़क के लिए पिलरिंग कर चिन्हीकरण की प्रक्रिया शुरू की जा रही है।

प्राधिकरण की भू-अर्जन और अभियंत्रण अनुभाग की संयुक्त टीम ने स्थल का निरीक्षण किया और टोटल स्टेशन सर्वे (टी एसएस) द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट के आधार पर सजरा से मिलान का कार्य किया जा रहा है। इससे यह स्पष्ट

होगा कि सड़क निर्माण के लिए कौन सी भूमि किसानों से आपसी सहमति से क्रय करनी है। किसानों के अनुरोध पर पिलरिंग कर भूमि क्रय की प्रक्रिया को सुगम बनाने के लिए आपसी सहमति से बैनामा कराने की योजना बनाई गई है।

पिलरिंग के माध्यम से किए गए चिन्हीकरण से किसानों को भी स्पष्ट जानकारी मिलेगी, जिससे भविष्य में किसी तरह के विवाद की संभावना नहीं रहेगी। गाजियाबाद विकास प्राधिकरण का यह कदम न केवल मानचित्र पास कर आय की वृद्धि करेगा, बल्कि किसानों और स्थानीय निवासियों को भी सुगम यातायात की सुविधा प्रदान करेगा। प्राप्त आय से अन्य विकास कार्य भी कराए जाएंगे।

गाजियाबाद पुलिस ने मोदीनगर से पकड़ा अवैध कफ सीरप का जखीरा

गाजियाबाद, 25 फरवरी (देशबन्धु)। थाना ट्रोनिका सिटी पुलिस व औषधि निरीक्षक की सयुक्त टीम ने मंगलवार को मोदीनगर में एक गौदाम में भण्डारित अवैध औषधि एसक्फ कफ सीरप का जखीरा पकड़ा है जिसकी बाजार में कीमत 87 लाख रुपए है। गोदाम से कुल 273 गत्ते जिसमें कुल 40926 शीशियां बरामद हुई है और एक आरोपी को व भी गिरफ्तार किया गया है। यह कफ सीरप बिहार जानी थी कफ सीरप की सप्लाई, नशा करने के लिए होता है।

- बिहार जानी थी कफ सीरप की सप्लाई, नशा करने के लिए होता है प्रयोग

डीसीपी ग्रामीण एस एन तिवारी ने बताया कि थाना ट्रोनिका सिटी कमिश्नरेट गाजियाबाद पुलिस व औषधि निरीक्षक की संयुक्त टीम ने मुखबिर की सूचना पर थाना ट्रोनिका सिटी क्षेत्रान्तर्गत ग्राम इलायचीपुर में एचडीएफसी बैंक के निकट एक गौदाम में बिना लाईसेन्स के भण्डारित अवैध औषधि खासी का सिरप बरामद की।जिसमें एक शीशी की बाजार कीमत 211 रुपए व बरामद कुल 40926 शीशियों की बाजार कीमत करीब 87 लाख रूपए है। मौके से 1 शातिर अभियुक्त गौतम सिंह निवासी ग्राम मुहम्मदनगर डीहा, थाना रामगांव जिला बहराईच को गिरफ्तार किया गया।

पूछताछ करने पर आरोपी ने बताया कि यह पूरा माल (खासी का सिरप) विमल पाण्डेय व मनोज कुमार का है। हम लोग मिलकर काम करते है, हम काफी दिनो से चोरी छिपके पुलिस व जनता को धोखा देकर गत्ते के अन्दर कम्बल व उसके ऊपर दवाई की शीशीयां रखकर ऊपर से कम्बल रककर पैक करके बिहार राज्य को सप्लाई करते है। जहां इसका प्रयोग नशे के रूप में किया जाता है। बिहार राज्य में काफी मांग रहती, इस काम से हमें काफी आर्थिक लाभ होता है।

स्पोर्ट्स सिटी में बिल्डरों को दिया 8643 करोड़ का अनुचित लाभ

नोएडा, 25 फरवरी (देशबन्धु)। स्पोर्ट्स सिटी परियोजना में घोटाले की नींव आवंटन के समय रख दी गई थी। बिल्डरों को अनुचित लाभ दिया गया। इसका प्रमाण सीएजी की 2021 की रिपोर्ट में देखने को मिल रहा है। कोर्ट ने अपने आदेश में इस बात पर जोर दिया है कि प्राधिकरण और बिल्डर की सांठगांठ के जरिए ही करीब 9 हजार करोड़ की वित्तीय गड़बड़ी की गई। इस मामले में सीईओ नोएडा प्राधिकरण लोकेश एम ने कहा कि सभी आदेशों का अध्ययन किया जा रहा है। कोर्ट ने जो आदेश दिया है अक्षर सा अमल में लाया जाएगा। सत्ता बदलाव के बाद नोएडा प्राधिकरण में सीएजी की जांच शुरू की गई। सीएजी ने 2007 से 2017 तक की फाइलों की जांच की जिसमें करीब 30 हजार करोड़ के वित्तीय गड़बड़ी की बात सामने आई। इसमें अकेले 9 हजार करोड़ रुपए स्पोर्ट्स सिटी के शामिल किए गए। दरअसल स्पोर्ट्स सिटी की 2010-11 और 2015-16 के बीच 798 एकड़ में चार स्पोर्ट्स सिटी परियोजनाएं शुरू की गईं। जिसमें चार बिल्डरों को भूखंड आवंटित किए गए। इसमें 12050 रुपए प्रतिवर्गमीटर से लेकर 26650 प्रतिवर्गमीटर की दर से भूखंड आवंटित किए गए। जबकि सीएजी ने बाजार के आकलन के अनुसार अपनी रिपोर्ट में बताया कि उस समय बिल्डरों को करीब 17556 से लेकर 1 लाख 26 हजार 280 रुपए प्रति वर्गमीटर की दर से भूखंडों का आवंटन होना चाहिए था। इन दोनों में बड़ा अंतर है। इस हिसाब से प्राधिकरण की ओर से बिल्डरों को करीब 8643 करोड़ का अनुचित लाभ दिया गया। ये रिपोर्ट अब सार्वजनिक है।

सवाल ये है कि रिपोर्ट 2021 में जारी होने के

- 2021 सीएजी की रिपोर्ट में हुआ था खुलासा, ब्रोशर की शर्तों का किया गया उल्लंघन

बाद भी अब तक प्राधिकरण ने संबंधित अधिकारियों के खिलाफ एक्शन क्यों नहीं लिया। और न ही भूखंड आवंटन का बकाया वापस लेने की जहमत तक की। प्राधिकरण की ओर से सिर्फ एक नोटिस जारी किया गया। ये इसलिए कहा रहे है क्योकिं अनुचित लाभ देने के साथ बिल्डरों ने ब्रोशर की शर्तों का भी खुला उल्लंघन किया।

ब्रोशर की शर्तों के अनुसार आवंटी को लीज डीड होने के तीन सालों में खेलकूद सुविधा, संस्थागत व अन्य सुविधाओं के कुल क्षेत्रफल का करीब 15 प्रतिशत निर्माण पूरा करना था। 5 साल के अंदर संपूर्ण खेल सुविधाओं का पूरा किया जाना था। इसके अलावा आवासीय और व्यावसायिक निर्माण चरण बद्ध तरीके से सात साल में पूरा करना था। लेकिन 2010-11 से लेकर 2015-16 के आवंटन के बाद भी डेवलपर्स ने ब्रोशर शर्तों का पालन नहीं किया। इसके बाद भी प्राधिकरण की ओर से कोई भी आवंटन न तो निरस्त किया गया और न ही कोई सख्त एक्शन लिया गया। कोर्ट ने अपने आदेश में इस बात का जिक्र किया है कि यदि आवंटन निरस्त कर दोबारा से बाजार दर पर आवंटन किया जाता तो वित्तीय हानि से बचा जा सकता था। फिलहाल इस मामले में प्राधिकरण कोर्ट के आदेश के अध्ययन के बाद ही आगे की निर्णय लेगा। हालांकि जल्द ही बकाया वापस के लिए वह आवंटियों को नोटिस जारी करेगा। जैसा आदेश में स्पष्ट है।

नोएडा अस्पताल से फरार बदमाश को किया गिरफ्तार

नोएडा, 25 फरवरी (देशबन्धु)। फेज-1 थाना थाना क्षेत्र में मुठभेड़ के बाद घायल हालत में गिरफ्तार किया गया बदमाश मंगलवार सुबह तड़के पुलिस को चकमा देकर डिस्ट्रिक्ट अस्पताल से फरार हो गया। इस घटना के बाद हड़कंप मच गया और मामले में आनन फानन में तीन टीमों का गठन कर बदमाश की तलाश में लगाया गया। दोपहर तक पुलिस ने फरार आरोपी को गिरफ्तार कर लिया।

एडीसीपी नोएडा सुमित शुक्ला ने बताया कि सेक्टर-15ए के पास जांच कर रही पुलिस टीम ने बाइक पर आए संदिग्ध को रूकने के लिए कहा था तो वह वहां से भागने लगे। इस दौरान पुलिस से घिरने पर उन्होंने पुलिस टीम पर फायरिंग कर दी। जवाबी कार्रवाई में एक बदमाश को गोली लगी थी। जिसकी पहचान बेगूसराय के रहने वाले श्याम कुमार के रूप में हुई थी। वहीं उसके साथी समीर अली को भी पकड़ा गया था। घायल हाल में श्याम कुमार को अस्पताल में भर्ती करवाया था।

तीन पुलिस कर्मियों पर मुकदमा दर्ज

बदमाश पर नजर रखने के लिए एसआई विवेक, भूपेंद्र और सुनील तैनात थे। उनकी लापरवाही से बदमाश वहां से निकला। इस लापरवाही के संबंध में केस दर्ज कर जांच की जा रही है। वहीं श्याम कुमार भी टीम ने गिरफ्तार कर लिया है। जानकारी के अनुसार श्याम कुमार पर 8 केस दर्ज हैं। जिसमें लूट, चोरी, स्नैचिंग समेत अन्य मामले हैं। उसे अस्पताल में भर्ती करवाने के बाद पुलिस वालों का ध्यान उसके ऊपर से हटते ही वह मंगलवार तड़के सुबह 6 बजे वहां से फरार हो गया।

दोबारा गिरफ्तारी के बाद सामने आया कि पुलिस वालों को किसी दूसरे काम में व्यस्त देखने के बाद वह चुपचाप वहां से निकल गया था। जिसके बाद वह अपनी बहन के घर गया और उसने अपने कपड़े भी चेंज किया। इसके बाद वह ट्रेन से बिहार भागने की तैयारी कर रहा था।

पुलिस के अनुसार आरोपी की तलाश में लगई टीम ने 200 से अधिक कैमरों को चेक किया। जहां से श्याम कुमार के संबंध में क्लू मिला था। इसी के आधार पर पुलिस टीम की चेकिंग को लगाया गया था। पुलिस की जांच में सामने आया है कि आरोपी ने अनजान लोगों की मदद से कुछ लोगों से संपर्क का प्रयास किया था, हालांकि पुलिस की टीम ने उसे एनसीआर छोड़ने से पहले ही पकड़ लिया।

सरस मेले का शुभारंभ, 400 से अधिक लखपति दीदी ले रहीं हिस्सा

नोएडा, 25 फरवरी (देशबन्धु)। केंद्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री कमलेश पासवान और ग्रामीण विकास एवं संचार राज्य मंत्री चंद्रशेखर पेम्मासानी ने नोएडा हॉट में सरस आजीविका मेला का उद्घाटन किया। इस मेले का उद्देश्य प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के वोकल फॉर लोकल अभियान को बढ़ावा देना है। मेले का थीम 'लखपति दीदी की निर्यात क्षमता का विकास' है, जिसका मुख्य उद्देश्य परंपरा, कला, संस्कृति और रोजगार को बढ़ावा देना है।

2024 में 14 करोड़ रुपए तक पहुंचा व्यापार

यह कार्यक्रम 10 मार्च तक आयोजित किया जाएगा और इसमें 400 से अधिक लखपति दीदी भाग ले रही हैं। केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा आयोजित इस मेले में 20 राज्यों से 80 उद्यमी गृहणियों का समूह प्रदेश के प्रसिद्ध व्यंजनों, हैंडलूम, साड़ी, ड्रेस मटेरियल, बिहार का कॉटन और सिल्क, उत्तरप्रदेश के होम डेकोर, छत्तीसगढ़,

गुजरात, झारखंड, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, तमिलनाडु, तेलंगाना, आंध्रप्रदेश, सिक्किम और अन्य राज्यों के उत्पादों की प्रदर्शनी लगा रहे हैं। 2021 में व्यापार का आंकड़ा 3.83 करोड़ रुपए, 2022 में 5.3 करोड़ रुपए, 2023 में 9.21 करोड़ रुपए और 2024 में 14 करोड़ रुपए तक पहुंच गया है।

ग्रामीण उत्पादों को अतंरराष्ट्रीय बाजार स्थान दिलाना

चंद्रशेखर पेम्मासानी ने कहा कि हम ग्रामीण

- 2024 में हुआ था 14 करोड़ का व्यापार

महिलाओं को उत्पाद बनाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं ताकि वे इन्हें न केवल देश में, बल्कि दुनिया भर में बेच सकें। इस कार्यक्रम का उद्देश्य उत्पादों को ब्रांडिंग और मार्केटिंग तकनीकों से जोड़ना है, ताकि हम वैश्विक स्तर पर इनकी बिक्री बढ़ा सकें। हम ग्रामीण उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय बाजारों में उपलब्ध कराने के लिए कस्टम ड्यूटी से जुड़ी सभी परेशानियों को दूर करने के लिए निर्यात केंद्र स्थापित कर रहे हैं।

उत्पादों के लिए ये बेहतरीन प्लेटफार्म

कमलेश पासवान ने कहा कि मैं ग्रामीण विकास मंत्रालय के सभी अधिकारियों को बधाई देना चाहता हूं, जिन्होंने इस तरह के एक बेहतरीन प्लेटफार्म का निर्माण किया है। इससे ग्रामीण महिलाओं को अच्छा बाजार मिलेगा और हम उनकी मदद से इस प्रकार के आयोजनों के जरिए उन्हें आगे बढ़ने का अवसर देंगे।

महाकुंभ जाने वाले श्रद्धालुओं को टोल फ्री सुविधा नहीं मिलने से परेशानी

खोड़ा, 25 फरवरी (देशबन्धु)। महाकुंभ जाने वाले श्रद्धालुओं के निजी और मालवाहक वाहनों को कुंभ मेले के अंतिम चरण तक टोल फ्री सुविधा नहीं मिलने से बड़ी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। एक तरफ केंद्र और प्रदेश सरकार कल्याणकारी योजनाओं के तहत राशन रसोई गैस सहित कई वस्तुएं मुफ्त में दे रही है। वहीं टोल फ्री सुविधा न मिलने की वजह से प्रयागराज में श्रद्धालुओं को भारी असुविधा का सामना करना पड़ रहा है।

इससे टोल पर जाम की समस्या से लोगों को परेशानी झेलनी पड़ रही है। महाकुंभ जाने वाले श्रद्धालुओं को दो सौ किलोमीटर पहले से जाम की समस्या बनी रहती है साथ ही चार घंटे का सफर तय करने में कई घंटा समय बर्बाद होता है। टोल फ्री सुविधा मिलने से श्रद्धालुओं द्वारा लगने भारी भरकम टोल से आमजन को राहत मिलेगी। और टोल प्लाजा पर जाम का संकट भी खत्म हो जाएगा। उत्तर प्रदेश व अन्य कई राज्यों से लाखों की संख्या में श्रद्धालु प्रयागराज जाकर स्नान का पुण्य लाभ अर्जित कर रहे है। प्रयागराज पहुंचने से सैकड़ों किलोमीटर पहले ही टोल प्लाजा पर लोगों को घंटों जाम में समय बर्बाद करना पड़ता है। उधर कुंभ में भी जनसैलाब उमड़ने से लोगो को कई किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है। जिससे लोगो को समस्याओं का सामना करना पड़ता है। प्रदेश सरकार द्वारा कई मूवियों को भी कर मुक्त कर दिया जाता है। विश्व हिंदू परिषद वैशाली महानगर अध्यक्ष डॉक्टर बी के गुप्ता ने महाकुंभ लगने तक महाकुंभ जाने वाले वाहनों को टोल प्लाजा से मुक्त किए जाने की मांग प्रदेश सरकार से की है।

उवाच "

जन सामान्य को यातायात नियमों का अधिक से अधिक पालन सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से सड़क सुरक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। सड़क सुरक्षा को समस्त सम्बन्धित विभागीय अधिकारी गम्भीरता से लेते हुए आपसी सामंजस्य स्थापित कर निरन्तर अपनी-अपनी कार्यवाई सुनिश्चित करें : **मनीष कुमार वर्मा**, जिलाधिकारी।

कैपिटल ज़ोन

विद्यालयों से बिना फिटनेस के वाहन सड़क पर उतरे तो होगी कार्रवाई

ग्रेटर नोएडा, 25 फरवरी (देशबन्धु)। जिले में सड़क दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाने एवं सड़क दुर्घटनाओं में मृत्यु दर को 50 प्रतिशत तक कम करने तथा यातायात नियमों का पालन सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट के सभागार में जिला सड़क सुरक्षा समिति व जिला विद्यालय यान परिवहन सुरक्षा समिति की महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक संपन्न हुई। उन्होंने बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि जन सामान्य को यातायात नियमों का अधिक से अधिक पालन सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से सड़क सुरक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। सड़क सुरक्षा को समस्त सम्बन्धित विभागीय अधिकारी गम्भीरता से लेते हुए आपसी सामंजस्य स्थापित कर निरन्तर अपनी-अपनी कार्रवाई सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि सभी वाहन चालक अपने-अपने वाहन चलाते हुए शत-प्रतिशत रूप से यातायात नियमों का पालन सुनिश्चित करेंगे तो निश्चित रूप से सड़क दुर्घटनाओं को कम करने के साथ-साथ सड़क दुर्घटना में मृत्यु दर में भी कमी आ सकेगी।

जिलाधिकारी द्वारा बैठक में 'नो हेल्मेट, नो फ्यूल' को कड़ाई से लागू करने व बिना हेलमेट, सीटबेल्ट के सरकारी, गैर सरकारी आफिसों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों सहित विभिन्न संस्थानों में प्रवेश को रोकने के निर्देश दिए गए। जिलाधिकारी ने परिवहन विभाग और यातायात पुलिस, अर्थोरिटी सहित संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि उनके द्वारा जनपद में बस, टेंपो एवं टैक्सी स्टैंड के निर्माण के लिए गंभीरता के साथ कार्रवाई करते हुए स्थलों को चिन्हित कर प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए, ताकि अवैध स्टैंड, अतिक्रमण पर अंकुश लगाया जा सके। उन्होंने परिवहन एवं पुलिस विभाग के अधिकारियों को कहा कि उनके द्वारा नियमित रूप से अभियान चलाकर अवैध स्टैंड, अवैध पार्किंग, ओवरस्पीड, ओवरलोड वाहन एवं यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध नियमानुसार कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए एवं संबंधित विभागीय अधिकारियों के द्वारा जनपद में जो भी ब्लैक स्पॉट बने हुए है, उनमें अधिकारीगण आपसी सामंजस्य स्थापित कर प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करते हुए जनपद में ब्लैक स्पॉट को कम करने की दिशा में अपनी-अपनी कार्रवाई करें, ताकि जनपद में ब्लैक स्पॉट को कम करके सड़क दुर्घटनाओं एवं सड़क दुर्घटनाओं में मृत्यु दर को कम किया जा सकें। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी विद्यानाथ शुक्ल, अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) मंगलेश दुबे, सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी डॉ. उदित नारायण पांडेय, यात्री कर अधिकारी के जी संजय, सहायक अभियंता लोक निर्माण विभाग शुभम सारस्वत, जिला विद्यालय निरीक्षक डॉ. धर्मवीर सिंह, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी राहुल पंवार आदि मौजूद रहे।

■ जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जिला सड़क सुरक्षा समिति और विद्यालय यान परिवहन सुरक्षा समिति की हुई बैठक

नन्हे-मुन्ने बच्चों ने आगाज में दी मनमोहक प्रस्तुति

ग्रेटर नोएडा, 25 फरवरी (देशबन्धु)। किड्स फाउंडेशन स्कूल ने अपना पहला वार्षिक दिवस 'आगाज' कैम्ब्रिज स्कूल ऑडिटोरियम में रिलेशनशिप थीम के साथ मनाया। इस वार्षिक दिवस समारोह में अभिभावकों सहित अनेक शिक्षाविदों और गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए। मुख्य अतिथि अनादि बरूआ सहित पूर्व हेड कोच भारतीय अंतरराष्ट्रीय महिला फुटबॉल टीम एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों सहित कैम्ब्रिज स्कूल की हेड मिस्ट्रेस रश्मि भारद्वाज भी विशेष रूप से उपस्थित रही।<

कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती वन्दना और मुख्य अतिथि अनादि बरूआ और किड्स फाउंडेशन स्कूल की प्रिंसिपल पामिला और अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। मुख्य अतिथि अनादि बरूआ ने अपने संबोधन में किड्स फाउंडेशन स्कूल की प्रिंसिपल पामिला और स्कूल के स्टाफ के सदस्यों की शिक्षा के क्षेत्र में बेहतरीन सेवाओं के लिए उनकी बहुत-बहुत प्रशंसा की। उन्होंने छात्रों के भविष्य को आकार देने में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका, उनकी कर्तव्यपरायणता और उनके कठिन परिश्रम की सराहना की। उन्होंने शिक्षा, खेलों के महत्व पर भी विस्तार से चर्चा की। अतिथि रश्मि भारद्वाज ने किड्स फाउंडेशन स्कूल को बच्चों के शिक्षा क्षेत्र में उनके अद्भुत कार्य के लिए किड्स फाउंडेशन टीम को बधाई दी। सांस्कृतिक कार्यक्रम में नन्हे-मुन्ने बच्चों ने अपनी शानदार प्रस्तुति और ऊर्जा से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

जेवर विधायक ने निजी स्कूल में फीस वृद्धि का मामला विधानसभा में उठाया

ग्रेटर नोएडा, 25 फरवरी (देशबन्धु)। नोएडा-ग्रेटर नोएडा समेत एनसीआर क्षेत्र के निजी स्कूलों में फीस वृद्धि का मामला मंगलवार को जेवर विधायक धीरेन्द्र सिंह विधानसभा में उठाया। विधानसभा के बजट सत्र में चर्चा के दौरान उन्होंने कहा कि हर साल निजी स्कूलों में जिस तरह फीस वृद्धि किया जा रहा है उस पर अंकुश लगाया जाए।

जेवर विधायक धीरेन्द्र सिंह ने कहा कि प्राइवेट विद्यालयों में बढ़ती हुई फीस अब आम आदमी की पहुंच से दूर हो रही है, जिस पर अंकुश लगाना बहुत जरूरी है। विधानसभा में अपने भाषण में उन्होंने कहा कि घरों की रजिस्ट्री और रुके प्रोजेक्ट शुरू कराए जाने हेतु अमिताभ कांत समिति की सिफारिशों को लागू होने से एनसीआर क्षेत्र के साथ-साथ नोएडा, ग्रेटर नोएडा व प्रदेश के फ्लैट खरीदारों को राहत मिलेगी।

जेवर विधायक धीरेंद्र सिंह ने विगत बजट सत्र में लिफ्ट और एस्केलेटर अधिनियम लागू होने पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और ऊर्जा मंत्री एके शर्मा जी का आभार व्यक्त किया।

संयुक्त किसान मोर्चा ने कलेक्ट्रेट पर महापंचायत करने की दी चेतावनी

ग्रेटर नोएडा, 25 फरवरी (देशबन्धु)। संयुक्त किसान मोर्चा मंगलवार को जिलाधिकारी के नाम एडीएम प्रशासन को ज्ञापन देकर 10 फीसदी भूखंड एवं नए कानून के लाभ दिए जाने के सन्दर्भ में सरकार से जवाबदेही की मांग रखी। तीनों प्राधिकरणों एवं अन्य संस्थानों के साथ 10 मार्च तक वार्ता न कराए जाने पर कलेक्ट्रेट पर किसान महापंचायत कर व्यापक आन्दोलन शुरू करने की चेतावनी दी। संयुक्त किसान मोर्चा से जुड़े हुए सभी 14 किसान संगठनों के किसान नेताओं के प्रतिनिधिमंडल ने जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचकर जिलाधिकारी एवं अपर जिलाधिकारी प्रशासन से मुलाकात कर पुराने कानून के तहत जमीन लिए जाने से प्रभावित किसानों को 10 फीसदी विकसित प्लॉट, बढ़ा हुआ प्रतिकर आदि लाभ दिए जाने एवं 1 जनवरी 2014 के

बाद जमीन लिए जाने अथवा नया कानून लागू होने के बाद किसी परियोजना में अधिग्रहण का अवॉर्ड पास किए जाने से प्रभावित सभी किसानों को नए भूमि अधिग्रहण कानून 2013 के अनुसार बाजार दर का 4 गुना मुआवजा, 20 फीसदी प्लॉट दिए जाने और सभी भूमिधर तथा भूमिहीन किसानों के बच्चों को रोजगार तथा पुनर्वास भत्ता दिए जाने के साथ ही आबादियों का उचित निस्तारण किए जाने की मांग को लेकर सरकार से जवाबदेही की मांग की। मोर्चा की ओर से पूर्व में हुए किसान आंदोलन के दौरान शासन प्रशासन की ओर से दिए गए आश्वासनों के अनुसार तीनों प्राधिकरणों एवं शासन स्तर की वार्ता कराए जाने तथा जनपद में चल रही विभिन्न परियोजनाओं से संबंधित संस्थाओं के साथ वार्ताएं कराये जाने के सम्बन्ध में दिए गए आश्वासनों की वादा खिलाफी किए जाने पर नाराजगी जताई। संयुक्त किसान मोर्चा के नेताओं ने कलेक्ट्रेट में ही तत्काल सर्व सम्मति से निर्णय लेते हुए लिखित ज्ञापन तैयार कर अपर जिलाधिकारी प्रशासन मंगलेश दुबे को सौंपा।

■ किसानों ने डीएम के नाम एडीएम प्रशासन को ज्ञापन देकर आंदोलन की दी चेतावनी

दिव्यांगजनों को निःशुल्क मोटराईज्ड ट्राईसाइकिल का वितरण

ग्रेटर नोएडा, 25 फरवरी (देशबन्धु)। पावर फाईनेंस लिमिटेड की सी एस आर योजना के अन्तर्गत दिव्यांगजनों के लिए निःशुल्क मोटराईज्ड ट्राईसाइकिल वितरण शिविर का आयोजन सामुदायिक भवन कार्यालय खण्ड विकास अधिकारी बिसरख गौतमबुद्धनगर में किया गया। जिसमें नोएडा के गौतमबुद्धनगर के विभिन्न स्थानों के एलिम्को भारत सरकार के उपक्रम द्वारा पूर्व चिन्हित 107 लाभार्थियों को लगभग 722 लाख की लागत से 107 सहायक उपकरण चिन्हित किया गया था। समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. महेश शर्मा सांसद पूर्व राज्य मन्त्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दिव्यांगजनों के लिए जो भी सहयोग, रोजगार में भी वरियता दी गयी है कि इनका जीवन भी आम जन मानस की तरह व्यतीत करें।

इस मौके पर अली शाह कार्यकारी निदेशक पीएफसी दुर्गेश रंगेरा, महाप्रबंधक पीएफसी, संजय बाली सांसद प्रतिनिधि, दीपक यादव, जैनेन्द्र चैरसिया, मुकेश चौहान मंडल अध्यक्ष एवं अन्य गणमान्य कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में पंजीकरण के लिए एलिम्को द्वारा जिला नोएडा के गौतमबुद्धनगर आस पास के विभिन्न स्थानों में परीक्षण शिविर आयोजित किये गए थे।

दिव्यांगजनों को मोटराईज्ड ट्राईसाइकिल मिलने से उनका जीवन सरल एवं जीवन शैली में सुधार होगा कार्यक्रम के उपरान्त लाभार्थी दिव्यांगजनों के चेहरे खील उठे।

अधिवक्ता अधिनियम संशोधन की प्रतियां जलाकर अधिवक्ताओं ने किया विरोध

ग्रेटर नोएडा, 25 फरवरी (देशबन्धु)। जिला न्यायालय परिसर सूरजपुर में अधिवक्ता चौक पर अधिवक्ताओं ने अधिवक्ता अधिनियम संशोधन की प्रतियां जलाकर विरोध दर्ज किया। विरोध प्रदर्शन के दौरान सरकार के खिलाफ नारेबाजी भी की गई। इस मौके पर जनपद दीवानी एवं फौजदारी बार एसोसिएशन गौतम बुध नगर के अध्यक्ष प्रमेंद्र सिंह भाटी एडवोकेट ने अधिवक्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि जब तक यह काला कानून वापिस नहीं होगा, अधिवक्ताओं का यह संघर्ष जारी रहेगा और कहा कि यह सरकार की दमनकारी नीति है। जिससे अधिवक्ताओं को गुलाम बनाने का प्रयास किया जा रहा है। लेकिन इस दमनकारी अधिनियम का हम सभी अधिवक्ता पुरजोर विरोध करते हैं। जब तक इस अधिनियम में बदलाव नहीं हो जाता है। इस मौके पर मुख्य रूप से अजीत नागर सचिव, नीरज भाटी, पवन भाटी, नीरज चौहान, विशाल नागर, श्याम सिंह भाटी, प्रमोद शर्मा, अजय यादव, नौशाद अली, हेमंत राघव, आदेश बंसल, नीरज सुनपुरा, अरुण भाटी, कुंवर शेरशाह, रामकुमार चौधरी, अनिल भाटी, राजकुमार गौतम, अरुण नागर आदि सैकड़ों अधिवक्ता मौजूद रहे।

सांस्कृतिक उत्सव में विद्यार्थियों ने दी मनोहक प्रस्तुति

ग्रेटर नोएडा, 25 फरवरी (देशबन्धु)। ग्रेटर नोएडा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (जीएनआईटी) ने अपना वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन किया, जिसमें छात्रों, संकाय सदस्यों और गणमान्य व्यक्तियों ने उत्साह और उमंग के साथ भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत पारंपरिक दीप प्रज्वलन से हुई, जो ज्ञान और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक है। इस शुभ अवसर पर संस्थान के चेयरमैन बी.एल. गुप्ता ने अपने आशीर्वचन और प्रेरणादायक शब्दों से सभी का मार्गदर्शन किया और कार्यक्रम में शामिल विद्यार्थियों को अच्छा नागरिक व सफल नागरिक बनने के लिए प्रोत्साहित किया। संस्थान के निदेशक डॉ. सोमेंद्र शुक्ला ने अपने प्रेरणादायक संबोधन में छात्रों को अकादमिक और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में छात्रों ने शानदार नृत्य प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम का सफल और सुचारू संचालन इंदु भूषण ने किया। कार्यक्रम की मुख्य आकर्षण 'मिस्टर और मिस फ्रेशर प्रतियोगिता' रही, जिसमें छात्रों ने

■ संस्थान के चेयरमैन बी.एल. गुप्ता ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की

अपनी आकर्षक व्यक्तित्व, आत्मविश्वास और कौशल का प्रदर्शन किया। इस दौरान मिस फ्रेशर अंशिका को उनकी गरिमा और आत्मविश्वास के लिए। मिस्टर फ्रेशर-देवांश को उनके आकर्षक व्यक्तित्व और मंच पर प्रभावशाली उपस्थिति के लिए। मिस टैलेंट कृष्णा को उनकी असाधारण प्रतिभा और रचनात्मकता के लिए। मिस ब्यूटीफुल- तनिशा को उनकी सौंदर्य और शालीनता के लिए। मिस्टर हैंडसम हर्षित को उनकी प्रभावशाली शैली और आत्मविश्वास के लिए सम्मानित किया गया।

प्रो. राणा प्रताप सिंह ने जीबीयू के कुलपति का सम्भाला पदभार

ग्रेटर नोएडा, 25 फरवरी (देशबन्धु)। गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय में प्रो. राणा प्रताप सिंह ने विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में पदभार संभाल लिया है। विश्वविद्यालय पहुंचने पर विश्वविद्यालय के कुलानुशासक डॉ. विश्वास त्रिपाठी ने स्वागत किया। प्रो. सिंह एक प्रख्यात शिक्षाविद, शोधकर्ता और प्रशासक हैं, जिनके पास शिक्षण का 24 से अधिक वर्षों का अनुभव और 31 वर्षों का शोध अनुभव है, विशेष रूप से कैंसर जीवविज्ञान, ट्यूमर थेरेप्यूटिक्स और समग्र चिकित्सा के क्षेत्र में। इस पद पर नियुक्ति से पहले, प्रो. सिंह ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में प्रो-वाइस चांसलर (रेक्टर) के रूप में कार्य किया, जहां उन्होंने अकादमिक और प्रशासनिक सुधारों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके नेतृत्व में जेएनयू में 2020-21 में स्पेशल सेंटर फॉर सिस्टम्स मेडिसिन की स्थापना और आयुर्वेद बायोलॉजी कार्यक्रम की शुरुआत हुई। इलाहाबाद के इविंग क्रिश्चियन कॉलेज से स्नातक करने के बाद, उन्होंने 1993 में जेएनयू से एमएससी और 2000 में कैंसर बायोलॉजी में पीएचडी पूरी की। इसके बाद, उन्होंने एएमसी कैंसर रिसर्च सेंटर और यूनिवर्सिटी ऑफ कोलोराडो हेल्थ साइंसेज सेंटर, अमेरिका में पोस्ट-डॉक्टोरल प्रशिक्षण प्राप्त किया। उनके शोध कार्य का मुख्य क्षेत्र ट्यूमर हेटेरोजेनिटी, कैंसर स्टेम सेल्स, रेडियोथेरेपी प्रतिरोध और सेल सिग्नलिंग रहा है। गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में, प्रो. सिंह का लक्ष्य बहु-विषयक अनुसंधान को बढ़ावा देना, वैश्विक अकादमिक सहयोग को सुदृढ़ करना और नवाचार आधारित शिक्षा को सशक्त बनाना है। उनके नेतृत्व में विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को छूने के लिए तैयार है।

चोरी की कार के साथ दो को दबोचा

जेवर, 25 फरवरी (देशबन्धु)। कोतवाली पुलिस ने मंगलवार को यमुना एक्सप्रेस वे की सर्विस रोड से एक चोरी की कार के साथ दो चोरों को दबोचा है। कोतवाली प्रभारी निरीक्षक संजय सिंह ने बताया कि रोहरा पुलिस चौकी प्रभारी उपनिरीक्षक बृजलाल यादव, उपनिरीक्षक सोनवीर सिंह व उपनिरीक्षक अमरपाल के साथ क्षेत्र में गस्त कर रहे थे। उसी दौरान मुखबिर की सूचना पर यमुना एक्सप्रेस वे के खुर्जा अंडरपास से साबौता अंडरपास की तरफ सर्विस रोड पर एक बगैर नम्बर प्लेट की ईको कार में बैठे दो लोगो से गाड़ी का कागज दिखाने को कहा। आरोपित पुलिस को गाड़ी के कोई दस्तावेज नहीं दिखा पाए। गाड़ी के इंजन नंबर व चेसिस नम्बर से जानकारी हासिल करने पर गाड़ी हरियाणा के बल्लभगढ़ के नम्बर की पाई गई। जिसे चोरों ने वर्ष 2019 में बल्लभगढ़ से चोरी किया था। जिसकी बल्लभगढ़ थाने में चोरी की रिपोर्ट दर्ज की गई थी। पुलिस ने कार को कब्जे में लेकर दोनो आरोपित से पूछताछ की। पूछताछ में उनकी पहचान बुलंदशहर के खुर्जा देहात थाना क्षेत्र गांव मधुपुरा के प्रशांत व जेवर के मोहल्ला मल्लपाडा के गोलू उर्फ योगेश शर्मा के रूप में हुई।

पत्र नहीं मित्र
देशबन्धु
पश्चिमी उत्तर प्रदेश ब्यूरो कार्यालय
209 कृष्णा अपरा प्लाजा अल्फा कॉमर्शियल बेल्ट, ग्रेटर नोएडा
समाचार, विज्ञापन एवं प्रसार के लिए संपर्क करें
खोया-पाया/ सूचना/ नाम परिवर्तन/ आवश्यकता
फोन:- 0120-4270009

पत्र नहीं मित्र
देशबन्धु
समाचार, विज्ञापन एवं प्रसार के संपर्क करें
क्षेत्रिय कार्यालय रबुपुरा
Mob: 9411492655

Shiv Mahima Enterprises
सभी प्रकार के विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें
नाम परिवर्तन, खोया पाया, सूचना, अवश्यकता
Mob.: 9910280173
Off-221, 2nd Floor, Meridian View Plaza, Alpha Comm. Belt, Gr. Noida

गुरुकुल में अत्याधुनिक शिक्षा के साथ वैदिक शिक्षा के लिए प्रवेश शुरू

ग्रेटर नोएडा, 25 फरवरी (देशबन्धु)। केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त महर्षि पाणिनि वेद-वेदांग विद्यापीठ गुरुकुल ग्रेटर नोएडा के सेक्टर ईटा-एक में चल रहा है। मंगलवार को आयोजित प्रेस वार्ता में विरेन्द्र शर्मा, प्रवेश प्रभारी, आचार्य रविकांत दीक्षित, वेद प्रकाश शर्मा ने गुरुकुल में प्रवेश प्रक्रिया की जानकारी दी। वीरेन्द्र शर्मा ने बताया कि यहां पर कक्षा 6 से 12वीं तक की

■ सभी बच्चों को निःशुल्क शिक्षा, दूर के शिक्षार्थियों को भोजन आवास फ्री

पढ़ाई हिंदी माध्यम से एनसीईआरटी की पुस्तकों से पढ़ाई की जाती है। कक्षा 6 से कक्षा आठ तक आधुनिक विषय, जैसे- हिंदी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कंप्यूटर और संस्कृत के साथ आध्यात्मिक विषय जैसे साहित्य व्याकरण तथा वेद शास्त्र आदि पढ़ाई जाते हैं। न्यू एजूकेशन पॉलिसी के तहत विषयों को जोड़ा गया है। उन्होंने बताया कि सत्र गुरुकुल में सत्र 2025 26 के कक्षा 6 से 9 एवं 11 में प्रवेश आरंभ हो चुका है। कक्षा 9 और 10वीं में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आधार पर विषयों को पढ़ाया जाता है। कक्षा नवमी और दशमी में वार्षिक परीक्षा केंद्रीय संस्कृत विद्यालय नई दिल्ली द्वारा कराई जाती है। कक्षा 11वीं और 12वीं में विषय नई शिक्षा नीति के आधार पर तय किए जाते हैं। तथा 11वीं और 12वीं में अर्धवार्षिक परीक्षा सेमेस्टर प्रणाली के तहत केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा कराई जाती है। कक्षा 6 से 12वीं तक तीन भाषाओं (हिंदी, अंग्रेजी तथा संस्कृत) के साथ आध्यात्मिक विषय जैसे-साहित्य व्याकरण तथा वेद शास्त्र आदि अनिवार्य हैं। कक्षा 6 से 9 तथा 11वीं में 20-20 स्थान नए सत्र में प्रवेश के लिए रिक्त हैं। इसके लिए अभ्यर्थी गुरुकुल के कार्यालय से अथवा गुरुकुल की वेबसाइट से रजिस्ट्रेशन फार्म प्राप्त कर सकते हैं। प्रवेश, लिखित एवं मौखिक परीक्षा के आधार पर तय किए जाते हैं। गुरुकुल में केवल 20 अन्य विद्यार्थियों के लिए ही छात्रावास की सुविधा उपलब्ध है। गुरुकुल में शिक्षा शुल्क निःशुल्क है। गुरुकुल में पढ़ाई के साथ भारतीय संस्कृति को जानने एवं सीखने के अवसर को ध्यान में रखते हुए विद्यालय परिवार ने भारतीय संस्कृति के पोषण हेतु पुरोहित सेवा तथा अन्य प्रकल्प भी संचालित किए हुए हैं, जिनके द्वारा विभिन्न वर्ग के लोग लाभान्वित हो रहे हैं। विद्यालय के स्थाई भवन हेतु सेक्टर 36 ग्रेटर नोएडा में भवन का निर्माण तेजी से हो रहा है।

राकियू की मासिक बैठक में किसानों की क्षेत्रीय समस्याओं पर विचार विमर्श

जेवर, 25 फरवरी (देशबन्धु)। राष्ट्रीय किसान यूनियन के कार्यकर्ताओं द्वारा मंगलवार को जेवर के मौहल्ला रावलपट्टी में एक कार्यकर्ता के आवास पर मासिक बैठक का आयोजन किया गया।

जिसकी अध्यक्षता मजीद खान और संचालन राजू थोरा ने किया। बैठक में किसानों की क्षेत्रीय समस्याओं पर विचार विमर्श करते हुए शीघ्र निस्तारण की मांग की गई तथा निस्तारण न होने पर आंदोलन की चेतावनी दी गई। राष्ट्रीय किसान यूनियन के जिलाध्यक्ष इकपाल सिवाच ने बताया कि एयरपोर्ट के विस्तारीकरण के लिए चल रही तीसरे व चैथे चरण के भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया से प्रभावित किसानों के साथ अधिकारियों की खुली बैठक कर मुआवजा बढ़ाया जाए, किसानों से सहमति लेने में पारदर्शिता बरतने, जेवर में लगने वाले जाम से निजात दिलाने के लिए बाईपास का निर्माण तथा सुबह 7 बजे से शाम 7 बजे तक भारी वाहनों के प्रवेश पर रोक लगाने, रोडवेज बस अड्डे का निर्माण, जेवर से चलने वाली रोडवेज बसों की समय सारिणी तय करने फिक्स किये जाने, अधिग्रहण से प्रभावित किसानों के बच्चों को रोजगार देने, क्षेत्र के बेरोजगार युवाओं को एयरपोर्ट व जिले की औद्योगिक इकाइयों में रोजगार दिए जाने की मांग की।

मांगों का निस्तारण न किये जाने पर कार्यकर्ताओं ने आंदोलन की चेतावनी दी। इस मौके पर शाहिद प्रधान, राजकुमार, जीतू, डॉ. केपी सिंह, पीवी सिंह, हरपाल, मुस्ताक, फकरुद्दीन, मुकेश, अरफात, मुकेश जादव व मिलतम आदि मौजूद रहे।

युवक को गोली मारकर घायल करने के दो आरोपी गिरफ्तार

दनकौर, 25 फरवरी (देशबन्धु)। दनकौर कोतवाली क्षेत्र के सरकपुर गांव में करीब 6 दिन पहले रंजिश में एक युवक को गोली मारकर घायल करने के मामले में पुलिस ने दो फरार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। जिनके कब्जे से पुलिस ने तमंचा और 2 जिंदा कारतूस भी बरामद किए है। पुलिस का कहना है कि मंगलवार को आरोपियों को कोर्ट में करने के बाद जेल भेज दिया गया है। पुलिस अन्य आरोपियों को भी जल्दी गिरफ्तार करने का दावा कर रही है। सरकपुर गांव निवासी सागर 19 फरवरी को अपनी दुकान के पास खड़ा था। तभी वहां से अपनी गाड़ी में दूध भरकर लक्की नाम का युवक जा रहा था। जिसकी गाड़ी की धूल सागर पर आ गई थी। इसी बात को लेकर सागर और लक्की पक्ष में कहासुनी हो गई थी। इस दौरान गांव के लोगों ने दोनों पक्षों को समझौता कर दिया था। आरोप है कि रात के वक्त लक्की ने अपने परिवार के अन्य लोगों के साथ सागर के घर में घुसकर गोली चला दी थी। साथ ही आरोपियों ने पीड़ित को डंडों से पीटकर भी घायल कर दिया था।

ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण
प्लॉट न०-01, सेक्टर-के०पी०-04, ग्रेटर नौएडा सिटी
जिला-गौतमबुद्ध नगर
सार्वजनिक सूचना
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि Air Force Naval Hosing Board, के माध्यम से आवंटित भवन संख्या-P-516, 2nd Floor, Jal Vayu Vihar, Sector-P-4, क्षेत्रफल 138.011 वर्ग मीटर, Smt. Kamla Vohra W/o Late Shri A.L. Vohra के पक्ष में हस्तांतरित/पंजीकृत है। आवंटी Smt. Kamla Vohra की मृत्यु दिनांक-14.12.2024 को हो जाने के उपरान्त वसीयत के आधार पर उनके पुत्र Mr. Jagmohan Vohra S/o Late Sh. A.L. Vohra ने उक्त भवन को अपने पक्ष में नामान्तरण कराने हेतु आवेदन किया है। इस म्यूटेशन के संबंध में किसी को कोई आपत्ति हो तो इस विज्ञप्ति के प्रकाशन की तिथि से 35 दिन के अन्दर अपनी लिखित आपत्ति प्राधिकरण कार्यालय में दर्ज कराना सुनिश्चित करें, अन्यथा नियमानुसार प्राधिकरण अभिलेखों में आवंटी Smt. Kamla Vohra के स्थान पर वसीयत के आधार पर उनके पुत्र Mr. Jagmohan Vohra S/o Late Sh. A.L. Vohra के नाम पर दर्ज कर दिया जायेगा।
विशेष कार्याधिकारी (ग्रुप हाउसिंग)
ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण

{ संपादकीय }
नई दिल्ली, बुधवार 26 फरवरी 2025
संस्थापक-सम्पादक : स्व. मायाराम सुरजन

शेयर बाजार में गिरावट और सरकार की चुप्पी

भारत के घरेलू बाजार में एक के बाद एक घाटे की खबरें सामने आ रही हैं। शेयर बाजार में लगातार गिरावट देखी जा रही है, वहीं विदेशी मुद्रा भंडार में भी कमी आई है और इसी के साथ डोनाल्ड ट्रंप की घुड़कियों का असर भी उद्योग जगत पर देखा जा रहा है। हैरानी की बात ये है कि पूरे देश में घूम-घूम कर विकास का ढिंढोरा पीटने वाले प्रधानमंत्री मोदी शेयर बाजार में दिखाई दे रही अभूतपूर्व गिरावट को लेकर बिल्कुल मौन है। मानो उन्हें कोई फर्क ही नहीं पड़ता कि छोटे और मंझोले निवेशकों का पैसा डूबे या वे बर्बाद हो जाएं। श्री मोदी के हिसाब से तो अब भी भारत तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है और पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था भी वे देश में कायम कर ही लेंगे। हालांकि एक जरूरी सवाल तब भी बना रहेगा कि अगर पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था देश में होती है तो इसमें गरीबों का हिस्सा कितना रहेगा और अमीरों का कब्जा कितने पर होगा। क्योंकि अभी तो आर्थिक गैर-बराबरी और बढ़ रही है। वहीं पांच किलो अनाज पर 80 करोड़ लोग अब भी जी रहे हैं। जो मध्यमवर्ग है, उसे भी राहत नहीं है, न ही भविष्य को लेकर वह निश्चिंत हो पा रहा है। पहले अपनी बचत से साधारण नौकरी या कमाई वाला व्यक्ति थोड़ा पैसा बैंक में, थोड़ा शेयर बाजार में या इसी तरह कहीं निवेश कर आड़े वक्त का इंतजाम करता था। अब मोदी सरकार में यह भी मुमकिन नहीं हो रहा। अभी हाल में मुंबई में न्यू इंडिया को-आपरेटिव बैंक में 125 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी का मामला सामने आया था, जिसके बाद रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने इसके बोर्ड को भंग कर धन निकासी पर भी रोक लगा दी थी। हालांकि अब खाताधारकों को 25 हजार रुपए तक निकालने की छूट दे दी गई है। लेकिन इसे राहत भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि देश में बैंकिंग व्यवस्था में घोर अविश्वसनीयता बढ़ रही है। बैंक की रकम हड़पने का यह पहला मामला नहीं है, पहले भी अनेक मामले ऐसे हुए और लुटेरे हजारों करोड़ की रकम लेकर विदेशों में जा बैठे हैं। रिजर्व बैंक कार्रवाई तो करता है, लेकिन इसमें भी आम खाताधारक ही पिसता है।

उधर शेयर बाजार का भी यही हाल है। इसकी निगरानी करने वाली संस्था सेबी की अध्यक्ष माधवी बुच पर इतने आरोप लगे, लेकिन सरकार लोगों का भरोसा जीतने के लिए कोई ठोस कार्रवाई करती नहीं दिख रही। उधर बाजार में लगातार गिरावट देखी जा रही है। जानकारों का कहना है कि कोरोना लॉकडाउन या नोटबंदी के वक्त भी बाजार इस तरह नहीं गिरा है। साल 1996 के बाद यह पहला मौका है जब निफ्टी में लगातार पांच महीने गिरावट रहेगी। बताया जा रहा है कि विदेशी संस्थागत निवेशकों की लगातार बिकवाली के कारण शेयर बाजार में गिरावट आ रही है। पिछले साल अक्टूबर 2024 से विदेशी निवेशक अब तक 2 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा के शेयर बेच चुके हैं। साथ ही रुपये के कमजोर होने से उभरते बाजारों में निवेश कम आकर्षक हो गया है। इस कारण विदेशी निवेशक भारतीय बाजार से पैसा निकाल रहे हैं। इसका सीधा मतलब यह है कि मोदी सरकार की नीतियों और फैसलों पर विदेशी निवेशकों का भरोसा उठ चुका है। अजीब बात है कि एक तरफ बिहार, मप्र, उप्र, असम तमाम भाजपा शासित राज्यों में निवेशकों को आकर्षित करने वाले कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। देश के नामी-गिरामी उद्योगपति भाजपा नेताओं और मंत्रियों के साथ मंच साझा कर विकास की गंगा-जमुना बहाने के सपने लोगों को दिखा रहे हैं। सरकारों के साथ उद्योग घरानों के समझौते हो रहे हैं। दावे किए जा रहे हैं कि फलाने राज्य में इतने करोड़ की परियोजनाएं शुरु होंगी, तो इतने का मुनाफा होगा, ढिकाने राज्य में इतने लोगों को रोजगार मिलेगा, इतना विकास होगा। लेकिन जमीन पर देखें तो आम जनता के लिए आमदनी अठन्नी, खर्चा रूपैया जैसा हाल ही बना हुआ है।

न कहीं बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन हो रहा है, न बड़े कल-कारखाने लग रहे हैं, न आधुनिक तकनीकी का इस्तेमाल व्यापक पैमाने पर उद्योगों में होता दिखाई दे रहा है। राहुल गांधी ने संसद में जो चिंता जतलाई थी वह बिल्कुल वाजिब थी कि हम एआई की बात करते हैं, लेकिन बिना डाटा के इसका कोई अर्थ नहीं है। भारत के पास न तो उत्पादन डाटा है, न ही उपभोक्ता डाटा। हमने अपना उपभोक्ता डाटा अमेरिका की बड़ी कंपनियों को दे दिया है और उत्पादन डाटा हमारे पास नहीं है। ऐसे में हमारे विकास का कोई विजन ही नहीं है। राहुल गांधी की बात को एक बार फिर सरकार ने हल्के में उड़ाने की कोशिश की। हालांकि उन्होंने दूरदर्शितापूर्ण बात कही। अगर आज हम बदलते वक्त के साथ औद्योगिक माहौल को नहीं ढालेंगे तो दुनिया में काफी पिछड़ जाएंगे। अभी यही हो रहा है। एक तरफ चीन और दूसरी तरफ अमेरिका का दबदबा बढ़ता जा रहा है। हमारे यहां दो-चार लोग दुनिया के अमीरों में भले शामिल हों, लेकिन पूरा देश तभी विकास करेगा, जब आम जनता की जेबों में धन आएगा।

अभी तो आम जनता केवल इसी माथापच्ची में लगी रहती है कि अपनी सीमित आय को कैसे बचाए। शेयर बाजार की गिरावट उसकी उलझन और बढ़ा रही है। शेयर बाजार में विदेशी निवेशकों के हाथ खींचने के अलावा ट्रंप की टैरिफ पर जैसे को तैसा वाली धमकी भी असर दिखा रही है। अगर नरेन्द्र मोदी हिम्मत दिखा कर ट्रंप को वहीं रोकते और बताते कि अमेरिका को भारत से कितना फायदा मिल रहा है। इतना बड़ा बाजार हमने अमेरिका को दिया है, इसका एहसान प्रधानमंत्री जताते तो शायद बाजार का भरोसा भी बढ़ता। लेकिन वहां तो श्री मोदी मुस्कुरा कर आ गए और अब भी जब ट्रंप रोजाना किसी न किसी तरह भारत को अपमानित कर रहे हैं, तो भी मोदी सरकार कोई प्रतिवाद नहीं कर रही है। ऐसे में भारतीय बाजार को लेकर अनिश्चितताएं बढ़ना स्वाभाविक है। इसका फायदा चीन जैसे देशों को मिल रहा है। जहां शेयर बाजार ऊंचाई पर जा रहा है।

भारत तो हमेशा से ही आशा का केन्द्र रहा है, मोदी जी!

वैसे तो किसी मिथक के बनने और उसके स्थापित होने में बरसों या सदियां लग जाती हैं लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इसे गढ़ने और प्रतिस्थापित करने में क्षण भर भी नहीं लगाते और कमाल तो यह है कि वह मिनटों में स्थापित भी हो जाता है। उनके 11 वर्षों के कार्यकाल में अनेक और अविश्वसनीय किस्म की अवधारणाएं गढ़ने का उनका कारनामा देश देखता आ रहा है; और वे दुर्भाग्य से स्वीकार्य भी होती चली जा रही हैं। 'पिछले 70 वर्षों से देश में कुछ नहीं हुआ' से लेकर 'देश पर हमेशा से ही भ्रष्टाचारियों का शासन रहा है', 'विपक्ष हमेशा हिन्दू-मुसलमान करता रहा है' से लेकर 'नेहरू जी को कृषि की समझ नहीं थी' तक, 'भाजपा में कोई झूठ नहीं बोलता' से लेकर 'मेरे लिये पद का नहीं वरन सेवा का महत्व है' तक ऐसी अनेकानेक धारणाएं उन्होंने प्रवर्तित कीं तथा उन्हें जनता द्वारा मान्य कराया। अपने जुमलों की तरह मोदीजी द्वारा देशवासियों के जेहन में जिस तरह से परिकल्पनाएं प्रविष्ट की गयीं, उसे उनकी खासियत और सफलता दोनों ही कहा जा सकता है।

प्रधानमंत्री के रूप में उनके द्वारा कई शासकीय व अशासकीय कार्यक्रमों में भाषण किये जाते हैं अथवा पार्टी नेता के रूप में वे कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हैं या फिर निजी अथवा सार्वजनिक तौर पर जो कहते हैं, उन सभी में एक समानता ज़रूर होती है- वह है कोई ऐसा आख्यान गढ़ना जो अब तक न सुना गया हो या न कभी देखा गया हो। उनकी बातों को लोगों तक पहुंचाने व उसे मान्यता दिलाने की उनके पास एक सुव्यवस्थित प्रणाली है। इसलिये मोदी बेधड़क रोज-रोज नयी-नयी अवधारणाएं जनता के बीच स्थापित करते हैं। दूसरा तथ्य यह है कि उनकी ऑडियेंस उनके जुमलेनुमा कथनों पर भरोसा करने के लिये न सिर्फ तैयार बैठी होती है बल्कि उनका बेसब्री से इंतज़ार भी करती रहती है। इसलिये वह जल्दी से स्वीकार्यता प्राप्त कर लेती है। उनके कहे का खंडन नक्कारखाने में तूती सदृश्य साबित होता है। ऐसे भी लोग हैं जो जानते हैं कि मोदी जो कह रहे हैं वह यथार्थ से परे हैं लेकिन वे उन पर भरोसा करने तथा उन्हें आगे बढ़ाने के लिये विभिन्न कारणों से प्रतिबद्ध होते हैं। उनके उवाच अंततः उनकी छवि निखारने का उपक्रम ही होते हैं। इसलिये उनकी भारतीय जनता पार्टी, उसके नेता, कार्यकर्ता, आईटी सेल, समर्थक, प्रशंसक... सारे एक स्वर में उनके उठाये विमर्श को आगे बढ़ाते हैं। मोदी व भाजपा की यही ताकत है।

नया शोशा जो उन्होंने छोड़ा है वह यह है कि 'इतिहास में यह पहला अवसर है जब दुनिया भारत को लेकर आशावादी हुई है।' मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में आयोजित ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में अपने भाषण में

डॉ. दीपक पाचपोर

भारत का स्वतंत्रता आंदोलन दूसरी बड़ी मिसाल है कि कैसे उसने दुनिया के अनेक देशों को औपनिवेशिक दासता की बेड़ियों को काटकर आत्म मुक्ति के लिये प्रेरित किया था। इस संघर्ष को जिसने राह दिखाई वह महात्मा गांधी थे जिन्होंने गरीब व कमजोर नागरिकों को अहिंसा व सत्य के अमोघ अस्त्र प्रदान किये।

उन्होंने सोलर ऊर्जा, विदेशी निवेश, एयरोस्पेस कम्पनियों हेतु सप्लाई चेन आदि क्षेत्रों में भारत की उपलब्धियों का ज़िक्र तो किया ही, विश्व बैंक के हवाले से बताया कि देश अगले दो वर्षों तक दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्थाओं में से एक बना रहेगा। पीएम कह रहे हैं तो सही ही होगा, लेकिन इस बड़ी या सुपरसोनिक गति से बढ़ती अर्थव्यवस्था का असर जनजीवन पर तो होता हुआ बिलकुल नहीं दिखाई दे रहा है और तीन चौथाई देश कोरोना के बाद से आज तक 5 किलो राशन की लाइन में लगा हुआ है। उस पर भी मोदी को वैसा ही गर्व है जैसा देश की बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाने पर है; पर मूल सवाल यह है कि क्या भारत विश्व की आशा का केन्द्र पहली बार बना है; और क्या केवल ऐसा भौतिक विकास करने से कोई देश विश्व भर की आशा का केन्द्र बन सकता है जो कि अपरिभाषित और संदेह के घेरे में है? फिर, क्या वाकई पहली बार भारत की ओर दुनिया आशा भरी निगाहों से देख रही है? मोदी ने यह अपनी लोकप्रियता को बढ़ाने के लिये बयान दिया होगा क्योंकि उनके कथन का अनभिव्यक्त हिस्सा यही है कि ऐसा उनके कारण हो रहा है यानी भारत को इस स्थिति में लाने वाले वे ही हैं।

दरअसल यह बात वही कह सकता है जिसके पास सिवा आत्ममुग्धता व अहंकार के कुछ नहीं है। साथ ही यह भी साफ है कि यह विचार तभी आयेगा जब उसने भारत को ठीक से न जाना हो। बेशक मोदी इसका श्रेय लेते रहें कि उन्हीं के कारण दुनिया भारत की ओर देखने लगी है, पर वास्तविकता यह है कि ऐसा पहली बार नहीं हो रहा है। बल्कि कई-कई बार भारत ने लोगों का ध्यान अपनी ओर उम्मीदगी के साथ खींचा है। वह हमेशा से ही वैश्विक आशा का केन्द्र रहा है। वह भी कोई दो-चार साल, कुछ दशक नहीं वरन सदियों पहले से। ढाई हजार साल पहले का काल याद करें जब केवल भारत नहीं, दुनिया ही हिंसा और गैर बराबरी से परिपूर्ण थी। भगवान महावीर ने अहिंसा तथा बुद्ध ने सम्यक ज्ञान के उपदेश दिये और निराशा व भेदभाव के अंधकार में डूबी दुनिया को राह दिखाई थी। बुद्ध का जलाया दीपक तो पूरे एशिया को आलोकित कर रहा है। आज भी अनेक देशों का वह पथ प्रदर्शक है। भारत तब भी यदि आशा का केन्द्र न होता तो तकरीबन 2000 साल पूर्व भारत के मलाबार तट पर यहूदी न आते, न ही पारसी 1200 वर्ष पहले अपना मूल स्थान फारस (वर्तमान ईरान) छोड़कर गुजरात के संजान तट पर शरण लेते; और न ही द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान नाजी अत्याचारों से बचकर आये लगभग एक हजार पोलैंडवासी 1942 में जामनगर में आश्रय पाते। हिमाचल प्रदेश के मलाणा गांव में भारत से असफल लौटते सिकंदर (326 ईसा पूर्व) के ग्रीक सैनिकों के तथा गुजरात के जम्बूर में 200 साल पहले बस गये अफ्रीकी कबीले सिद्धि मूल के मजदूरों के वंशज आज भी नहीं बसे हुए होते, गर भारत आशा का केन्द्र न होता। चीन द्वारा तिब्बत पर कब्जा करने के बाद धर्मगुरु दलाई लामा को 1959 में विश्व के आशा के इसी केन्द्र भारत ने शरण दी थी और इसी कारण से बांग्लादेश की निर्वासित प्रधानमंत्री शेख हसीना यहां हैं।

भारत का स्वतंत्रता आंदोलन दूसरी बड़ी मिसाल है कि कैसे उसने दुनिया के अनेक देशों को औपनिवेशिक दासता की बेड़ियों को काटकर आत्म मुक्ति के लिये प्रेरित किया था। इस संघर्ष को जिसने राह दिखाई वह महात्मा गांधी थे जिन्होंने गरीब व कमजोर नागरिकों को अहिंसा व सत्य के अमोघ अस्त्र प्रदान किये। आजादी मिली तो बीआर अंबेडकर के संविधान ने देश में सदियों से भेदभाव भरी एक निष्ठुर सामाजिक व्यवस्था के कारण गुलामगिरी कर रहे करोड़ों शोषितों व वंचितों को मुक्त कर उन्हें नागरिक अधिकारों से लैस किया। यही संविधान अपने पन्नों में समानता, स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षता और बन्धुत्व के अध्यायों को समेटकर भारत को वैश्विक आशा का एक अक्षुण्ण-अक्षय केन्द्र बनाता है।

यदि देश कभी आशा का केन्द्र था ही नहीं, तो प्रकारान्तर से मोदीजी यह भी कह रहे हैं कि भारत की सभ्यता व संस्कृति में उनके आने से पहले ऐसा कुछ भी नहीं था जिसकी पुनर्प्राप्ति का संघर्ष भाजपा और उसकी मातृ संस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ करता है और जिस उद्देश्य को लेकर सौ वर्ष पहले उसकी स्थापना हुई थी। यानी भारत का जो कुछ भी अर्जन है वह इन्हीं पिछले एक दशक का है? तो पता चले कि आखिर किस भारत की स्थापना हेतु संघ कथित रूप से लड़ रहा है?

(लेखक देशबन्धु के राजनीतिक सम्पादक हैं)

कम्पनियों को जंगलों में प्रवेश देने से भयभीत वन निवासी

■ **राज कुमार सिन्हा**

आधुनिक व्यापार – व्यवसाय ने अब तेजी से प्राकृतिक संसाधनों को अपनी चपेट में लेना शुरू कर दिया है। जंगल, जिन्हें सुप्रीम कोर्ट द्वारा दी गई परिभाषा के मुताबिक केवल रिकॉर्ड में दर्ज होना ही काफी है, निजी कंपनियों को दिए जा रहे हैं। वन बहुल मध्यप्रदेश की सरकार धीरे-धीरे जंगलों को निजी हाथों में सौंपने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। वर्तमान में फिर से मध्यप्रदेश सरकार ने वनीकरण के लिए बिगड़ेवन भूमि को ग्रीन क्रेडिट कार्यक्रम के अन्तर्गत वृक्षारोपण के लिए निजी निवेशकों को सौंपने की योजना बनाई है, जिसमें निवेशकों को 50 प्रतिशत लघु वनोपज बेचने का अधिकार भी शामिल होगा। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, 17 राज्यों ने अब तक ग्रीन क्रेडिट कार्यक्रम के अन्तर्गत वृक्षारोपण के लिए 57,700 हेक्टेयर से अधिक बंजर भूमि को अलग रखा है। मध्यप्रदेश जो देश में सबसे अधिक वन क्षेत्र वाला राज्य है। उसने 2 फरवरी तक इस कार्यक्रम के लिए 15,200 हेक्टेयर से अधिक बंजर भूमि की पहचान और उसका पंजीकरण किया है जो सभी राज्यों से अधिक है, ऐसा सरकार ने वर्तमान संसद सत्र में बताया है। कोरोना काल में मध्यप्रदेश सरकार के 'प्रधान मुख्य वन संरक्षक' कार्यालय ने 20 अक्टूबर 2020 को 37 लाख हेक्टेयर बिगड़ेवनों को 'पब्लिक-प्राइवेट-पार्टनरशिप' (पीपीपी) मोड पर निजी कम्पनियों को देने का आदेश जारी किया था, परन्तु विरोध के बाद इसे रोका गया। प्रकृति को सुधारने के नाम पर मुनाफा कमाते हुए पूंजी बढ़ाने की तरकीब है – 'कार्बन व्यापार' या 'कार्बन ट्रेडिंग।' वर्ष 2021 में 'वैश्विक कार्बन क्रेडिट बाजार' में 164 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और वर्ष 2030 तक इसके 100 बिलियन अमेरिकी डालर पार करने की उम्मीद है। 'कार्बन व्यापार' के जरिए (वनीकरण करके) अन्तराष्ट्रीय बाजार से करोड़ों रुपए कमाना प्राथमिकता में है। भारत सरकार ने 2008 से 12 के बीच बिगड़ेवन, गांव का चारागाह एवं पड़त-जमीन पर वनीकरण कर 'कार्बन क्रेडिट' के जरिए 1250 लाख डॉलर कमाने की योजना बनाई थी। विश्वबैंक के आंकलन के अनुसार लकड़ी, बांस एवं अकाष्ठीय वनोत्पाद का मूल्य 20,000 लाख डॉलर है। 'संयुक्त वन प्रबंधन' इलाके के पारिस्थितिकीय एवं पर्यावरणीय टूरिज्म का मूल्य 17,000 लाख डॉलर आंका जा रहा है।

'ग्रीन इंडिया मिशन' और 'रिड्यूसिंग एमिशन फ्रॉम डिफारेस्ट्रेशन एण्ड डिग्रेडेशन' (आरईडीडी), जिसे संक्षिप्त में 'रेड' कहा जाता है, के अन्तर्गत भारत सरकार द्वारा अन्तराष्ट्रीय पूंजी लाने की योजना है। पर्यावरण बचाने के नाम पर विश्व बाजार तैयार करना भी अन्तरराष्ट्रीय पूंजी का हिस्सा हो गया है। अब तो 'एनजीओ' भी आदिवासियों को उनके कब्जे की भूमि से बेदखल कर वृक्षारोपण करने का कार्यक्रम चला रहे हैं। ऐसा ही एक मामला मध्यप्रदेश के उमरिया जिले के मानपुर और ताला विकास खंड में आया है, जहां एक संस्था द्वारा आदिवासियों को उनकी 'वनाधिकार कानून' के दावे वाली वनभूमि से हटाकर वृक्षारोपण करने की शिकायत मिली है।

पर्यावरण बचाने के नाम पर धन भी बहुत है, लेकिन पूंजीवादी सोच के कारण सब कुछ व्यापारिक दृष्टिकोण से किया जा रहा है। इससे न तो जंगल और न ही पर्यावरण बच पा रहा है।

मध्यप्रदेश में कुल 52,739 गांवों में से 22,600 गांव या तो जंगल में बसे हैं या फिर जंगलों की सीमाओं से सटे हुए हैं। प्रदेश का बड़ा हिस्सा 'आरक्षित वन' है और दूसरा बड़ा हिस्सा राष्ट्रीय उद्यान और अभयारण्य आदि के रूप में जाना जाता है। बाकी बचते हैं वे वन जिन्हें 'बिगड़े वन' या संरक्षित वन कहा जाता है। इन संरक्षित वन में पहले स्थानीय लोगों के अधिकारों का दस्तावेजीकरण किया जाना है इसलिए उनका अधिग्रहण नहीं किया जाना है।

मध्यप्रदेश में कुल 52,739 गांवों में से 22,600 गांव या तो जंगल में बसे हैं या फिर जंगलों की सीमाओं से सटे हुए हैं। प्रदेश का बड़ा हिस्सा 'आरक्षित वन' है और दूसरा बड़ा हिस्सा राष्ट्रीय उद्यान और अभयारण्य आदि के रूप में जाना जाता है। बाकी बचते हैं वे वन जिन्हें 'बिगड़े वन' या संरक्षित वन कहा जाता है। इन संरक्षित वन में पहले स्थानीय लोगों के अधिकारों का दस्तावेजीकरण किया जाना है इसलिए उनका अधिग्रहण नहीं किया जाना है। ये संरक्षित जंगल उन स्थानीय समुदाय के लिए बहुत महत्वपूर्ण आर्थिक संसाधन हैं जो जंगलों में बसे हैं और जिसका इस्तेमाल वे निस्तार जरुरतों के लिए करते हैं। प्रदेश के विभिन्न जिलों में 6520 वनखंडों में प्रस्तावित 30,06,624 हेक्टेयर भूमि के संबंध में वन व्यवस्थापन की कार्रवाई 1988 से लंबित है। भारतीय वन अधिनियम 1927 के प्रावधानों के तहत वन व्यवस्थापन अधिकारियों को धारा- 5 से 19 तक कार्रवाई कर धारा-20 में आरक्षित वन बनाने की प्रारुप अधिसूचना मय प्रतिवेदन प्रस्तुत करनी थी, जो अब तक लंबित है। प्रश्न उठता है कि वन अधिकार कानून 2006 की धारा 3(1)(झ) द्वारा ग्राम सभा को जंगल के संरक्षण, प्रबंधन और उपयोग के लिए जो सामुदायिक अधिकार दिया गया है या दिया जाने वाला है, उसका क्या होगा?

(बरगी बांध विस्थापित एवं प्रभावित संघ)

आपके पत्र

बिहार चुनाव में राजनैतिक सरगर्मियां बढ़ी

बिहार विधानसभा चुनाव की रणभेरी बजने वाली है। बिहार चुनाव को लेकर तरह-तरह की बातें मीडिया की सुर्खियां बटोर रही है। नीतीश कुमार प्रगति यात्रा के जरिये मत्तदाताओं को लुभाने की कोशिश कर रहे हैं। उनके कार्यकाल में किये विकास कार्यो को लेकर मतदाता उत्सुक नजर आ रहे हैं। बिहार को बीमारू राज्य के नाम से जाना जाता था। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार बिहार की सत्ता संभालने के बाद राज्य का उत्तरोत्तर विकास हुआ है। इस बार विधानसभा चुनाव को लेकर राजद फूंक-फूंक कर पांव रख रही है। नीतीश कुमार ने क्रियान्वयन को लेकर राजद से किनारा कर लिया। तेजस्वी यादव ने कसीदे पढ़ने शुरू कर दिए। केंद्र में मोदी के साथ जदयू के गठबंधन के बाद नीतीश कुमार के इर्दगिर्द घूमने वाले लालू और तेजस्वी को मुख्यमंत्री नीतीश ने सिरे से खारिज कर दिया। बिहार में राजनीतिक बड़ा खेल होते-होते रह गया। नीतीश कुमार ने तेजस्वी को दो टूक जवाब दे दिया कि हम अब कभी भी राजद के साथ गठबंधन नहीं करेंगे। अब हम मोदी को छोड़कर कहीं नहीं जाएंगे। तेजस्वी ने नीतीश कुमार के ज्येष्ठ पुत्र निशांत को राजनीति में आने का न्यौता दिया है। निशांत राजनीति में आए तो उनका स्वागत है। तेजस्वी को अपना परिवार देखना चाहिए। तेजस्वी यादव ने अपने भाई तेज प्रताप के साथ अन्याय किया था। तेजस्वी और तेजप्रताप के ड्रामे से देश अंजान नहीं है। तेजस्वी ने तेजप्रताप के हक को छीन लिया था। तेजस्वी को अपने भाई और पिता लालू के साथ न्याय करना चाहिए। विपक्षी दल का विरोध राजनीति तक ही होना चाहिए। दूसरों के परिवार में दखलंदाजी करने से पहले अपने परिवार के बारे में सोचना चाहिए। राजनीति में आने के लिए हर कोई स्वतंत्र है लेकिन विपक्ष राजनीति के लिए आफर करता है तो यह बेबुनियाद है क्योंकि जिस व्यक्ति के लिए राजनीति में आने के लिए निमंत्रण भेज रहे हैं वे पहले से ही मजबूत और निष्ठावान है। उनको बरगलाने से पहले अपने गिरेबां में झांकना चाहिए। तेजप्रताप लालू प्रसाद के ज्येष्ठ पुत्र हैं और राजनीति और परिवार में सबसे पहले उनका हक है। अपने बूते चुनाव लड़ने और लालू प्रसाद को पार्टी में वर्चस्व की अनदेखी करने वाले तेजस्वी को परिवार के साथ न्याय करना होगा। लालू प्रसाद ने बिहार को जंगलराज का तमगा भले ही दिलाया हो, लेकिन तेजस्वी आज जो कुछ हैं अपने पिता की वजह से ही हैं। तेजस्वी राजद के मुखिया है। लालू के संरक्षण में बनी राजद पार्टी पर पहला हक लालूजी का है और बड़े पुत्र तेजप्रताप का है। दरअसल, नीतीश के आशीर्वाद से बिहार में उपमुख्यमंत्री बने तेजस्वी को किसी मुगालते में नहीं रहना चाहिए। राजनीति ही वह मंच है जहां परिवार का सम्मान होता है तो चुनाव में भी मत्तदाता अपना वोट देते हैं। सबसे पहले परिवार है उसके बाद में राजनीति है। उत्तरप्रदेश में समाजवादी ड्रामा अखिलेश और मुलायम के बीच तीन महीने तक चला। उसका परिणाम हम देख ही रहे हैं। फलस्वरूप तेज प्रताप शिक्षित व्यक्ति है और परिवार में सबसे पहले उनका हक है। तेजप्रताप उत्तराधिकारी है। तेजस्वी यादव अपने परिवार की अंगुली पकड़कर राजनीति के गलियारों तक पहुंचे है। अब परिवार के साथ अन्याय नहीं करना चाहिए। तेजस्वी को इधर-उधर की बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। अपने लक्ष्य को ध्यान में रखकर अपना कार्य स्वयं करें। क्योंकि सत्य की हमेशा जीत होती है।

कांतिलाल मांडोत, सूरत

ललित सुरजन की कलम से

छोटे राज्य व अन्य इकाईयां

'भारत के तेलगु भाषा-भाषियों के लिए आंध्रप्रदेश का विभाजन व तेलंगाना का निर्माण स्वाभाविक ही एक बड़ा भावनात्मक मुद्दा है, किन्तु अब जबकि फैसला हो चुका है, अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रख इस मुद्दे के व्यवहारिक पक्ष पर ध्यान देना न सिर्फ तेलगु समाज बल्कि पूरे देश के लिए हितकर होगा। 15 अगस्त 1947 को एक स्वतंत्र राष्ट्र की उदय-वेला में भारत की आबादी बत्तीस करोड़ के आसपास थी। गत सड़सठ वर्षों में यह आंकड़ा एक अरब बीस करोड़ के पार चला गया है। ध्यान आता है कि 1956 में राज्य पुनर्गठन के समय मध्यप्रदेश की आबादी मात्र दो करोड़ थी, जबकि सन् 2000 में मध्यप्रदेश के पुनर्गठन के समय सिर्फ छत्तीसगढ की ही आबादी इतनी थी। ऐसे ही आंकड़े अन्य प्रदेशों के होंगे। इसका सीधा मतलब यह हुआ कि देश के लगभग हर प्रांत पर बढ़ती आबादी का दबाव लगातार बढ़ रहा है। यह एक व्यवहारिक तथ्य है जिसके आधार पर हम लंबे समय से छोटे राज्यों की वकालत करते आए हैं।'

'सन् 2000 में जो तीन नए प्रांत बने उनके पीछे भी कुछ भावनात्मक और कुछ राजनीतिक कारण थे। एनडीए सरकार ने व्यवहारिक आधारों पर नए प्रांतों के गठन का फैसला नहीं लिया था, किन्तु आज तेरह साल से कुछ अधिक समय बीत जाने के बाद यह स्पष्ट है कि तीन राज्यों के विभाजन से किसी भी राज्य को न कोई नुकसान पहुंचा और न कोई असुविधा हुई, बल्कि पुनर्गठन से जो नए राय बने उनमें बेहतर प्रशासन की संभावनाएं विकसित हुईं। यह अलग विवेचन का विषय है कि ये संभावनाएं फलीभूत हुईं या नहीं। अगर उसमें कोई कमी रही है तो उसके कारण अलग हैं। इस तरह विचार करने से हमें लगता है कि तेलंगाना राज्य गठित करने का निर्णय गलत नहीं था।'

(देशबन्धु में 27 फरवरी 2014 को प्रकाशित)

https://lalitsurjan.blogspot.com/2014/02/blog-post_26.html

पावन प्रसंग

सदाचार तथा वैदिक धर्म का ज्ञान

वेद तथा सनातनी ग्रंथों से मानव जीवन परिष्कृत होता है और सदाचार तथा वैदिक धर्म का ज्ञान मानव धर्मार्थ की खोज में एक यज्ञ की तरह है। भारतीय ऋग्वेद, अथर्ववेद और अनेक वेदों में इतनी शक्ति, ऊर्जा और अर्थ छिपा हुआ है कि उसका अध्ययन मनन और चिंतन करने से भारत विश्व गुरु बनने की क्षमता रखता है। भारत की योग विद्या पूरे विश्व में अमेरिका सहित यूरोप में अपनाई गई है।

भारतीय संस्कृति आज महावीर तथा बुध के पूरे विश्व में करोड़ों अनुयायी हैं, और दोनों ने श्रम तथा सार्थकता को जीवन में अपनाने को ही महत्व दिया था। गुरु नानक देव द्वारा प्रतिपादित सरबत दा भला, हो या महात्मा गांधी का सर्वोदय, ईसा मसीह की करुणा, मोहम्मद साहब, टैगोर का मानवतावाद या नेहरू का अंतरराष्ट्रीय राष्ट्रवाद जीवन के श्रम तथा सार्थकता की खोज में बड़े महत्वपूर्ण उदाहरण है। व्यक्तिगत और पारिवारिक स्तर पर देखा जाए तो महज रोजगार की तलाश विवाह संतानोत्पत्ति, बच्चों का भरण-पोषण तथा सेवानिवृत्ति ही जीवन नहीं है। इसमें सामुदायिक श्रम और सार्थकता का समावेश होना समीचीन है। हालांकि इस बात में कोई दो मत नहीं कि पारिवारिक उत्तरदायित्व का निर्वहन सामाजिक मूलभूत आवश्यकता है पर इसके साथ साथ कुछ ऐसा सार्थक श्रम किया जाना चाहिए जो न केवल आत्मिक संतोष का अनुभव प्रदान करें, बल्कि सामाजिक हित और वैश्विक शांति में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दें, और समाज को दिशा देने वाली कोई परिणति समाज के सम्मुख प्रकट हो जिससे समाज के लोगों का जीवन परिष्कृत हो। इसी संदर्भ में राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, सर सैयद अहमद खान, दयानंद सरस्वती, विवेकानंद ने हमेशा सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध अभियान चलाकर जीवन में श्रम तथा सार्थकता का महत्व बढ़ाकर सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया था।

यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि जीवन की असली खोज श्रम सार्थकता की उपलब्धि ना होती और तथाकथित सफलता के शिखर पर व्यक्चि बैठ जाता है और शांत हो जाता, तो सफलता के शिखर पर बैठे बिलगेट, वारेन बुफेट जैसे लोग अपनी अकूत संपत्ति का बड़ा भाग सामाजिक उद्देश्य के लिए दान नहीं करते। सुंदरलाल बहुगुणा चिपको आंदोलन चलाकर जल तथा पर्यावरण संरक्षण की बात नहीं करते। कैलाश सत्यार्थी बचपन बचाओ आंदोलन के माध्यम से बाल संरक्षण के अधिकारों का झंडा बुलंद नहीं कर पाते। थॉमस अल्वा एडिसन, आइंस्टीन, मैडम क्यूरी और राइट बंधुओं के श्रम और सार्थकता के प्रयास ने ही सफलता का परचम लहराया है। इन सब के पीछे उनकी असाध्य मेहनत और दिमागी सार्थकता ही मुख्य कारक बन कर उन्हें उत्प्रेरित करते रहे हैं।

-संजीव ठाकुर

प्रकाशक, मुद्रक : राजीव रंजन श्रीवास्तव द्वारा पत्रकार प्रकाशन प्रा. लि. के लिए 506, आई.एन.एस. बिल्डिंग, 9, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित एवं बीएफएल इंफोटेक लि., सी 9, सेक्टर-3, नोएडा से मुद्रित। सम्पादक : राजीव रंजन श्रीवास्तव, (पी.आर.बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)। आर.एन.आई. नं. DELHIN/2008/24216. दिल्ली कार्यालय :फोन: 011-23718195,23357784, फैक्स: 011-43581404, नोएडा कार्यालय: फोन: 0120-4114404 फैक्स: 0120-4273770
ई-मेल: deshbandhudelhi@gmail.com वेब: www.deshbandhu.co.in

देश विदेश

इराक ने अमेरिका के समक्ष नए सुरक्षा समझौते का प्रस्ताव रखा : अब्बासी

दोहा। इराक ने अमेरिका के समक्ष नये सुरक्षा समझौते पर सहमति का प्रस्ताव रखा है, जिसमें खुफिया सहयोग भी शामिल होगा। इराक के रक्षा मंत्री थाबित अल-अब्बासी ने मंगलवार को यह जानकारी दी। उन्होंने सऊदी टीवी चैनल अल-हद से कहा कि हमने अमेरिका के समक्ष नये सुरक्षा समझौते का प्रस्ताव रखा है और हमें लगता है कि यह अब भी विचाराधीन है। उन्होंने बताया कि नया सुरक्षा समझौता एक स्थायी सुरक्षा साझेदारी और खुफिया सहयोग प्रदान करेगा। गौरतलब है कि इराक को उम्मीद है कि उसकी जमीन पर तैनात अमेरिकी सैनिक इस वर्ष स्वदेश लौट जाएंगे, जिससे देश में एक दशक से अधिक समय से अमेरिकी सैन्य उपस्थिति समाप्त हो जाएगी।

बांग्लादेश में बढ़ रही अपराध दर सवालों के घेरे में यूनुस सरकार

ढाका, 25 फरवरी (एजेंसियां)। बांग्लादेश में अपराध दर खतरनाक दर से बढ़ रही है। पुलिस के आंकड़ों से पता चलता है कि जनवरी में हत्या, अपहरण, डकैती, सेंधमारी और चोरी के मामलों में देश भर में वृद्धि देखी गई और आंकड़े पिछले छह वर्षों की तुलना में सबसे खराब है। स्थानीय मीडिया के अनुसार, यह आंकड़े अंतरिम सरकार के गृह मामलों के सलाहकार जहाँगीर आलम चौधरी के इस दावे के बिल्कुल विपरीत है कि बांग्लादेश में कानून और व्यवस्था की स्थिति 'संतोषजनक' है।

पुलिस मुख्यालय के आंकड़ों से पता चलता है कि इस साल जनवरी में अलग-अलग पुलिस थानों में कम से कम 294 हत्या के मामले दर्ज किए गए। देश के प्रमुख अख़बार 'द डेली स्टार' की रिपोर्ट के अनुसार, पिछले छह वर्षों के मासिक अपराध आकड़ों के विश्लेषण से पता चला है कि जनवरी 2025 में एक महीने में सबसे ज्यादा लूटपाट और डकैती की घटनाएं हुईं, जिसमें 242 घटनाएं दर्ज की गईं।

पुलिस के आंकड़े यह भी बताते हैं कि पिछले साल दिसंबर और नवंबर में लूटपाट, डकैती, अपहरण की घटनाओं में भी पिछले पांच सालों में इन्हीं महीनों की तुलना में वृद्धि देखी गई।

पुलिस के आंकड़े यह भी बताते हैं कि पिछले साल दिसंबर और नवंबर में लूटपाट, डकैती, अपहरण की घटनाओं में भी पिछले पांच सालों में इन्हीं महीनों की तुलना में वृद्धि देखी गई।

सरकार के इस दावे की आलोचना करते हुए कि कानून और व्यवस्था सामान्य है, बांग्लादेश में अपराध विज्ञान के एक प्रोफेसर ने सवाल किया, क्या ये अपराध, जो जनता में डर पैदा कर रहे हैं, वास्तव में संतुष्टि का संकेत हैं? डेली स्टार ने प्रोफेसर के हवाले से कहा कि बांग्लादेश में लोग हत्या, चोरी, लूटपाट या डकैती का शिकार बनने के डर में जी रहे हैं। सरकार उदासीन है और उसे नहीं पता कि मौजूदा स्थिति से कैसे निपटा जाए। एक अलग घटनाक्रम में, रविवार रात को ढाका के विभिन्न हिस्सों में कुछ ही घंटों के भीतर कई हिंसक अपराध की खबरें आईं। बदमाशों द्वारा बंदूकों और चाकूओं से निवासियों पर हमला करने के वीडियो वायरल हुए जिसके बाद कई लोगों ने कानून प्रवर्तन की नाकामी पर अपना आक्रोश व्यक्त करने के लिए सोशल मीडिया का सहारा लिया। ढाका के बाहर भी स्थिति उतनी ही अस्थिर बताई जा रही है, जहां कानून और व्यवस्था की स्थिति खराब है। इससे नागरिकों में भय और असुरक्षा की भावना पैदा हो गई है, लोग बाहर निकलने से भी बच रहे हैं। इससे पहले महिलाओं और बच्चों के खिलाफ यौन हिंसा के मामलों में बढ़ोतरी से नाराज छात्रों ने अंतरिम सरकार की नाकामी के विरोध मार्च निकाला। रविवार को ढाका के कई प्रमुख कॉलेजों और विश्वविद्यालयों जैसे जगन्नाथ विश्वविद्यालय, ईडन कॉलेज, गवर्नमेंट टिटुमिर कॉलेज, यूनिवर्सिटी ऑफ लिबरल आर्ट्स बांग्लादेश (यूएलएबी) और बीआरएसी विश्वविद्यालय में विरोध प्रदर्शन हुए। छात्रों ने नारे लगाए, सरकार जागो!, चुप्पी तोड़ो, बलात्कारियों को सजा दो!,

अमेरिका, यूक्रेन के बीच संसाधनों पर संभावित समझौते का रूस से कोई लेना-देना नहीं : पुतिन

मॉस्को, 25 फरवरी (एजेंसियां)। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने सोमवार को कहा कि अमेरिका और यूक्रेन के बीच प्राकृतिक संसाधनों पर संभावित समझौते का रूस से कोई लेना-देना नहीं है। हालांकि यूक्रेन के संसाधनों का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

पुतिन ने कहा कि इससे हमें कोई सरोकार नहीं है। मैं इसका बिल्कुल भी आकलन नहीं कर रहा हूं और न ही इस बारे में सोचना चाहता हूं। बेशक, इन संसाधनों का आकलन करने की जरूरत है कि वे कितने वास्तविक हैं, इनमें से कितने संसाधन हैं, वे क्या हैं, उनकी लागत कितनी है, इत्यादि। लेकिन, मैं दोहराता हूं, यह हमारा काम नहीं है। राष्ट्रपति ने कहा कि साथ ही, रूस अमेरिकी साझेदारों, निजी व्यवसायों और सरकारी संरचनाओं को दुर्लभ पृथ्वी धातुओं के क्षेत्र में एक साथ काम करने का अवसर देने के लिए तैयार होगा। पुतिन ने कहा कि दुर्लभ पृथ्वी धातुएं उन्नत अर्थव्यवस्था क्षेत्रों के लिए बहुत महत्वपूर्ण संसाधन हैं, और हम इस दिशा में बहुत कम काम कर रहे हैं। हमें और अधिक करना चाहिए।

सुडोकू 6837

	8				1	4		
		9		2	8	1		
				4			9	
	3							7
4			3		5			9
6							4	
	9			8				
		5	7	3		6		
		6	1				8	

: नियम :

1. कुल 81 (9×9) वर्ग हैं, जिसमें 9 (3×3) वर्गों का एक खंड (ब्लॉक) बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1 से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते हैं।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कॉलम, कतार और खंड में 1 से 9 अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते हैं।

हल आज ही के अंक में

वर्ग पहेली 6837

१		२		३	■	४		५	
	■		■	६			■		■
७					■	८			९
	■		■	१०			■	■	
■	११		१२		■	■	१३		
■		■		■	१४			■	
१५		१६		■		■	१७	१८	■
	■		■	१९		२०	■		■
२१			■		■	२२			२३
	■	२४					■	■	

बायें से दायें:-

१. उठाना, उन्नति की ओर जाना, जिसकी आंखें ऊपर की ओर उठी हों
३. 'एजेंट'
५. पति (उर्दू)
६. ईश्वर, परमात्मा जो सभी को अपने नियंत्रण में रखता हो
७. किसी गणतंत्र का प्रधान
९. वास्तव में (उर्दू)
१०. तकलीफदेह
१२. नकद रकम, जमा. पूंजी
१३. पढ़ने वाला, पठन करने वाला
१४. शिकायत
१६. स्वामी, पति
१८. देखना, टकटकी बांधे देखना
२०. भावी कार्यपद्धति की रूपरेखा, मंसूबा
२१. परिधान, वेशभूषा
२४. मनोभिलाषा, मन की चाह

ऊपर से नीचे:-

१. पूजा, आराधना
२. जैसा निर्देश दिया गया हो
३. आम का बगीचा
४. कछुआ
५. अपराधी, दोषी (उर्दू)
८. छलमय, चतुराई
१०. लक्ष्मी
११. धनोपार्जन करना
१२. रुकावट डालना
१३. अग्नि
१४. इस्तेमाल
१५. एक जैसे नाम वाला
१७. कांपना, दहलना थरथराना
१८. अभिनेत्री
१९. किसी मापदंड के अनुसार किसी वस्तु की लंबाई -चौड़ाई जानना
२२. सरस्वती, स्वर, वचन, शब्द

वर्ग पहेली-6836

१ त	नु	२ म	ध्य	३ मा	■	४ प	रा	५ दि	त
ब	■	दे	■	६ न	लि	न	■	ज्ञा	■
७ दी	वा	न	■	सि	■	८ घ	मा	सा	९ न
ल	■	ज	■	१० क	प	ट	■	■	क्शे
■	११ स	र	१२ ल	ता	■	■	१३ स	ब	क
■	हा	■	जा	■	१४ अ	ग्रि	म	■	द
१५ आ	रा	१६ ध	ना	■	न्य	■	१७ य	१८ ती	म
आ	■	न	■	१९ मि	त्र	२० ता	■	मा	■
२१ ज	ल	ज	■	ल	■	२२ प	द	र	२३ ज
न	■	२४ य	था	ना	म	■	■	■	ग

युसूफ कुरैशी, मो. 8109948408

दैनिक पंचांग

mypandit.com 24 hour astrology service

■ बेजान दारूवाला

ग्रह स्थिति : बुधवार 26 फरवरी, 2025 फाल्गुन कृष्ण पक्ष 15

राशिफल

मेष - आज आपके किसी काम या प्रोजेक्ट में सरकार से लाभ होगा। ऑफिस में महत्वपूर्ण मुद्दों पर अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श करेंगे। ऑफिस के कामकाज के लिए बाहर जाना होगा। कार्यभार बढ़ेगा।

वृषभ - विदेश गमन के लिए सुनहरे अवसर आएंगे। विदेश बसने वाले स्नेही या मित्रों का समाचार मिलेगा। व्यापारियों को व्यापार में धन लाभ होगा। नए आयोजन हाथ में ले सकेंगे। लंबी दूरी की यात्रा होगी, तीर्थ यात्रा होगी।

मिथुन - किसी भी प्रकार के अनिष्ट से बचने के लिए आज क्रोध की भावनाओं को नियंत्रण में रखने की जरूरत है। नई दवाई या चिकित्सा शुरू करने के लिए आज का दिन अनुकूल नहीं है। खर्च बढ़ जाने से आर्थिक तंगी अनुभव होगी।

कर्क - आज का दिन दोस्तों और स्वजनों के साथ आनंदपूर्वक गुजार सकेंगे। मनोरंजक प्रवृत्तियों का भी आनंद प्राप्त होगा। व्यापार में भी लाभ होने की संभावना अधिक है। भागीदारों से भी लाभ होगा।

सिंह - आज आपके परिवार में हर्षोल्लास का वातावरण रहेगा। पारिवारिक सदस्यों के साथ मिलकर आप आनंदपूर्वक समय व्यतीत करेंगे। शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। यश, कीर्ति और आनंद की प्राप्ति होगी।

कन्या - आज आपको किसी न किसी कारणवश से मन में चिंता रहेगी। विशेष रूप से संतान और स्वास्थ्य के बारे में आप अधिक चिंतित होंगे। पेट संबंधी बीमारियों की शिकायत रहेगी। विद्यार्थियों की पढ़ाई में कठिनाइयां आएंगी।

तुला - आज आप शारीरिक रुप से शिथिलता और मानसिक रुप से चिंता का अनुभव करेंगे। माता के विषय में चिंता रहेगी। स्थायी संपत्ति से संबंधित कामों में सावधानी बरतें।

वृश्चिक - आज का दिन खुशी से व्यतीत करेंगे। नए काम की शुरुआत करेंगे। घर में भाई-बहनों के साथ मेल-मिलाप रहेगा। स्वजनों और मित्रों के साथ मुलाकात होगी। किसी छोटी यात्रा के योग हैं। आज आपके काम सफल होंगे।

धनु - आज का दिन मध्यम फलदायी हैं। निरर्थक व्यय होगा। मन में ग्लानि रहेगी। परिजनों के साथ गलतफहमी के कारण मनमुटाव हो सकते हैं। कामों में मनवांछित सफलता नहीं मिल पाएगी। दुविधायुक्त मनोदशा के कारण निर्णय नहीं ले पाएंगे।

मकर - आज निर्धारित कार्य सफलता से पूरे होंगे। ऑफिस या व्यवसायिक स्थल पर आपका वर्चस्व बढ़ेगा। गृहस्थ जीवन में आनंद का वातावरण रहेगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। मानसिक स्वस्थता बनी रहेगी।

कुंभ - आज किसी का पक्ष ना लें। पैसे की लेन-देन से परहेज करें। खर्च में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। परिजनों के साथ वाद-विवाद से बचें। किसी के साथ गलतफहमी होने से झगड़ा होगा। क्रोध को नियंत्रण में रखना पड़ेगा।

मीन - आज आपके लिए लाभदायक दिन है। नौकरी व्यवसाय में आय वृद्धि होगी। बुजुर्ग और मित्रों की तरफ से आपको लाभ होगा। नए मित्र बनेंगे। इनसे मित्रता भविष्य के लिए लाभदायक साबित होगी।

नोट-उपरोक्त राशिफल बेजान दारूवाला द्वारा पूर्वलिखित है।

ईरान में अफगान शरणार्थियों का बुरा हाल, पुलिस एक्शन और प्रतिबंधों ने बढ़ाई मुश्किलें

तेहरान, 25 फरवरी (एजेंसियां)। ईरान ने सुरक्षा चिंताओं का हवाला देते हुए दक्षिण-पूर्वी प्रांत सिस्तान और बलूचिस्तान में अफगान प्रवासियों को हिरासत में लेने के लिए एक और कार्रवाई शुरू की। ईरानी सरकारी मीडिया ने रविवार को यह जानकारी दी ईरान की सरकारी चाबहार के पुलिस कमांडर मोहम्मद शबिक ने घोषणा की कि ईरानी बंदरगाह शहर में 123 अफगान नागरिकों को गिरफ्तार किया गया।

इससे पहले, अफगान सीमा के पास उत्तरी सिस्तान और बलूचिस्तान के एक जिले हिरमंद में अधिकारियों ने 152 अफगान प्रवासियों को गिरफ्तार किया था। प्रमुख अफगान मीडिया आउटलेट अमू टीवी की रिपोर्ट के अनुसार, ईरान में अफगान शरणार्थियों ने बार-बार ईरानी सरकार द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के कारण दुर्व्यवहार और चुनौतियों का सामना करने की घटनाओं की सूचना दी है। पिछले वर्ष कई घटनाएं सामने आईं जिनमें अनेक अफगान शरणार्थियों को ईरानी पुलिस अधिकारियों और नागरिकों द्वारा अपमानित और दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा। सोशल मीडिया पर ऐसे वीडियो वायरल हो रहे थे जिनमें ईरान में अफगान प्रवासियों को परेशान किया जा रहा है और साथ ही अफगान प्रवासी विरोधी नारे भी लगाए जा रहे हैं ईरानी सरकार ने अफगान शरणार्थियों पर कई कड़े प्रतिबंध लगा दिए हैं जिससे उनके लिए स्थिर आय अर्जित करना मुश्किल हो गया। ईरान में एक अफगान शरणार्थी ने कहा कि लोगों के बीच कोई अंतर नहीं है - वे सभी अफगान प्रवासियों को नापसंद करते हैं, और जब पुलिस उन्हें गिरफ्तार करती है, तो उन्हें बुरी तरह पीटती है। ईरान मानवाधिकार संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2024 में ईरान में 80 अफगान कैदियों को फांसी दी गई, यह संख्या 2023 से तीन गुना हो गई है। अफगान राजनीतिक विश्लेषक फजल-उर-रहमान ओरिया ने कहा कि दुर्भाग्य से, ईरान में रक्षाहीन और उत्पीड़ित अफगानों पर अत्याचार बढ़ रहे हैं। यह अफगानिस्तान के लोगों के लिए असहनीय है और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों और मानकों का भी उल्लंघन करता है।

■ ईरानी सरकार ने अफगान शरणार्थियों पर कई कड़े प्रतिबंध लगा दिए हैं, जिससे उनके लिए स्थिर आय अर्जित करना मुश्किल हो गया

कांगो संकट को लेकर सवालों के घेरे में रवांडा

लंदन, 25 फरवरी (एजेंसियां)। ब्रिटेन ने मंगलवार को कहा कि वह रवांडा को दी जाने वाली कुछ द्विपक्षीय सहायता रोक देगा और पड़ोसी कांगो के संकट में किगाली की भूमिका के कारण उस पर अन्य राजनयिक प्रतिबंध लगाएगा। रवांडा पर इस समय वैश्विक दबाव है। उस पर आरोप है कि वह एम23 समूह का समर्थन करता है, जिसने जनवरी से ही गोमा और बुकावु शहरों सहित पूर्वी कांगो के बड़े हिस्से और बहुमूल्य खनिज भंडारों पर कब्जा कर लिया है। किगाली ने इस एम23 समूह को समर्थन देने से इनकार किया है, लेकिन कहा कि उसके अपने सैनिक कांगो स्थित शत्रुतापूर्ण समूहों के खिलाफ आत्मरक्षा में कार्रवाई कर रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक ब्रिटिश सरकार की ओर से जारी एक बयान में कहा गया कि जब तक शत्रुता समाप्त करने में महत्वपूर्ण प्रगति नहीं हो जाती और कांगो क्षेत्र से सभी रवांडा रक्षा बलों की वापसी नहीं हो जाती, तब तक ब्रिटेन कार्रवाई करता रहेगा।

मेलबर्न में चाकू से हमला करने के आरोप में चार युवक गिरफ्तार

सिडनी, 25 फरवरी (एजेंसियां)। मेलबर्न के उत्तरी इलाके में तीन युवक पर चाकू से हमला किया गया। इसके बाद उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। पुलिस इस मामले में चार किशोरों को गिरफ्तार कर चुकी है। पुलिस ने मंगलवार को बताया कि सोमवार को शाम करीब 7:30 बजे ब्रॉडमेडोज़ (जो मध्य मेलबर्न से 15 किमी उत्तर है) के एक इलाके में एक रिटेल स्टोर की पार्किंग में झगड़ा हुआ और चाकू से हमला किया गया। घटनास्थल पर मौजूद पुलिस ने 40 और 18 साल के दो लोगों घायल अवस्था में पाया। दोनों को अस्पताल ले जाया गया, लेकिन उनकी हालत गंभीर थी। प्रत्यक्षदर्शियों ने पुलिस को बताया कि उन्होंने घटनास्थल से कुछ किशोरों को भागते हुए देखा। पुलिस की एयर ब्रांच को उस इलाके में भेजा गया, और उन्होंने समूह को एक घर में प्रवेश करते हुए देखा। जासूसों और महत्वपूर्ण घटना प्रतिक्रिया टीम के सदस्यों ने मौके पर पहुंचकर तीन 19 साल के और एक 18 साल के युवक को गिरफ्तार कर लिया, सभी युवक थे। समूह का पांचवां सदस्य, जो 14 साल का था। वो भी लड़ाई में घायल हो गया और उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया।

खजुराहो नृत्य महोत्सव 2025 ने बनाया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड

नई दिल्ली 25 फरवरी (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश के संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित खजुराहो नृत्य महोत्सव 2025 ने एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करते हुए सबसे लंबे भारतीय शास्त्रीय नृत्य मैराथन रिले के लिए गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है। गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स की आधिकारिक निर्णायक हनाने स्पियर्स ने इस रिकॉर्ड की पुष्टि की और मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को प्रमाणपत्र सौंपा। यह उपलब्धि मध्य प्रदेश सरकार के संस्कृति विभाग के नेतृत्व में संभव हुई, जिसमें संस्कृति विभाग के प्रमुख सचिव शिव शेखर शुक्ला का मार्गदर्शन और विश्व रिकॉर्ड योजना विशेषज्ञ निश्चल बारोट का महत्वपूर्ण योगदान रहा। निश्चल बारोट, जो भारत में कई गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड प्रयासों को सफलतापूर्वक अंजाम दे चुके हैं, ने इस सांस्कृतिक पहल के संचालन में अहम भूमिका निभाई और यह सुनिश्चित किया कि कार्यक्रम गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के सभी दिशानिर्देशों के अनुरूप हो।

इस ऐतिहासिक आयोजन में भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी और कुचिपुड़ी सहित भारत की विभिन्न शास्त्रीय नृत्य शैलियों का निरंतर प्रदर्शन किया गया। यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल खजुराहो के भव्य मंदिरों की पृष्ठभूमि में हुए इस आयोजन ने भारतीय शास्त्रीय नृत्य की समृद्ध परंपरा, साधना और उत्कृष्टता को उजागर किया।

आज का इतिहास

1994 – उत्तरी कोरिया अपने परमाणु संयंत्रों को अंतर्राष्ट्रीय निरीक्षण के लिए खोलने पर सहमत।

1995 – कॉपीराइट मुद्दे पर सं.रा. अमेरिका एवं चीन के मध्य समझौता।

1999 – पांच ग्रैमी अवार्ड जीतकर रैप गायिका लॉरिन हिल ने नया रिकार्ड बनाया।

2001 – क्रिकेट के महानतम खिलाड़ी सर डॉन ब्रैडमैन का निधन।

2002 – अफ़ग़ानिस्तान के अंतरिम प्रधानमंत्री हामिद करजई भारत की दो दिवसीय यात्रा पर नई दिल्ली पहुँचे।

2004 – मकदुनिया के राष्ट्रपति बेरिस ट्रेज कोवस्की की विमान दुर्घटना में मृत्यु।

2006 – परमाणु परिशोधन पर ईरान और रूस में समझौता।

2007 – नेपाल सरकार द्वारा नरेश की सम्पत्ति का राष्ट्रीयकरण करने की घोषणा।

2008 – रेलमंत्री लालू प्रसाद यादव ने वर्ष 2008-09 का रेल बजट संसद में पेश किया। भारत परमाणु अस्त्र ले जाने में सक्षम बैलेस्टिक मिसाइल का समुद्र के भीतर सफल परीक्षण किया। नेपाल में संविधान सभा के होने वाले चुनाव में माओवादी नेता प्रचंड ने अपना पर्चा भरा।

2009 – इलाहाबाद उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायधीश हेमन्त लक्ष्मण गोखले का स्थानान्तरण मद्रास उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायधीश के रूप में हुआ।

अभियान *गाजा में पोलियो वैक्सीन अभियान*

दो दिनों में 4,54,000 से अधिक बच्चों को पिलाई गई दवा

गाजा, 25 फरवरी (एजेंसियां)। फिलिस्तीन शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र एजेंसी ने बताया कि उसने पिछले दो दिनों में गाजा पट्टी में 454,000 से ज्यादा बच्चों को पोलियो वैक्सीन की खुराकें पिलाई हैं। नियर ईस्ट में फिलिस्तीन शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र राहत एवं कार्य एजेंसी (यूएनआरडब्ल्यूए) ने एक प्रेस वक्तव्य में कहा कि इस बड़े पैमाने के अभियान का उद्देश्य क्षेत्र में चल रही मानवीय चुनौतियों के बीच बच्चों को बीमारी के खतरों से बचाना है।

■ मेडिकल टीमों ने स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य अधिकारियों के साथ मिलकर 24 घंटे काम किया

यूएनआरडब्ल्यूए ने बच्चों के स्वास्थ्य की सुरक्षा और उनकी इम्युनिटी को मजबूत करने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को जाहिर किया। यूएन एजेंसी ने बताया कि उनकी मेडिकल टीमों ने स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य अधिकारियों के साथ मिलकर 24 घंटे काम किया, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वैक्सीन की खुराक सभी बच्चों तक पहुंचे सकें।

महामारी को रोकने में टीकाकरण के महत्व को बताते हुए यूएनआरडब्ल्यूए ने परिवारों से स्वास्थ्य टीमों के साथ सहयोग जारी रखने की अपील की, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हर बच्चे को वैक्सीन की खुराक मिले।

यह अभियान एजेंसी के बड़े स्वास्थ्य कार्यक्रम का हिस्सा है, जो गाजा और अन्य क्षेत्रों में फिलिस्तीनी शरणार्थियों को प्राथमिक और रोकथाम वाली चिकित्सा देखभाल प्रदान करता है। इजरायल द्वारा फिलिस्तीनी क्षेत्रों में हाल ही में यूएनआरडब्ल्यूए की गतिविधियों पर लगाए गए प्रतिबंध के बावजूद एजेंसी गाजा के लोगों को मानवीय सेवाएं देना जारी रखे हुए हैं। यूएनआरडब्ल्यूए के मीडिया सलाहकार अदनान अबू हस्ना ने कहा कि एजेंसी ने सभी चुनौतियों के बावजूद अपने मिशन को पूरा करने का ठान लिया है।

उन्होंने यूएनआरडब्ल्यूए को फिलिस्तीनी शरणार्थियों के लिए एक जीवन रेखा बताया, जो उन्हें जरूरी सेवाएं प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अक्टूबर 2024 में इजरायली संसद ने दो कानून बनाए। इनमें से एक कानून यूएनआरडब्लूए के गाजा और देश में काम करने पर प्रतिबंध लगाता है।

दूसरा कानून इजरायली अधिकारियों और एजेंसी के बीच किसी भी आधिकारिक संपर्क पर रोक लगाता है। समाचार एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, ये कानून जनवरी 2025 के अंत में लागू हुए।

दुनिया को जानें

पहली बार चीन का समुद्री आर्थिक उत्पादन 100 खरब युआन के पार

बीजिंग, 25 फरवरी (एजेंसियां)। चीनी प्राकृतिक संसाधन मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक, साल 2024 में चीन की समुद्री अर्थव्यवस्था ने मजबूती से विकास किया और इसका कुल आर्थिक उत्पादन पहली बार 100 खरब युआन के आंकड़े को पार कर गया। मंत्रालय के समुद्री रणनीतिक योजना और अर्थव्यवस्था विभाग ने '2024 चीनी समुद्री आर्थिक सांख्यिकीय विज्ञप्ति' जारी की, जिसमें बताया गया कि साल 2024 में चीन का कुल समुद्री उत्पादन मूल्य 105 खरब 43 अरब 80 करोड़ युआन तक पहुंच गया। यह 2023 की तुलना में 5.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है, जो इस क्षेत्र की मजबूत विकास गति को रेखांकित करता है। आंकड़ों के अनुसार, बीते वर्ष चीन के कुल समुद्री उत्पादन में समुद्री विनिर्माण के अतिरिक्त मूल्य का हिस्सा 30 प्रतिशत से अधिक था, जबकि समुद्री सेवा उद्योग के अतिरिक्त मूल्य का हिस्सा 59.6 प्रतिशत रहा। इसके साथ ही, समुद्री पर्यटन उद्योग में भी तेजी आई, खासतौर पर क्रूज पर्यटन की लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है। इसके अलावा, अपतटीय पवन ऊर्जा क्षेत्र भी तेजी से विस्तार कर रहा है।

प्रादेशिकी

गुलाब चंद कटारिया ने महाशिवरात्रि की दी बधाई

चंडीगढ़। पंजाब के राज्यपाल एवं चंडीगढ़ के प्रशासक गुलाब चंद कटारिया ने महाशिवरात्रि की पूर्व संध्या पर प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। श्री कटारिया ने अपने संदेश में कहा कि मैं भगवान शिव के सभी भक्तों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं और शुभेच्छा प्रेषित करता हूं। उनकी दिव्य कृपा सभी के जीवन में शांति, खुशी और समृद्धि लेकर आए। उन्होंने कहा कि महाशिवरात्रि का पावन उत्सव प्रार्थना, ध्यान और सद्कर्मों के लिए नई ऊर्जा प्राप्त करने का अवसर है। उन्होंने कहा कि आइए प्रार्थना करें कि हमारा जीवन उत्तम स्वास्थ्य, सद्विचारों और सत्कर्मों से आलोकित रहे।

टैक्सी के बाद बसों का किराया बढ़ाने की तैयारी सरकार कर रही प्रदेशवासियों से धोखा : जयराम

- डीजल, बिजली, पानी के बाद बसों के किराए से आम लोगों के जेब पर बोझ डालने की तैयारी

शिमला, 25 फरवरी (देशबन्धु)। शिमला से जारी बयान में नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने कहा कि सरकार ने टैक्सियों के किराए में पचास फीसदी की बढ़ोतरी कर दी है। यह फैसला आम आदमी के खिलाफ है, इसके बाद सरकार अब बसों के किराए में भी बढ़ोतरी करने की तैयारी कर ली है। इसका प्रस्ताव हाल ही संपन्न हुई निदेशक मंडल की बैठक में आ चुका है। एचआरटीसी आम आदमी की सवारी है। आम आदमी ही एचआरटीसी में सफर करता है। जब से नई सरकार सत्ता में आई है तब से हर दिन एचआरटीसी अपने जनविरोधी फैसलों की वजह से चर्चा में है। आए दिन सरकार की तरफ़ से कोई न कोई ऐसा फैसला लिया जा रहा है जो हिमाचल प्रदेश के आम लोगों के लिए हितकर नहीं है। सरकार प्रदेश के लोगों को किराए के बोझ से दबाने का काम कर रही है। इसलिए सरकार को यह फैसला वापस लेना चाहिए।

नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि अखबारों में छपी खबर के अनुसार 'एचआरटीसी के निदेशक मंडल की बीते शनिवार शिमला में हुई बैठक में निर्णय लिया गया है कि बसों के न्यूनतम किराया पांच रुपये से दोगुना यानी 10 रुपये किया जाएगा। इसके अतिरिक्त प्रति किलोमीटर किराये में भी 15 प्रतिशत तक वृद्धि की मांग की जाएगी। यह प्रस्ताव तैयार कर जल्द ही स्वीकृति के लिए सरकार को भेजा जाएगा। इसी तरह का प्रस्ताव एचआरटीसी की टैक्सी के लिए भी लिया गया था और आज सरकार ने इसे लागू कर दिया है।

सरकार का यह निर्णय बहुत निराशाजनक है। सुक्खू सरकार सत्ता में आने के बाद से ही जनविरोधी निर्णय ले रही है। कभी कूकर का किराया वसूलती है तो कभी हीटर और दवाई के बैग का। एचआरटीसी की फ्रेट पॉलिसी की पहले ही आलोचना हो चुकी है। जयराम ठाकुर ने कहा कि सुक्खू सरकार सत्ता में आने के बाद ही पहले डीजल का दाम बढ़ाकर आम आदमी के लिए मुश्किलें खड़ी करनी शुरू कर दी। डीजल के दाम पर बहुत चीजें निर्भर करती हैं, महंगाई पर यह सीधा असर डालती हैं। लेकिन सत्ता में आने और आपदा के दौरान दो बार में डीजल पर छह रुपए का वैट बढ़ा चुकी है। जिसका असर प्रदेश के आम लोगों पर पड़ा है। प्रदेश सरकार ने सत्ता में आने के बाद से जनता के खिलाफ काम कर रही है। डीजल के अलावा, बिजली और पानी की कीमतों में भी बेतहाशा वृद्धि की है, जिससे आम आदमी का जीवन दुश्वार हुआ है। अब सरकार बसों का किराया बढ़ाने की योजना बना रही है जो प्रदेश के लोगों के लिए किसी भी हाल में सही नहीं है। सरकार के प्रस्ताव से प्रदेश के हर परिवार पर हजारों रुपए का बोझ पड़ेगा। इसलिए सरकार एचआरटीसी को प्रदेश के लोगों को परेशान करने का साधन बनाने की बजाय लोक कल्याण का साधन बनाए। मेरा सरकार से आग्रह है कि वह टैक्सी के बढ़े हुए किराए वापस ले और बसों का किराया बढ़ाने का विचार छोड़े।

पौड़ी में सीएम धामी ने किया शहीद मेले का शुभारंभ, वीर सपूतों को दी श्रद्धांजलि

पौड़ी, 25 फरवरी (देशबन्धु)। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने पौड़ी के शहीद मेला स्थल दुगड्डा में तीन दिवसीय श्शहीद मेलेश् का शुभारंभ किया। यमकेश्वर विधानसभा क्षेत्र के दुगड्डा में हर साल शहीद मेला अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद और उनके सहयोगी क्रांतिकारी भवानी सिंह रावत की स्मृति में आयोजित किया जाता है। 25 फरवरी को सीएम धामी हेलीकॉप्टर से पौड़ी जिले के डांडामंडी हेलीपैड पर पहुंचे। जहां विधायक रेनू बिष्ट, डीएम आशीष चौहान, एसएसपी लोकेश्वर सिंह और भाजपा पदाधिकारियों ने उनका स्वागत किया। इसके बाद सीएम धामी ने सबसे पहले अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद, बलदेव सिंह आर्य और भवानी सिंह रावत की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित की। वहीं इसके बाद सीएम धामी ने दुगड्डा श्शहीद मेले का शुभारंभ किया। मेले के उद्घाटन के बाद सीएम धामी ने जनता को संबोधित किया। उन्होंने आगे कहा, उत्तराखंड की पवित्र भूमि, वीरों की भूमि रही है। ये देवभूमि के साथ वीरभूमि भी है। चाहे वो स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई हो, या चाहे वो देश की

मुख्यमंत्री सुक्खू ने सपरिवार किया पावन संगम में स्नान

- उद्योगपतियों और श्रद्धालुओं ने लगाई डुबकी
- ओडिशा के राज्यपाल हरि बाबू कंभमपति ने भी किया स्नान

महाकुंभ नगर, 25 फरवरी (देशबन्धु)। संगम तट पर श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा है, जहां आमजन से लेकर राजनेता, उद्योगपति और फिल्मी सितारे तक पुण्य अर्जित करने पहुंच रहे हैं। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू, ओडिशा के राज्यपाल हरि बाबू कंभमपति, रिलायंस इंडस्ट्रीज की ईशा अंबानी, अभिनेत्री रवीना टंडन और कई अन्य गणमान्य लोगों ने आस्था की डुबकी लगाई।महाशिवरात्रि से पहले संगम तट पर उमड़ी भीड़, भक्तों के अटूट विश्वास और दिव्यता की झलक बयां कर रही है।

हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने अपने परिवार संग त्रिवेणी संगम में आस्था की डुबकी लगाई। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि मैंने देश और प्रदेश की शांति के लिए प्रार्थना की है। उनकी पत्नी कमलेश ठाकुर ने कहा कि यह हमारे हिंदू धर्म का संगम है, यहां आकर बहुत अच्छा लगा।

ओडिशा के राज्यपाल डॉ. हरि बाबू कंभमपति ने भी त्रिवेणी संगम में डुबकी लगाई। उन्होंने कहा कि यह एक अद्भुत अनुभव है और यूपी सरकार ने बहुत अच्छी व्यवस्थाएं की हैं।

झारखंड मुक्ति मोर्चा की नेता महुआ माझी ने भी त्रिवेणी संगम में स्नान किया और कहा कि यह आस्था का पर्व है... हम आज आए हैं क्योंकि कल महाशिवरात्रि है और भीड़ बहुत बढ़ जाएगी। व्यवस्थाएं अच्छी हैं और इतने बड़े जनसमूह को संभालना एक बड़ी जिम्मेदारी है। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी ने भी धर्म, अध्यात्म, आस्था एवं संस्कृति के महासमागम महाकुम्भ में सपरिवार सम्मिलित होते हुए आस्था की डुबकी लगाई। जप, तप एवं साधना की पुण्य स्थली तीर्थराज प्रयाग में उत्तर प्रदेश सरकार के औद्योगिक विकास मंत्री नन्द गोपाल गुप्ता नन्दी ने प्रदेश अध्यक्ष को कुम्भ कलश भेंट कर उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन किया।

सार संक्षेप

मां धारी देवी के चित्र वाले विशेष डाक लिफाफों का अनावरण

देहरादून। डाक विभाग ने नगर क्षेत्र में धारी देवी विशेष आवरण के कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर पौड़ी जनपद के उन कर्मचारियों को भी सम्मानित किया गया, जिन्होंने इस वर्ष विभाग की आय बढ़ाने में उत्कृष्ट योगदान दिया। ऐसा पहली बार हुआ जब मां धारी देवी मंदिर को डाक विभाग ने लिफाफों के आवरण पर

जगह दी है। डाक निदेशक अनुसूया प्रसाद चमोला, महापौर आरती भंडारी और धारी देवी मंदिर समिति के पुजारियों ने संयुक्त रूप से धारी देवी मंदिर के विशेष डाक आवरण का अनावरण किया। निदेशक चमोला ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि धारी देवी मंदिर एक महत्वपूर्ण सिद्धपीठ है। इसे जन-जन तक पहुंचाने के लिए डाक विभाग ने 2000 विशेष डाक आवरण जारी किए हैं। उन्होंने डाक सेवकों से विभाग की योजनाओं को सुदूरवर्ती क्षेत्रों तक पहुंचाने की अपील की। महापौर आरती भंडारी ने कहा कि धारी देवी विशेष आवरण का विमोचन क्षेत्र के लिए एक सुखद संदेश है। इससे न सिर्फ स्थानीय लोगों को लाभ मिलेगा, बल्कि देश-विदेश में भी मां धारी देवी की पहचान और भी व्यापक होगी।

कांगड़ाः लापता कांस्टेबल का शव झाड़ियों से बरामद

शिमला। हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा जिला के सकोह से लापता कांस्टेबल का शव पुलिस ने मंगलवार को बटालियन के पास झाड़ियों से बरामद किया है। कांस्टेबल हरीश शर्मा ऊना जिले के खरोह पंचायत चिंतपूर्णी से थे। वह सेकंड आईआरबीएन सकोह बटालियन में तैनात थे और 21 फरवरी की शाम से लापता थे। पुलिस अधीक्षक कांगड़ा शालिनी अग्निहोत्री ने बताया कि शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और मामले की गहन जांच की जा रही है।

दलित छात्रा के साथ बलात्कार के आरोप में शिक्षक दोषी करार

हिसार। हरियाणा में हिसार जिले की एक विशेष अदालत ने मंगलवार को एक सरकारी स्कूल के ड्राइंग अध्यापक को अपनी एक दलित छात्रा को बंधक बनाने, उसके साथ बलात्कार करने के मामले में दोषी करार दिया। महिलाओं के विरुद्ध अपराधों के मामलों के लिए स्थापित विशेष अदालत के न्यायाधीश सुनील जिंदल ने यह फैसला सुनाया। इस मामले में सज़ा का निर्णय 28 फरवरी को किया जाएगा। पीड़ित पक्ष के अधिवक्ता रजत कल्सन ने बताया कि पीड़िता नौवीं कक्षा की छात्रा थी।

सुडोकू 6837 का हल

2	8	3	9	7	1	4	5	6
5	4	9	6	2	8	1	7	3
7	6	1	5	4	3	2	9	8
9	3	8	4	1	2	5	6	7
4	1	7	3	6	5	8	2	9
6	5	2	8	9	7	3	4	1
1	9	4	2	8	6	7	3	5
8	2	5	7	3	9	6	1	4
3	7	6	1	5	4	9	8	2

उत्तराखण्ड राज्य प्राकृतिक आपदाओं के दृष्टिगत एक संवेदनशील राज्यः गुरमीत सिंह

राज्यपाल व मुख्यमंत्री ने किया कॉफी टेबल बुक और डैशबोर्ड का लोकार्पण

देहरादून, 25 फरवरी (देशबन्धु)। राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से नि) और मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने राजभवन में राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की बनाई गई कॉफी टेबल बुक व यूएसडीएमए के डैशबोर्ड का लोकार्पण किया।

मंगलवार को राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से नि) और मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने राजभवन में राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की बनाई गई कॉफी टेबल बुक 'श्री केदारनाथ जी क्षेत्र में आपदा प्रबंधन पर एक और प्रयास' का विमोचन और यूएसडीएमए के डैशबोर्ड का लोकार्पण किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि उत्तराखण्ड राज्य प्राकृतिक आपदाओं के दृष्टिगत एक संवेदनशील राज्य है। भौगोलिक और पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण यहां भूस्खलन, बाढ़, बादल फटना, भूकंप जैसी आपदाएं समयकृसमय पर आती रहती हैं। इन आपदाओं से निपटना हमारे लिए एक बड़ी चुनौती रहती है। उन्होंने कहा कि 31 जुलाई 2024 को श्री केदारनाथ क्षेत्र में आई आपदा एक बड़ी चुनौती बनकर सामने आई थी। इस कठिन परिस्थिति में उत्तराखण्ड राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (यूएसडीएमए) ने सभी रेखीय विभागों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए त्वरित राहत एवं बचाव कार्य किए।

मौसम विभाग की चेतावनी के चलते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का उत्तरकाशी दौरा स्थगित

- अब मार्च में आने की जताई जा रही संभावनाएं
- जिला प्रशासन ने कर ली थी तैयारियां पूरी
- 6 मार्च का माना जा रहा है पीएम का प्रस्तावित दौरा

■ अमरनाथ तिवारी

देहरादून, 25 फरवरी (देशबन्धु)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का उत्तरकाशी दौरा जिला प्रशासन ने स्थगित कर दिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 27 फरवरी को उत्तरकाशी में शीतकालीन यात्रा में शामिल होने आ रहे थे। लेकिन मौसम विभाग ने बर्फबारी और येलो अलर्ट को देखते हुए प्रधानमंत्री का दौरा स्थगित करना पड़ा है। अब पीएम नरेंद्र मोदी मार्च में आ सकते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दौरे को लेकर जिला प्रशासन और सरकार ने पूरी तैयारी कर ली थी। मंदिर और प्रधानमंत्री के आने-जाने वाले मार्ग को पूरी तरह दुरुस्त किया गया था। वहीं जनसभा के लिए भी पूरी तैयारी कर ली गई थी। लेकिन मौसम विभाग की चेतावनी के बाद जिला प्रशासन ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का दौरा फिलहाल स्थगित करके अगले महीने 6 मार्च को पीएम का दौरा प्रस्तावित रखा है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी और गढ़वाल कमिश्नर विनय शंकर पांडे लगातार प्रधानमंत्री के इस दौर की तैयारी की समीक्षा भी कर रहे थे। अभी तक 36 हजार से अधिक श्रद्धालु इस बार शीतकालीन यात्रा पर पहुंच चुके हैं। ऐसे में प्रधानमंत्री अगर मार्च महीने में भी उत्तरकाशी यानी शीतकालीन यात्रा के दौरे पर आते हैं तो एक नया संदेश और बेहतर संदेश उत्तराखंड की इस यात्रा से देश-विदेश में जाएगा। बता दें कि, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ये दौरा कई मायनों में खास माना जा रहा है।

क्या बोले गढ़वाल कमिश्नर

फिलहाल मौसम की वजह से प्रधानमंत्री का दौरा स्थगित हुआ है। हम जल्द ही दौरे की नई तारीख तय करेंगे। हालांकि अभी संभावना यही है कि अगले महीने 6 मार्च को प्रधानमंत्री मोदी उत्तरकाशी दौरे पर आ सकते हैं। प्रधानमंत्री मोदी के द्वारा शीतकालीन यात्रा को बढ़ावा देने के लिए यह दौरा प्रस्तावित है।
- विनय शंकर पांडे, गढ़वाल कमिश्नर

डीएम ने कस्तूरबा नवोदय विद्यालय त्यूनी का किया निरीक्षण

विद्यालय में उपकरण फर्नीचर आदि जो भी कमी है सभी आवश्यकताओं की पूर्ति की जाएगी : जिलाधिकारी

देहरादून, 25 फरवरी (देशबन्धु)। जिलाधिकारी सविन बंसल ने त्यूनी भ्रमण के दौरान कस्तूरबा गांधी बालिका छात्रावास का निरीक्षण करते हुए व्यवस्थाओं का जायजा लिया। मंगलवार को यहां जिलाधिकारी सविन बंसल ने त्यूनी भ्रमण के दौरान कस्तूरबा गांधी बालिका छात्रावास का निरीक्षण करते हुए व्यवस्थाओं का जायजा लिया। डीएम के निरीक्षण से जहां विद्यालय को कई सौगात मिली, वही विद्यालय की बालिकाओं ने डीएम को अपने बीच पाकर प्रसन्नता व्यक्त की। स्कूल में दसवीं कक्षा के बाद विज्ञान वर्ग में बायो तथा कॉमर्स न होने पर दसवीं के बाद इन विषयों हेतु विद्यार्थियों को शहर में दूर के स्कूलों में जाना पड़ता है जिस पर जिलाधिकारी ने संज्ञान लेते हुए मुख्य शिक्षा अधिकारी को निर्देशित किया कि उनकी ओर से सीबीएससी को प्रस्ताव बनाएं। जिलाधिकारी ने विद्यालय के अध्यापकों से पूछा कि उनको उपकरण फर्नीचर आदि जो भी कमी है वह बताएं सभी आवश्यकताओं की पूर्ति की जाएगी। अध्यापिकाओं ने बताया की विद्यालय में 150 बालिकाएं हैं जबकि 50 स्टडी टेबल है, जिस पर डीएम ने 100 स्टडी टेबल मौके पर ही स्वीकृत की। वही स्कूल की भजन माता की सुविधा के लिए रोटी मेकर मशीन लगाने की भी निर्देश दिए इसके लिए बजट का प्रावधान किया। जिलाधिकारी ने निर्देश दिए की स्कूल की लाइब्रेरी को स्मार्ट बनाने के निर्देश दिए, स्कूल लाइब्रेरी में एटलस, डिक्शनरी, कंपटीशन की मैगजीन, महापुरुषों की जीवनी अंग्रेजी समाचार पत्र आदि ज्ञानवर्धक पुस्तक रखने की भी निर्देश दिए। स्कूलों में खेल अवस्थाना सुविधा विकसित करने तथा स्कूल में योग टीचर कंप्यूटर टीचर तथा कराटे कोच रखने की भी स्वीकृति दी। वही बालिकाओं की सुरक्षा हेतु तीन

जिलाधिकारी ने जनपद रिवर ड्रेजिंग कार्यों की ली समीक्षा बैठक

आपदा संभावित क्षेत्रों में शीघ्र रिवर ड्रेजिंग करवाने के दिए निर्देश

चमोली, 25 फरवरी (देशबन्धु)। जिलाधिकारी संदीप तिवारी ने चमोली में रिवर ड्रेजिंग कार्यों की समीक्षा बैठक ली। इस दौरान चमोली जनपद में रिवर ड्रेजिंग के लिए चयनित स्थानों को लेकर चर्चा की गई। मंगलवार को यहां जिलाधिकारी संदीप तिवारी ने चमोली में रिवर ड्रेजिंग कार्यों की समीक्षा बैठक ली। इस दौरान चमोली जनपद में रिवर ड्रेजिंग के लिए चयनित स्थानों को लेकर चर्चा की गई। जिलाधिकारी ने बैठक में आपदा प्रबधंन अधिकारी व सिंचाई विभाग के अधिशासी अभियंता को आपदा का प्रभाव कम करने के लिये आपदा संभावित क्षेत्रों में रिवर ड्रेजिंग की आवश्यकता वाले स्थल चयनित करने के निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने चयनित आपदा संभावित क्षेत्रों में आवश्यक कार्रवाई पूर्ण कर शीघ्र रिवर ड्रेजिंग कार्य करवाने के भी निर्देश दिए। इस दौरान जिलाधिकारी ने बैठक से अनुपस्थित अधिकारियों के वेतन रोकने के साथ कड़ी कारवाई करने के आदेश दिए। उन्होंने रिवर ड्रेजिंग समीक्षा बैठक को आगामी गुरुवार को पुनः आयोजित करने व सभी संबंधित अधिकारियों को बैठक में भौतिक रूप से उपस्थित होने के आदेश दिए। बैठक में खनन अधिकारी अकिंत चंद ने बताया कि चमोली जनपद में कुल 21 स्थान रिवर ड्रेजिंग के लिए चयनित किए गए है। जिनसे एक करोड़ से अधिक के राजस्व की प्राप्ति का अनुमान है। बताया कि चमोली तहसील के अन्तर्गत जहां 6 स्थान रिवर ड्रेजिंग के लिए चयनित किए गए हैं। वहीं नंदानगर में 1, जोशीमठ 4, थराली में 6, कर्णप्रयाग में 2 और नंदप्रयाग में 2 स्थान चिन्हित किए गए है।

- चमोली जनपद में कुल 21 स्थान रिवर ड्रेजिंग के लिए चयनित किए गए

महाशिवरात्रि के अवसर पर टपकेश्वर महादेव मंदिर रुद्राभिषेक संपन्न

देहरादून, 25 फरवरी (देशबन्धु)। महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर टपकेश्वर महादेव मंदिर में महंत दिगंबर भरत गिरी महाराज के सान्निध्य में रुद्राभिषेक संपन्न हुआ। मंगलवार को यहां महाशिवरात्रि के पावन अवसर से पूर्व टपकेश्वर महादेव, सेवादल, संरक्षक लाल चंद शर्मा ने टपकेश्वर महादेव मंदिर में जाकर भोलेनाथ का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस शुभ अवसर पर पूज्य महंत दिगंबर भरत गिरी महाराज के सान्निध्य में रुद्राभिषेक संपन्न हुआ, जिसमें श्रद्धालुओं ने हर्षोल्लास के साथ भाग लिया। इसके उपरांत नए ध्वज को पूरे विधि-विधान के साथ मंदिर शिखर पर चढ़ाया गया, जिससे समस्त क्षेत्र में आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार हुआ। इस पावन अवसर पर महंत श्री कृष्ण गिरी जी महाराज ने कहा कि शिव अनादि और अनंत हैं। महादेव की कृपा मात्र से जीवन में सुख, शांति और समृद्धि का संचार होता है। महाशिवरात्रि का पर्व आत्मशुद्धि, साधना और शिव तत्व की अनुभूति का पर्व है। टपकेश्वर महादेव मंदिर में किया गया यह धार्मिक अनुष्ठान जनकल्याण और विश्व शांति के लिए एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक यज्ञ है। इस दौरान लाल चंद शर्मा ने कहा ध्वज सनातन परंपरा का प्रतीक है, जो धर्म, शक्ति और चेतना का प्रतिनिधित्व करता है। जब किसी मंदिर के शिखर पर नवीन ध्वज स्थापित किया जाता है, तो यह वहां प्रवाहित सकारात्मक ऊर्जा को और अधिक प्रबल बनाता है। महंत श्री दिगंबर भरत गिरी जी महाराज ने विधिवत मंत्रोच्चार के साथ यह धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न कराया, जिससे समस्त भक्तगण स्वयं को सौभाग्यशाली मान रहे थे।

महाशिवरात्रि के लिए लगा दून के टपकेश्वर में भव्य मेला

देहरादून। महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर उत्तराखंड के शिव मंदिरों में भक्तों का भारी सैलाब उमड़ने की उम्मीद है। महाशिवरात्रि के एक दिन पूर्व से ही राजधानी देहरादून स्थित प्राचीन टपकेश्वर महादेव मंदिर में भक्तों का जमावड़ा देखने को मिल रहा है। हर साल शिवरात्रि के अवसर पर इस मंदिर में विशेष पूजा-अर्चना और भव्य मेले का आयोजन किया जाता है। यह मेला पूरे 10 दिनों तक चलेगा। इस दौरान टपकेश्वर मंदिर में देश-विदेश से आए श्रद्धालु भगवान भोलेनाथ के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। आचार्य बिपिन जोशी बताते हैं कि टपकेश्वर महादेव मंदिर सदियों से आस्था का प्रमुख केंद्र बना हुआ है। पौराणिक मान्यता के अनुसार, यह वही स्थान है जहां भगवान शिव ने ऋषि दुर्वासा के शिष्य अश्वत्थामा को दर्शन दिए थे।

महिलाओं की बैठकी होली ने मचाया धमाल स्वांग रचाकर महिला होलियारों ने जमाई महफिल

हल्द्वानी, 25 फरवरी (देशबन्धु)। पूरी दुनियां में भले ही 15 मार्च को होली का पर्व मनाया जाएगा। लेकिन उससे पहले कुमाऊं मंडल में जगह-जगह होली की धूम देखने को मिल रही है। हल्द्वानी में महिलाओं और पुरुषों की बैठक होली का गायन चल रहा है। बैठकी होली में महिलाओं ने स्वांग रचाया और जमकर होली खेल. इस दौरान महिलाओं ने सिद्धि करो महाराज होलिन के दिन मे गणपति गौरी महेश मनाऊ इन संग पूजो आज समेत कई अन्य होलियां प्रस्तुत कर लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

शहर में महिला होल्यारों की टोली पारंपरिक ढोल दमाऊ की थाप पर होली गायन कर रही हैं। होली गायन का आयोजन शिखर सांस्कृतिक विकास समिति की ओर से जगदंबा वैंकेट हाल में किया गया। महिला होल्यारों ने होली गीतों से ऐसा समा बांधा की लोग मंत्रमुग्ध हो गए। होली गायन के साथ विभिन्न प्रतियोगिताएं में भी महिलाओं ने भाग लिया। महिलाएं एक दूसरे को अबीर-गुलाल लगाकर होली की बधाई दी। महिला होलियारों ने बताया कि होली महोत्सव कराने का मकसद है कि पहाड़ की महिलाओं को अपनी संस्कृति और कला को लोगों तक पहुंचाना है।

- महिला होल्यारों ने होली गीतों से ऐसा समा बांधा की लोग मंत्रमुग्ध हो गए

प्रादेशिकी

भाजपा वाले पीडीए का उड़ाते हैं मजाक : चंद्रपाल सिंह यादव

फर्रुखाबाद,25 फरवरी (देशबन्धु)। समाजवादी पार्टी महिला सभा की पीडीए की बैठक मसेनी चौराहे स्थित समाजवादी महिला सभा की जिला अध्यक्ष सुलक्षणा सिंह द्वारा आयोजित की गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर पधारे जिला अध्यक्ष चंद्रपाल सिंह यादव एवं पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष दमयंती सिंह ने भारतीय जनता पार्टी पर जमकर निशाना साधते हुए कहा कि भाजपा वाले पीडीए का मजाक उड़ाते हैं। उन्होंने आगे कहा कि आज भाजपा के राज में हर आदमी परेशान है, हर वर्ग परेशान है जिसे ना तो रोजगार मिलना है ना ही सरकारी अस्पतालों में उसे सही इलाज मिल पा रहा है। यह भी कहा कि भाजपा वाले नेताजी स्व मुलायम सिंह यादव के ऊपर भी टिप्पणी करते हैं, सोचिए यह क्या पीडीए को सम्मान देंगे। दमयंती सिंह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी पीडीए के पूरे समाज को गुमराह कर रही है।

सपा का रवैया अलोकतांत्रिक : योगी

■ महाकुंभ के आयोजन पर किए जा रहे दुष्प्रचार पर विपक्ष को घेरा

लखनऊ, 25 फरवरी (देशबन्धु)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपनी सरकार की उपलब्धियों का बखान करते हुए कहा कि समाजवादी पार्टी (सपा) ने राजनीतिक स्वार्थ के लिए सिर्फ लोगों को बांटने का काम किया है। बजट सत्र के छठवें दिन विधान परिषद में राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर अपने संबोधन में उन्होंने महाकुंभ के आयोजन पर किए जा रहे दुष्प्रचार व राज्यपाल के अभिभाषण पर किए गए व्यवहार पर कहा कि विपक्ष का व्यवहार किसी भी आदर्श लोकतंत्र को स्वीकार नहीं होगा। महाकुम्भ दुनिया में अबतक हुए सभी आयोजनों के रिकॉर्ड को तोड़ रहा है। प्रयागराज महाकुंभ ने प्रदेश में नए पंच तीर्थ को जोड़ा है, जिसके माध्यम से श्रद्धालु अयोध्या, काशी, गोरखपुर, मथुरा दर्शन करने लिए पहुंच रहे हैं। योगी ने कहा कि राज्यपाल एक संवैधानिक पद है और अपने संवैधानिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने के लिए ही वर्ष के शुरुआत में पहले सत्र में उनके द्वारा दोनों सदनों को एक साथ संबोधित किया जाता है। लोकतंत्र संवाद पर आधारित होता है, यह आवश्यक नहीं कि सभी लोग एक-दूसरे से सहमत हों, लेकिन मर्यादा और शालीनता का पालन करना सभी की जिम्मेदारी है। राज्यपाल जैसे संवैधानिक पद के प्रति जिस प्रकार की अशोभनीय भाषा और नारेबाजी का प्रयोग किया गया, वह लोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ है। मुख्यमंत्री ने आंकड़ों का हवाला देते हुए बताया कि अब तक 64 करोड़ श्रद्धालु इस दिव्य आयोजन में शामिल हो चुके हैं, जो कि विश्व के किसी भी धार्मिक आयोजन में शामिल होने वाले लोगों की संख्या से कहीं अधिक है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश आज एक नए युग की ओर बढ़ रहा है, जहां अयोध्या, काशी, मथुरा-वृंदावन, गोरखपुर और प्रयागराज तीर्थाटन के नए केंद्र बन चुके हैं। प्रयागराज महाकुंभ ने इन धार्मिक स्थलों को पंच तीर्थ के रूप में जोड़ दिया है। योगी ने कहा कि महान कार्यों के प्रति समाज का रवैया तीन चरणों से गुजरता है उपहास, विरोध और अंततः स्वीकृति। यही हाल राम मंदिर निर्माण और महाकुंभ आयोजन के दौरान भी देखने को मिला। पहले विपक्ष ने तंज कसे, फिर विरोध किया, लेकिन अंततः वे भी इसी आस्था में समर्पित हो गए। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वयं संगम में स्नान कर आए, और नेता प्रतिपक्ष ने खुद को पहले सनातनी बताया, बाद में समाजवादी। यह उनकी स्वीकृति का प्रमाण है।

समाजवादी पार्टी ने राजनीतिक स्वार्थ के लिए सिर्फ लोगों को बांटने का काम किया है : योगी आदित्यनाथ

प्रदेश में कई कॉरिडोर का किया गया निर्माण

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रदेश में कई कॉरिडोर का निर्माण किया गया है। इसमें एक कॉरिडोर प्रयागराज से मां विंध्यवासिनी धाम होते हुए काशी तक के लिए जाता है। वहीं दूसरा कॉरिडोर गोरखपुर के आसपास के क्षेत्र में तैयार हुआ है। इसके अलावा अयोध्या के आसपास के क्षेत्र में तैयार हुआ है। वहीं लखनऊ और नैमिषारण्य के आसपास के क्षेत्र में तैयार हुआ है। मथुरा-वृंदावन के आसपास के क्षेत्र में भी तैयार हुआ है, जहां आ करके देश और दुनिया भर के लाखों श्रद्धालु दर्शन का लाभ ले रहे हैं। वह अपने साथ उत्तर प्रदेश की एक अच्छी धारण लेकर जा रहे हैं। यह वही उत्तर प्रदेश है, जहां के लोग पहले अपनी पहचान को छुपाते थे। प्रदेशवासियों के सामने अपनी पहचान का संकट खत्म हो गया है। आज उत्तर प्रदेश का परसेप्शन बेहतर हुआ है और महाकुंभ ने उसको एक नई ऊंचाई दी है।

महाकुंभ नगर में श्रीअन्न की महत्ता पर दिया जोर

■ किसानों को मृदा स्वास्थ्य सुधार के सुझाव

महाकुंभ नगर, 25 फरवरी (देशबन्धु)। महाकुंभ नगर के सेक्टर-9 (निकट कलश द्वार) में आयोजित 05 दिवसीय विराट किसान मेला-2025 के चतुर्थ दिवस पर कृषकों को जागरूक करने के उद्देश्य से विशेष सत्र आयोजित किया गया। इस दौरान 500 से अधिक कृषकों, स्टाल संचालकों एवं कृषि विभाग के सभी अनुभागों के अधिकारियों ने सहभागिता की। कार्यक्रम में डा. मीनाक्षी सक्सेना, गृह वैज्ञानिक, केवीके कौशाम्बी ने श्रीअन्न (मिलेट्स) की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि ज्वार, बाजरा, मक्का, रागी, ककुनी एवं कोदो जैसे मोटे अनाज पोषण से भरपूर होते हैं और इनके सेवन से स्वास्थ्य लाभ होता है। उन्होंने बताया कि श्रीअन्न में चावल व गेहूं की तुलना में 5 गुना अधिक पोषक तत्व होते हैं तथा फाइबर की मात्रा 2 से 12 प्रतिशत तक होती है, जो शरीर के लिए अत्यंत लाभकारी है। इनके सेवन से कैंसर और किडनी रोग जैसी गंभीर बीमारियों से बचाव संभव है। डा. शिवेन्द्र प्रताप सोनकर, वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केंद्र जौनपुर ने मृदा स्वास्थ्य के महत्व पर जोर देते हुए किसानों को सलाह दी कि खेतों में अंधाधुंध उर्वरकों का प्रयोग न करें, बल्कि पहले मृदा परीक्षण कराएं। उन्होंने फसल अवशेषों को जलाने की बजाय बायोवेस्ट डिकम्पोजर से अपघटित करने की विधि अपनाने का सुझाव दिया, जिससे मृदा की उर्वरता बढ़ाई जा सकती है। उन्होंने किसानों को विविधीकृत खेती अपनाने की सलाह देते हुए सूरन, हल्दी और ड्रैगन फ्रूट जैसी फसलों की ओर भी ध्यान देने का सुझाव दिया।

करोड़ों भक्तों का स्नान करना अद्भुत अनुभव : केतकी सिंह शास्त्री

■ महाशिवरात्रि पर एमपीएस ग्रुप में प्रसाद वितरण

■ शिक्षकगणों एवं कर्मचारियों की रही उपस्थिति

मेरठ,25 फरवरी (देशबन्धु)। मेरठ पब्लिक स्कूल समूह की प्रबंध समिति के सदस्यों संस्थापिका कुसुम शास्त्री निदेशक विक्रमजीत सिंह शास्त्री एवं निदेशिका केतकी सिंह शास्त्री द्वारा 144 वर्षों के उपरांत पड़ने वाले अद्भुत अवसर महाकुंभ गंगा, जमुना, सरस्वती त्रिवेणी के पवित्र जल में स्नान कर संगम त्रिवेणी से जल लाकर महाशिवरात्रि के इस अत्यंत पवित्र अवसर पर महादेव को समर्पित करते हुए पवित्र जल एवं प्रसाद का वितरण सभी शिक्षकगणों एवं विद्यालय समूह के अन्य सभी कर्मचारियों के मध्य किया गया। विद्यालय संस्थापिका कुसुम शास्त्री, निदेशक विक्रमजीत सिंह शास्त्री एवं केतकी सिंह शास्त्री ने कहा कि आध्यात्मिक सांस्कृतिक विरासत एवं मानवीय संबंधों के इस अद्वितीय संगम के अवसर पर त्रिवेणी में करोड़ों भक्तों के साथ पवित्र जल में स्नान करना एक अविस्मरणीय एवं अद्भुत अनुभव रहा। जिसकी तुलना अन्य किसी धार्मिक कृत्य से नहीं की जा सकती है। इस अवसर पर विद्यालय की प्रबंध समिति के सभी सदस्यों ने स्वयं उपस्थित रहकर सभी को पूर्ण श्रद्धा एवं आस्था के साथ प्रसाद एवं जल वितरण कर समस्त विद्यालय समूह को एक परिवार की तरह एकजुट रहने का संदेश दिया एवं शिवरात्रि की पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं दीं।

चोरी की घटना दर्ज न करने पर कार्यकर्ताओं ने घेरा थाना

किठौर,25 फरवरी (देशबन्धु)। भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) के कार्यकर्ताओं ने मंगलवार शाम किठौर थाने का घेराव कर दिया। आरोप था कि पुलिस ने किसान ट्यूबवेल चोरी, कृषि यंत्र चोरी जैसे के मुकदमें दर्ज न करने और कार्यकर्ता के साथ अभद्र व्यवहार किया। लगभग ढाई घंटा चले धरने को सीओ द्वारा दस दिन में सभी समस्याओं के निस्तारण के आश्वासन पर धरना समाप्त हुआ। भारतीय किसान यूनियन जिलाध्यक्ष अनुराग चौधरी के नेतृत्व में भारी संख्या में किसान और कार्यकर्ता ट्रैक्टर-ट्रॉली द्वारा किठौर कोतवाली में पहुंचे और ट्यूबवेल चोरी, कृषि यंत्र चोरी किसान के साथ अभद्र व्यवहार आदि समस्याओं को लेकर धरना प्रदर्शन करते हुए नारेबाजी शुरू कर दी। इसी दौरान पुलिस क्षेत्राधिकारी किठौर प्रमोद गौतम और थाना ब्रजेश कुमार पांडेय किसानों के बीच बैठ गए। अनुराग चौधरी ने बताया कि थाने में ट्यूबवेल चोरी, कृषि यंत्र चोरी की रिपोर्ट दर्ज नहीं हो रही बल्कि किसानों के साथ अभद्र व्यवहार कर थाने से भगाया जा रहा है। आरोप था कि पुलिस ऑपरेशन लंडा के चलते कर फर्जी मुठभेड़ के फोटो खींचा रही है। इसे संगठन सहन नहीं करेगा। दौरान सीओ ने प्रमोद गौतम के दस दिन के भीतर समस्याओं के निराकरण के आश्वासन पर धरना समाप्त किया गया। इस दौरान धरना प्रदर्शन के दौरान जिलाध्यक्ष अनुराग चौधरी, दिनेश खेड़ा, देशपाल हुड्डा, अनूप यादव, मोंटी, प्रिंस, सत्येंद्र, संदीप, इलम, अरुण, मोहित, माजिद आदि मौजूद रहे।

महाशिवरात्रि पर्व पर तक्षिला पब्लिक स्कूल में कार्यक्रम आयोजित

मेरठ,25 फरवरी (देशबन्धु)। कंकरखेड़ा स्थित तक्षशिला पब्लिक स्कूल में महाशिवरात्रि के पर्व के उपलक्ष में शानदार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रधानाचार्य डा. प्रवीन कुमार पथरा ने मां सरस्वती की प्रतिमा के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलित करके किया। इस अवसर पर बच्चों ने दुल्हा बने भोलेनाथ गीत पर कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जिससे सम्पूर्ण वातावरण शिवमय हो गया। इस अवसर पर संस्कृत अध्यापिका श्रीमती साधना राठी ने 'शिव स्तुति' का शानदार प्रस्तुतीकरण किया। कार्यक्रम के अंत में स्कूल के चेयरमैन डा. ओमपाल सिंह व प्रधानाचार्य डा. प्रवीन कुमार पथरा ने बच्चों को सम्बोधित किया एवं महाशिवरात्रि के पर्व की शुभकामनाएं दीं। महाशिवरात्रि जेसे पर्व हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति एवम अध्यात्म के परिचायक हैं।

नहर पटरी पर की गई कांवड़ियों की सेवा

मवाना,25 फरवरी (देशबन्धु)। मंगलवार को कांवड़ शिविर गंगनहर सेवा केन्द्र नहर पटरी मवाना पर कांवड़ियों की सेवा करने पहुंचे राष्ट्रीय गऊ सेवा संघ उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष शिक्षक नेता चौधरी नरेश पाल सिंह एवं सचिन कुमार भौला रजत चौधरी रविंद्र कुमार कान्हा आदि उपस्थित रहे जहां पर उन्होंने कांवरियों की खड़ी कांवड़ लेकर खुशी के साथ सेवा की एवं उनकी देखभाल और सेवा कर कुशल क्षेम भी पूछी एवं खुशी महसूस की इस अवसर शिक्षक नेता उपप्रधानाचार्य चौधरी नरेश पाल ने कहा कि कल महा शिवरात्रि पर शिवभक्त भोले मन्दिर में जलाभिषेक करेंगे भोलो की सेवा करना एक हिन्दू थर्म का सबसे सर्वोत्तम कार्य है। एवं भलाई का कार्य है। इस अवसर शिविर आयोजक तरुण गाबा जी एवं उनकी टीम सहयोगी एवं समस्त भोले भक्त आदि उपस्थित रहे।

रमजान में बिजली आपर्ति एवं जलापूर्ति सूचारू करने की मांग

उपजिलाधिकारी प्रतिश्रा सिंह को सौंपा ज्ञापन

मवाना,25 फरवरी (देशबन्धु)। राजद के कार्यकर्ताओं ने प्रदेश महासचिव युसूफ कुरैशी के नेतृत्व में मुकददस रमजान माह में विघुत आपूर्ति, जलाआपूर्ति सुचारू करने की मांग को लेकर उपजिलाधिकारी प्रतिश्रा सिंह को ज्ञापन सौपा। राजद कार्यकर्ताओं ने सौपे गये ज्ञापन में कहा कि रमजान का मुकददस माह 2 मार्च 2025 से शुरू होने की संभावना है। रमजान माह के दौरान सहरी में सुबह 2 बजे से लेकर छह बजे तक एवं शाम में अफतार के समय शाम 5 बजे से लेकर रात्रि में 11 बजे तक विधुत की सुचारू रूप से आपूर्ति पूरे तहसील क्षेत्र में होनी चाहिए। रमजान माह के दौरान तहसील क्षेत्र के किठौर, बहसूमा, परिक्षितगढ, हस्तिनापुर, रामराज, फलावदा, शाहजहांपुर आदि कस्बों में मस्जिदों तथा मदरसों के आसपास में सफाई व्यवस्था दुरुस्त होनी चाहिए कली चूना भी डलना चाहिए है। मवाना नगर जिसमें एक लाख से अधिक की आबादी है। इसमें सफाई व्यवस्था की अधिक आवश्यकता है और नगर पालिका परिषद के अधिशासी अधिकारी को निर्देशित किया जाये कि नगर से कूड़ा करकट को हटाया जाये ओर सफाई व्यवस्था सुचारू की जायेगी। नगर क्षेत्र में जो विधुत पोल नगर पालिका द्वारा जनरेटर से संचालित है। इन विघुत पोलों पर लगी लाइट कभी-कभी खराब हो जाते है। ऐसे विघुत पोलों की लाईटों को तुरंत ठीक कराया जाये। नगर में कई स्थानों पर विघुत पोल एवं उनके तार जर्जर हालत में है, उन्हे तुरंत बदला जाये तथा विघुत आपूर्ति बंद होने पर तुरन्त ठीक करायी जाए। मवाना नगर में जलापूर्ति बिलकुल खराब आ रहा है और उक्त पानी को पीने से मवाना नगर में काफी लोग बीमार हो रहे हैं। मवाना नगर में जल निगम द्वारा जो पाईप लाईन बिछाई जा रही है जिसके लिए सड़कों को खोदा जा रहा है उन सड़कों की मरम्मत नहीं की जा रही है।

हमें अपने खिलाड़ियों पर हमेशा रहा गर्व : डा. सुधीर

■ वेंकेटेश्वरा लायंस बना ऐतिहासिक लीजैण्ड लीग क्रिकेट-2025 का चौम्पियन

■ वेंकेटेश्वरा लायंस की टीम को डिप्टी सीएम केशव मौर्य ने दी ट्रॉफी

■ क्रिकेट सिर्फ एक खेल नहीं बल्कि यह एक सर्वमान्य धर्म : डा. राजीव त्यागी

■ पांच लाख रुपए की राशि अलग से खिलाड़ियों को प्रोत्साहन के रूप में दी

मेरठ,25 फरवरी (देशबन्धु)। राष्ट्रीय राजमार्ग बाईपास स्थित श्री वेंकेटेश्वशरा विश्वविद्यालय/संस्थान में पिछले दस दिनों से लखनऊ में चली आ रही राष्ट्रीय स्तर की टेनिस बाल क्रिकेट लीग लीजैण्ड लीग क्रिकेट-2025 (एलएलसी टेन-10) का ओवर आल चौम्पियन बनने पर वेंकेटेश्वरा लायंस टीम का संस्थान परिसर में जोरदार स्वागत किया गया। इसके अलावा इस जीत से गदगद इनामी राशि दस लाख के साथ अलग से समूह अध्यक्ष डा.सुधीर गिरि ने पांच लाख रुपए टीम को अपनी ओर से प्रदान किए। मशहूर पार्श्व गायक विजय प्रकाश ने इस अवसर पर बालीवुड के एक से एक बढ़कर एक तराने पेश कर समारोह को यादगार बना दिया। समूह अध्यक्ष डा. सुधीर गिरि ने आई.पी.एस.अमित कुमार आनंद एवं प्रतिकुलाधिपति डा. राजीव त्यागी के साथ मिलकर विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित किया। लीजैण्ड लीग क्रिकेट-2025 के बारे में विस्तार से बताते हुए संस्थापक अध्यक्ष डा. सुधीर गिरि के आधिकारिक प्रतिनिधि एवं विश्वविद्यालय के प्रतिकुलाधिपति डा. राजीव त्यागी ने बताया कि लखनऊ के ऐतिहासिक के.डी. सिंह बाबू अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में दस दिनों चलने वाले दस-दस ओवर वाली इस लीजैण्ड लीग क्रिकेट टूर्नामेंट में कुल बारह टीमों ने प्रतिभाग किया, जिनके मुख्य चयनकर्ता पूर्व भारतीय क्रिकेटर चेतन शर्मा एवं इस लीग के कमिश्नर दक्षिण अफ्रीका के महान क्रिकेटर जोंटी रोड्स थे। इसके साथ ही हरभजन सिंह, क्रिस गेल, ब्रेट ली, मोहम्मद कैफ, सुरेश रैना, आदि विश्व के दिग्गज खिलाड़ी इस सीरीज में चीफ कोच मेंटर की भूमिका में रहे। बेहद रोमांचक इस सीरीज में वेंकेटेश्वरा के शेरों ने सेमीफाइनल तक कोई भी मैच ना हारने वाली ब्रज वारियर मथुरा को 6 विकेट से हराकर चौम्पियन ट्राफी-2025 अपने नाम कर ली। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने संस्थापक अध्यक्ष डा. सुधीर गिरि के साथ मिलकर टीम को दस लाख रुपए, मैन ऑफ द सीरीज को चमचमाती निशान कार, 12 खिलाड़ियों को इलेक्ट्रॉनिक बाईक के साथ करोड़ों रुपए के इनाम प्रदान किए। फाइनल में मशहूर सिंगर कैलाश खेर के गानों पर सभी टीमों के खिलाड़ी स्टेडियम में झूमते नजर आए। संस्थान परिसर में वेंकेटेश्वरा लायंस टीम के स्वागत समारोह में सीईओ अजय श्रीवास्तव, मुख्य टीम कोच अमन लिट, युवा मोर्चा अध्यक्ष शुभम चौधरी आदि मौजूद रहे।

कार्यालय नगर पालिका परिषद, मवाना (मेरठ)

पत्रांकः 993/कर विभाग/न०पा०परि/2025–26 **दिनांकः 25/02/2025**

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि नगर पालिका परिषद् मवाना कर निर्धारण सूची में भवन कर में प्रस्तुत किये गये साक्ष्यो, पंजीकृत बैनामा / विरासत के आधार पर उनके सामने अंकित भवन संख्या अपना नाम बतौर स्वामी दर्ज करने हेतु प्रार्थना–पत्र दिए गये है ! उक्त नामांतरण की कार्यवाही हेतु नगर पालिका अधिनियम–1916 की धारा 147(2) के अंतर्गत सूचना जारी की जाती है, यदि आप किसी व्यक्ति को भवन नामान्तरण की कार्यवाही पर कोई आपत्ति हो तो वह अपनी लिखित आपत्ति साक्ष्य सहित इस नोटिस के प्रकाशन के 30 दिन के अन्दर कार्यालय में किसी कार्यशील दिवस में प्रस्तुत कर सकता है ! वाद निर्धारित अवधि के बाद प्राप्त आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा !

क्रम सं०	नाम क्रेता/पिता/पत्नि का नाम	नाम विक्रेता/पिता/पत्नि का नाम	म०स०	वर्ष	मोहल्ला	साक्ष्य आधार
1	मधुकर पुत्र स्व० छुटटन लाल	स्नेह लता पत्नि पदम लाल, राहुल, अंजू पुत्र पदमलाल, नितिन पुत्र राहुल व बालेश्वरी पुत्री छुट्टनलाल	680–682 का 3/5 भाग पर	2025–26	खैरात अली	दान पत्र
2	पंकज चौधरी पुत्र सुखपाल सिंह	राजेन्द्र सिंह पुत्र रामजीलाल	152,153,154	2025–26	काबली गेट	बैनामा
3	श्रीमति नीरज पत्नि स्व० उधम सिंह	धर्म सिंह पुत्र आशाराम	244, 536/1	2025–26	काबली गेट	मृत्यु वारिसान
4	अवधेश कुमार पुत्र रतन सिंह	धर्म सिंह पुत्र आशाराम	536	2025–26	काबली गेट	मृत्यु वारिसान
5	ईशान जैन पुत्र स्व० अशोक जैन	अशोक कुमार जैन पुत्र महावीर जैन	160, 160A, 160B	2025–26	मुन्नालाल	मृत्यु वसीयत नामा
6	मोहित रस्तौगी पुत्र अनिल कुमार रस्तौगी	प्रमोद कुमार पुत्र जय भगवान	2012/1A, 2012/1B	2025–26	तिहाई	बैनामा
7	श्रीमति अलसबा पत्नि अमजद	श्रीमति रजनी पत्नि संजय कुमार वर्मा	1193/2	2025–26	हीरालाल	बैनामा
8	बुशरा पत्नि जुनैद	इमरान पुत्र जमील	269	2025–26	तिहाई	बैनामा
9	चतर पाल सिंह पुत्र स्व० चरण सिंह	कमल सिंह पुत्र स्व० तेजा व कमला, धनवती पुत्री स्व० तेजा	413	2025–26	हीरालाल	बैनामा
10	हरीश कुमार वाधवा पुत्र ओम प्रकाश वाधवा	कांता वाधवा पत्नि ओम प्रकाश वाधवा	2008	2025–26	तिहाई	मृत्यु वसीयतनामा
11	श्रीमति रेखा रानी पत्नि नैपाल सिंह	श्रीमति जगवती पत्नि दशरथ	2220	2025–26	तिहाई	बैनामा
12	ब्रजमोहन गोयल पुत्र चंद्रभान गोयल	सुनील कुमार जैन, दिनेश कुमार पुत्र रोशनलाल व श्रीमति सुनिता पत्नि सुनील कुमार जैन	750	2025–26	कल्याण सिंह	बैनामा
13	सुनील गुप्ता पुत्र ललता सहाय	श्रीमति गायत्री देवी पत्नि ललता सहाय व सुदेश पुत्र ललता सहाय	1698, 1699, 1700, 1701, 1974, 1975, 1976, 1977	2025–26	हीरालाल	मृत्यु वारिसान
14	रमेश कुमार व संजय कुमार पुत्र स्व० सीताराम	सुमित्रा देवी पत्नि सीताराम	1838	2025–26	तिहाई	मृत्यु वसीयतनामा
15	मौ० शमशाद पुत्र मौ० युसूफ	श्रीमति अख्तरी पत्नि नईम अहमद	861/1	2025–26	मुन्नालाल	बैनामा
16	पीयूष गुप्ता पुत्र स्व० रमेश गुप्ता 1/2 भाग व श्रीमति श्वेता राजवंशी पत्नि पीयूष गुप्ता 1/2 भाग	नरेन्द्र कुमार गोयल पुत्र ओम प्रकाश	1152	2025–26	काबली गेट	बैनामा
17	श्रीमति ऊषा जैन पत्नि अशोक कुमार जैन	अशोक कुमार जैन पुत्र महावीर प्रसाद जैन	2072	2025–26	मुन्नालाल	मृत्यु वसीयतनामा
18	श्रीमति प्रवीण छाबडा पत्नि चरण लाल	शमा परवीन पत्नि मौ० फुरकान	1721/7, 1721/8	2025–26	मुन्नालाल	बैनामा
19	शाहनवाज खां पुत्र नजमुद्दीन खां	अनिल कुमार पुत्र हरि सिंह	895	2025–26	काबली गेट	बैनामा
20	अनवार, मोमिन, मौ० यासीन, मौ०अनीस पुत्र स्व० अमीनुद्दीन व नफीसन, रुखसाना पुत्री अमीनुद्दीन	अमीनुद्दीन पुत्र मजीद लुहार	1580	2025–26	हीरालाल	मृत्यु वारिसान
21	ईशान जैन पुत्र अशोक कुमार जैन 1/2 भाग व सीमा जैन पत्नि राकेश कुमार जैन, सिद्धार्थ जैन, आकाश जैन पुत्र राकेश कुमार जैन	महावीर प्रसाद पुत्र घमंडी लाल	1154	2025–26	मुन्नालाल	मृत्यु–वारिसान व मृत्यु–वसीयतनामा

(राजीव कुमार)
अधिशासी अधिकारी

प्रणाम, हे महाकुंभ! विश्वास है कि 2030-31 के कुंभ पर्व में होगा साक्षात्कार

महाकुंभ नगर, 25 फरवरी (देशबन्धु)। जिस महाकुंभ की गूंज पिछले डेढ़ महीने से भारत ही क्या, पूरे विश्व में चतुर्दिक थी, उसके विराम का समय आ गया है। कल महाशिवरात्रि के स्नान के साथ महाकुंभ पूर्णता को प्राप्त कर लेने वाला है। यद्यपि प्रयागराज में माघ स्नान का महत्व होता है, इसलिए ग्रह नक्षत्रों का संयोग माघ पर्यंत ही होता है लेकिन औपचारिक रूप से महाशिवरात्रि तक इसका स्नान परंपरागत रूप से चलता रहता है। अब वह स्नान काल भी बुधवार को सम्पन्न हो रहा है।

महाकुंभ के छठवें साल अब यहां संगम तट 2030-31 में एक बार फिर ऐसे ही दिव्य आभा से दमकेगा, जिसका साक्षात्कार कुंभ पर्व के रूप में होगा। विश्वास है कि ऐसे ही संतों का मिलन होगा। ऐसे ही जनसमुद्र उमड़ेगा। ऐसे ही मंगल गान होगा। ऐसे ही वेद मंत्र गूंजेंगे। ऐसे ही वसुधैव कुटुम्बकं का मंत्र आकार लेता दिखेगा।

महाशिवरात्रि के बाद महाकुंभ यादों में रहेगा, मौखिक चर्चाओं में रहेगा, लिपिबद्ध होकर पुस्तकों में समाहित होगा लेकिन यह अजर-अमर रहेगा। ऐसा महापर्व और इसमें उमड़ने वाला जनसमुद्र पहले कभी देखा नहीं गया है।

गंगा यमुना और सरस्वती के संगम तट पर कुंभ पर्व सदा होते आए हैं। यह गौरव प्रयागराज को अनादिकाल से प्राप्त है। प्रयागराज वासियों ने श्रद्धालुओं का ऐसा रेला पहले कभी नहीं देखा था, जैसा पिछले 45 दिनों में देखने को मिला है। यह आस्था का महासागर ही तो है जो अब तक हिलोरें लेता दिख रहा है।

महाकुंभ नगर ताकि सनद रहे.....
रतिभान त्रिपाठी

हर उत्सव, हर पर्व अपनी कुछ यादें, कुछ निशानियां छोड़ जाता है। यह महापर्व भी ऐसा करता दिख रहा है। इतिहास दर्ज कर रहा है इसमें आने वाली श्रद्धालुओं की भीड़ और उसकी संख्या को। इतिहास दर्ज कर रहा है महाकुंभ के एकता के महासंदेश को, जो विश्व भर में फैला है। इतिहास दर्ज कर रहा है युवाओं की सकारात्मक ऊर्जा और उसके प्रभाव को, जिसने यह चिंतन करने का अवसर दिया कि विश्व भले भौतिकता से सराबोर हो लेकिन अध्यात्म तो भारत की ही थाती है। कहते हैं -'अंत भला तो सब भला।' महाकुंभ के संदर्भ में भी यह मुहावरा साकार होता दिख रहा है। आध्यात्मिक विचार और व्यवहार की निरंतरता यहां अंत तक बनी हुई है। उसके आनंद में सब सराबोर हैं। महाकुंभ का कौतूहल अंत तक बना हुआ है। इससे निकला सद्भावना का संदेश भी व्यापक है।

याद कीजिए उन पलों को जब भीड़ संभालना कितना मुश्किल लग रहा था लेकिन सुरक्षा कर्मियों ने पूरे साहस और धैर्य के साथ अपना कर्तव्य निभाया। महाकुंभ की रमणीयता और संगम स्नान की ललक इस बार दुनिया के बड़े बड़ों को प्रयागराज की पावन धरती तक खींच लाई। यह हमारी आध्यात्मिक विरासत और उसकी महिमा ही है कि जो धनकुबेर कहीं एक बार जाने में संकोच करते हैं, वह बारंबार यहां आ रहे हैं। इतने वीआईपी और वीवीआईपी यहां एक साथ पहले कभी नहीं आए। इतने विमान प्रयागराज की धरती पर पहले कभी नहीं उतरे। इतने धनकुबेरों ने पहले कभी संगम स्नान नहीं किया। महाबली खली से लेकर फिल्म स्टार अक्षय कुमार, बहुचर्चित सिने तारिका व सांसद हेमा मालिनी, आज के जमाने की हीरोइन कटरीना कैफ तक ने संगम में डुबकी लगाई है। कई तो सनातन धर्म के अनुयाई न होने के बावजूद संगम और गंगा के चरणों में लोटते दिखे। ऐसे दृश्य पहले कभी नहीं देखे गए। ऐसे ही अनगिनत किस्से और यज्ञ अनुष्ठान के महान दृश्य हमेशा लोगों के मन में जगह बनाए रहेंगे। लोग यही कहते हैं कि बना रहे भारत का यह आध्यात्मिक वैभव और कुंभ परंपरा, जो अनंत काल तक विश्व के लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में रहे।

महाशिवरात्रि से पूर्व उमड़े श्रद्धालु

स्नानार्थियों की संख्या 64 करोड़ पार

महाकुंभ नगर, 25 फरवरी (देशबन्धु)। महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर महाकुंभ अपने चरम पर पहुंच चुका है। इस अद्भुत संयोग का साक्षी बनने के लिए करोड़ों श्रद्धालु संगम तट पर उमड़ पड़े हैं। मां गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के पावन संगम में रोज सवा करोड़ से ज्यादा श्रद्धालु डुबकी लगाकर शांति और मोक्ष की कामना कर रहे हैं। यही नहीं, 10 दिनों से लगातार चढ़ रहे आस्था के इस महाज्वार को देखते हुए स्वास्थ्य और सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं।

महाकुंभ में अब तक 64 करोड़ से अधिक श्रद्धालु पवित्र स्नान के सहभागी बन चुके हैं।

इसे देखते हुए महाशिवरात्रि पर यह आंकड़ा 66 करोड़ के पार हो जाने की संभावना है। सनातन धर्मावलंबी जितनी बड़ी संख्या में यहां पहुंचे हैं, उतने पूरी दुनिया में आज तक कहीं दूसरी जगह एक साथ एकत्र नहीं देखे गए। गंगा स्नान करने वाले श्रद्धालुओं का आंकड़ा सात बार दो करोड़ के पार जा चुका है।

पिछले 10 दिनों से हर दिन सवा करोड़ से ज्यादा श्रद्धालु संगम में पवित्र स्नान कर रहे हैं। जिससे महाकुंभ क्षेत्र के साथ साथ पूरे देश में भक्तिमय माहौल बना हुआ है। यहां लोगों के उत्साह का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि महाकुंभ में पवित्र स्नान करने वाले श्रद्धालुओं की संख्या सात बार दो करोड़ के पार जा चुकी है।

महाकुंभ में पवित्र स्नान करने के लिए बड़ी संख्या में देश के कोने कोने से लोग पहुंचे। यही नहीं विभिन्न देशों से प्रयागराज आने वाले विदेशी श्रद्धालुओं की भी इनमें अच्छी खासी तादात रही है। बात सिर्फ प्रमुख स्नान की हो तो करीब 17 करोड़ से अधिक श्रद्धालु इस दौरान संगम तट पर पहुंचे और आस्था की डुबकी लगाई।

■ महाकुंभ के बचे दो दिनों का साक्षी बनने उमड़े करोड़ों लोग
■ हर अमृत स्नान पर ढाई करोड़ से ज्यादा लोग संगम तटों पर जुटे

हर अमृत स्नान पर महाकुंभ नगर में जनसैलाब उमड़ा। प्रत्येक अमृत स्नान के मौके पर ढाई करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने पवित्र त्रिवेणी में डुबकी लगाकर अपने जीवन को धन्य किया। यही नहीं महाकुंभ में ऐसा 12 बार हो चुका है जब गंगा स्नान करने वाले डेढ़ करोड़ लोगों की यहां संगम की रेत पर सहभागिता रही।

महाकुंभ का अद्भुत आकर्षण, हिंदुजा परिवार दोबारा संगम की धरती पर

महाकुंभ, 25 फरवरी (देशबन्धु)। महाकुंभ के अवसर पर हिंदुजा ग्रुप ऑफ कंपनियों (भारत) के अध्यक्ष अशोक पी. हिंदुजा अपने परिवार के साथ परमार्थ निकेतन शिविर में पधारे और यहां की दिव्य वर्चस्वता का उन्होंने दूसरी बार आंनद लिया। अशोक पी. हिंदुजा जी का महाकुंभ में आगमन एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत करता है कि भौतिक सफलता का कोई भी आयाम आध्यात्मिक यात्रा से बड़ा नहीं हो सकता। यह केवल एक यात्रा नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्धि, समाज के प्रति सेवा और सनातन संस्कृति के प्रति निष्ठा का प्रतीक है।

महाकुंभ के इस अद्भुत क्षणों में अशोक पी. हिंदुजा जी और उनके परिवार ने परमार्थ निकेतन के पवित्र शिविर में स्वामी चिदानन्द सरस्वती से भेंट की। इस दिव्य भेंटवार्ता में जीवन के वास्तविक उद्देश्य, सेवा, और संतुलित जीवन के महत्व पर चर्चा हुई।

एक बार फिर संगम में गोते लगाने आई अंबानी की बेटी व रिश्तेदार

महाकुंभ नगर, 25 फरवरी (देशबन्धु)। संगम की दिव्य धरती पर अंबानी परिवार की बेटी और रिश्तेदार एक बार फिर पहुंचे। देश के सबसे धनी मुकेश अंबानी की बेटी ईशा अंबानी पीरामल, आनंद पीरामल, नताशा पूनावाला और उनके इष्टमित्रों ने स्वामी चिदानन्द सरस्वती और साध्वी भगवती सरस्वती के पावन सान्निध्य में संगम में वेदमंत्रों के साथ आस्था की डुबकी लगाई। गौरतलब है कि महाकुंभ, एकता और विश्वास का दिव्य प्रतीक है। संगम की भूमि प्रयाग में प्रतिदिन विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं, दिव्य शक्तियों और विभूतियों का आगमन वैश्विक एकता का दिव्य संदेश दे रहा है। ईशा अंबानी पीरामल, आनंद पीरामल और नताशा पूनावाला का स्वामी जी के साथ संवाद न केवल आध्यात्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह संवाद प्राचीन ज्ञान और आधुनिकता के बीच एक सेतु भी है। ईशा अंबानी पीरामल, आनंद पीरामल और नताशा पूनावाला ने संगम के पवित्र जल में आस्था की डुबकी लगाई। गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम में स्नान करना आत्मा को शुद्ध करने और ईश्वर के प्रति समर्पण को पुनः दृढ़ करने का प्रतीक है।

■ स्वामी चिदानंद सरस्वती के शिविर में पहुंच कर किया पूजन-अनुष्ठान

स्वामी चिदानन्द सरस्वती ईशा अंबानी के परिवार को संगम स्नान के बाद उपदेश दिया। कहा कि संगम में केवल नदियों का संगम नहीं है बल्कि यह संस्कृतियों, राष्ट्रों, राज्यों और विभूतियों का दिव्य मिलन का केन्द्र भी है। यह एक जीवंत उदाहरण है सनातन धर्म के उन मूल्यों का, जो समानता, सद्भाव और समरसता की भावना को बढ़ावा देते हैं। यहां पर सभी जाति, रंग, धर्म, सामाजिक स्थितियों से ऊपर उठकर एक साझा आध्यात्मिक उद्देश्य की ओर सभी बढ़ते हैं। स्वामी चिदानन्द सरस्वती ने कहा कि सनातन धर्म का संदेश समानता, सम्मान और गरिमा का है।

एक और महारिकॉर्ड, विविधता और एकता का दिया महासंदेश

महाकुंभ नगर, 25 फरवरी (देशबन्धु)। महाकुंभ अपनी दिव्यता, भव्यता, आध्यात्मिक अनुभूति और पुण्य-कल्याण की भावना के साथ ही वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के लिहाज से भी इतिहास में अपनी अमिट छाप छोड़ने जा रहा है। मंगलवार को प्रयागराज मेला प्राधिकरण की ओर मेला क्षेत्र के सेक्टर-1 स्थित गंगा पंडाल में 80 गुणा 5 फीट की वॉल पर सबसे लंबी हैंड प्रिंटिंग पेंटिंग बनाने के प्रयास को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया गया है। सुबह 10 बजे से लेकर शाम 6 बजे तक 10 हजार से अधिक लोगों ने साथ आकर विविधता में एकता, जनसहभागिता, सामाजिक समरसता और एकात्मता की भावना को आत्मसात कर महाकुंभ की सच्ची भावना को प्रदर्शित किया।

यह प्रयास गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड के अधिकारियों की उपस्थिति में हुआ और तीन दिन के भीतर ही इस महारिकॉर्ड के वर्ल्ड रिकॉर्ड के तौर पर दर्ज होने की प्रक्रिया को भी पूर्ण कर लिया जाएगा। उल्लेखनीय है कि कुंभ-2019 में इसी श्रेणी में 7,660 लोगों ने साथ आकर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया था और इस बार का प्रयास उस वर्ल्ड रिकॉर्ड को पीछे छोड़कर नए प्रतिमान स्थापित करने की दिशा में सार्थक कदम सिद्ध होगा। विश्व की सबसे लंबी (लार्जेस्ट) हैंड प्रिंट पेंटिंग बनाने का गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड, महाकुंभ मेला क्षेत्र के सेक्टर-1 में गंगा पंडाल में सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक अनवरत चला। इसके अंतर्गत 80 गुणा 5 फीट की वॉल पर विभिन्न दृष्यों को साकार किया गया जिसमें समुद्र मंथन का दृश्य मुख्य है। कार्यक्रम में प्रयागराज मेला प्राधिकरण की ओर से कार्यक्रम के नोडल अधिकारी ज्वॉइंट मजिस्ट्रेट राजापल्ली जगत साईं उपस्थित रहे। वहीं, गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स की ओर से जज ऋषि नाथ अपनी टीम के साथ लंदन से आए थे जिन्होंने अटेंप्ट के हर एक पहलु की सघन विवेचना की। कार्यक्रम में ऑब्जर्वेशन व ऑडिट का कार्य नीरज प्रकाश एंड एसोसिएट नाम की चार्टेड अकाउंटेंट फर्म द्वारा किया गया। वहीं, कार्यक्रम का संचालन केमीस् कनेक्ट नामक संस्था की ओर से निश्छल बारोट द्वारा किया गया।

महाशिवरात्रि स्नान के लिए मेला क्षेत्र और कमिश्नरेट प्रयागराज नो-व्हीकल जोन घोषित

महाकुंभ नगर, 25 फरवरी (देशबन्धु)। महाशिवरात्रि एवं महाकुंभ पर्व के अवसर पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ को नियंत्रित करने के लिए 25 फरवरी को अपराह्न 4 बजे से मेला क्षेत्र

और सायं 6 बजे से कमिश्नरेट प्रयागराज नो-व्हीकल जोन घोषित किया गया है। प्रशासन ने नागरिकों से अपील की है कि वे इस निर्णय का पालन करते हुए सुचारू यातायात एवं श्रद्धालुओं की सुविधा में सहयोग करें। श्रद्धालुओं की सुरक्षा और भीड़ प्रबंधन के दृष्टिकोण से प्रशासन ने प्रवेश मार्गों के अनुसार स्नान घाटों का निर्धारण किया है।

झूसी से आने वाले श्रद्धालु

दक्षिणी झूसी के श्रद्धालु संगम द्वार ऐरावत घाट पर स्नान करें। उत्तरी झूसी के श्रद्धालु संगम हरिश्चंद्र घाट एवं संगम ओल्ड जीटी घाट का उपयोग करें। संगम द्वार भरद्वाज घाट, संगम द्वार नागवासुकी घाट, संगम द्वार मोरी घाट, संगम द्वार काली घाट, संगम द्वार रामघाट, संगम द्वार हनुमान घाट

अरैल क्षेत्र से आने वाले श्रद्धालु संगम द्वार अरैल घाट

प्रशासन ने श्रद्धालुओं से अपील की है कि वे अपने प्रवेश मार्ग के निकटतम घाट पर स्नान करें ताकि भीड़ नियंत्रण में रहे और यातायात सुचारू रूप से संचालित हो सके।

आवश्यक सेवाओं को मिलेगी छूट

यातायात प्रतिबंधों के बावजूद, दूध, सब्जी, दवा, पेट्रोल/डीजल की आपूर्ति, एम्बुलेंस और सरकारी सेवाओं (पुलिस, डॉक्टर, प्रशासन) से जुड़े वाहनों के आवागमन पर कोई रोक नहीं रहेगी। इन आवश्यक सेवाओं के निर्बाध संचालन की व्यवस्था की गई है।

महाशिवरात्रि पर विशेष अपील

26 फरवरी 2025 को महाशिवरात्रि पर्व महाकुंभ के साथ पड़ने के कारण श्रद्धालुओं की अत्यधिक भीड़ की संभावना है। प्रशासन ने श्रद्धालुओं से अनुरोध किया है कि वे यथाशीघ्र अपने निकटतम घाट पर स्नान करें और शिवालयों में दर्शन कर भीड़ को संतुलित बनाए रखने में सहयोग करें।

यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण

प्रथम तल, कॉमर्शियल कॉम्पलेक्स, पी-2, सैक्टर-ओमेगा-1, ग्रेटर नौएडा, जनपद गौतमबुद्ध नगर, 201308 (उ.प्र.)
Toll Free No. 18001808296 वेबसाइट: www.yamunaexpresswayauthority.com

पत्रांक: वाई.ई.ए./GM(P)/2025/1010 दिनांक: 24.02.2025

ई-निविदा आमंत्रण सूचना

निम्नलिखित कार्य हेतु केन्द्र सरकार/राज्य सरकार/केन्द्र शासित/अर्द्धशासिक / सार्वजनिक उपक्रमों के कार्यों का कम से कम चार वर्ष का अनुभव रखने वाले ठेकेदारों / फर्मों से ई-निविदायें आमन्त्रित की जाती है। ई-प्रीक्योरमेंट सोल्यूशन द्वारा निविदायें द्विस्तरीय पद्धति से खोली जायेंगी।

कार्यालय आदेश संख्या: वाई.ई.ए./GM (P)/2025/1009 दिनांक 24.02.2025 के अनुपालन में यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण की कार्यों में संविदाकार द्वारा बिल ऑफ क्वान्टिटी (बी.ओ.क्यू.) पर डाले गये 10 प्रतिशत कम दरों तक 0.5 प्रतिशत प्रति एक प्रतिशत कम दर पर तथा उसके पश्चात 10 प्रतिशत से अधिक कम दरों पर 1.00 प्रतिशत प्रति एक प्रतिशत कम दर पर सिक्योरिटी/परफॉर्मेन्स गारन्टी प्राप्त की जायेगी तथा परफॉर्मेन्स गारन्टी एफ.डी.आर./सी.डी.आर. / बैंक गारन्टी / एन.एस.सी. के रूप में न्यूनतम संविदाकार द्वारा अनुबन्ध गठन से पूर्व देनी होगी, जो कार्य के अन्तिम बीजक होने के बाद वापिस होगी।

क्र.सं.	कार्य का नाम/वर्क सर्किल	अनुमानित लागत
1.	Patch repair work of 60m wide road and 75m wide(road no 13) between sector -28 and 29, YEA, WC-04	रू. 11.72 लाख
2.	Repair of barbed wire fencing damage due to vehicular accidents in central verge of 100 mtr wide road central verge from ch.0.00km to 3.60km in sector -20, YEIDA, WC-H	रू. 21.04 लाख
3.	Annual jungle cleaning of internal road patri of pocket-O,P and Q in sector- 20, YEA-WC-02	रू. 30.82 लाख
4.	Annual jungle cleaning of road patri of 60m and 45mtr wide road in sector -20, YEA, WC-02	रू. 37.54 लाख
5.	Annual jungle cleaning of internal road patri of pocket E, Fand G in sector -20, YEA, WC-02	रू. 37.23 लाख
6.	Supply and stacking of bhusa for chanchali gaushala, YEA (2024-2025) WC-06	रू. 31.54 लाख
7.	C/O boundary wall of park near plot no -658, pocket-S sector-20 YEIDA, WC-H	रू. 51.22 लाख
जिन्हें दिनांक 04.03.2025 से 17.03.2025 को 5:00 बजे तक अपलोड किया जा सकता है। प्राप्त ई-निविदाओं की प्री-क्वालीफिकेशन दिनांक 19.03.2025 को प्रातः 11.00 बजे खोली जायेगी।		
क्र.सं.	कार्य का नाम/वर्क सर्किल	अनुमानित लागत
8.	Construction and development of H.T and LT panel room external services for common secientific facilities plot F-3, F-9, F-10 and F-11, YEIDA,WC-04	रू. 132.03 लाख
9.	Supply and stacking of bhusa and green fooder of jewar banger gaushala, YEA (2024-2025), WC-06	रू. 145.09 लाख
10.	Contruction of 24 mtr wide road of pocket -E,F,G,H in Sec-20, YEA, WC-02	रू. 193.24 लाख
11.	P/L interlocking tiles of link Road Hydro Abstraction Well and compus area in feleda Banger, YEIDA, WC-04	रू. 73.16 लाख
12.	Resurfacing work of internal -road of pocket -D, sector -20, YEA, WC-02	रू. 214.46 लाख
13.	Providing and laying water supply system for industrial sector -29, YEIDA.(part-A), WC-04	रू. 461.59 लाख
14.	Construction of service road right side 120.0mtr wide road with maintenance for five year ch.3.00km to 4.50km in sector -18, YEA, WC-01	रू. 367.74 लाख
जिन्हें दिनांक 05.03.2025 से 18.03.2025 को 5:00 बजे तक अपलोड किया जा सकता है। प्राप्त ई-निविदाओं की प्री-क्वालीफिकेशन दिनांक 20.03.2025 को प्रातः 11.00 बजे खोली जायेगी।		
क्र.सं.	कार्य का नाम/वर्क सर्किल	अनुमानित लागत
15.	Construction of service road, sewer along 60mtr wide road (L.H.S) towards sector -28, YEA, WC-04	रू.324.29 लाख
16.	Construction of 02 entry and exit ramp for film city sector-21 at ch.23.30, WC-01	रू.499.80 लाख
17.	c/o Remaining left side service along 120m wide road in sector-22D and 22E, YEA, WC-02	रू.537.99 लाख
18.	Internal Development work of Transport nagar in Sector-33, YEIDA, WC-03	रू.1789.54 लाख
19.	Balance Development work (Road, Sewer, Water supply and Drain) of industrial sector-33, YEIDA, WC-03	रू.1751.57 लाख
20.	Construction of Rcc Drain, Service Road and Sewer Line (R.H.S) along 75.00 mtr wide road (Road no-16) Between Sector-33 and 10, YEIDA, WC-03	रू.1095.57 लाख
21.	Providing and Laying Sewerage System and RCC Drain along Road no-18 (L.H.S) Sec-32, YEIDA, WC-03	रू.1495.23 लाख

जिन्हें दिनांक 06.03.2025 से 20.03.2025 को 5:00 बजे तक अपलोड किया जा सकता है। प्राप्त ई-निविदाओं की प्री-क्वालीफिकेशन दिनांक 24.03.2025 को प्रातः 11.00 बजे खोली जायेगी।

1. निविदा प्रपत्र उत्तर प्रदेश इलैक्ट्रॉनिक्स कॉरपोरेशन की वेबसाइट http://etender.up.nic.in पर देखे जा सकते हैं। इच्छुक ठेकेदारों से अनुरोध है कि वे नियमित रुप से उक्त वेबसाइटों को देखते रहें क्योंकि निविदाओं के सम्बन्ध में कोई बदलाव अथवा अतिरिक्त सूचना बेबसाइट पर ही उपलब्ध करायी जायेगी।

महाप्रबन्धक (परियोजना)

यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण के अधिसूचित क्षेत्र में प्राधिकरण द्वारा स्वीकृत मास्टर प्लॉन के अतिरिक्त प्लॉटिंग / हाउसिंग / कॉलोनी या किसी भी प्रकार का अन्य निर्माण पूरी तरह से अवैध है। सामान्यजन इस प्रकार की खरीदफरोख्त से पूर्णतः सचेत रहें तथा कॉलोनाइजर के भ्रामक विज्ञापनों से बचें। अधिक जानकारी के लिए प्राधिकरण की वेबसाइट www.yamunaexpresswayauthority.com देखें।

देशबन्धु

[अर्थ जगत]

सर्वाधिक बढ़ने वाले शेयर	
महिंद्रा एंड महिंद्रा	2.61 प्रतिशत
भारती एयरटेल	2.55 प्रतिशत
बजाज फाइनेंस	1.65 प्रतिशत
जोमैटो	1.37 प्रतिशत
नेस्ले इंडिया	1.34 प्रतिशत

सर्वाधिक घटने वाले शेयर	
सन फार्मा	1.58 प्रतिशत
पावरग्रिड	1.25 प्रतिशत
टीसीएस	1.19 प्रतिशत
टेक महिंद्रा	1.15 प्रतिशत
एशियन पेंट	1.04 प्रतिशत

सर्राफा

सोना (प्रति दस ग्राम)स्टैंडर्ड	87,933
बिटुर	47,320
गिन्नी (प्रति आठ ग्राम)	39,795
चांदी (प्रति किलो) टंच हाजिर	1,03,500
वायदा	70,857
चांदी सिक्का लिवाली	900
बिकवाली	880

मुद्रा विनिमय

मुद्रा	क्रय	विक्रय
अमेरिकी डॉलर	86.96	87.00
पौंड स्टर्लिंग	106.21	106.45
यूरो	88.45	88.78
चीन युआन	08.24	13.38

अनाज

देसी गेहूँ एमपी	2400-3000
गेहूं दड़ा	3100-3200
आटा	2800-2900
मैदा	2900-2950
चोकर	2000-2100

मोटा आनाज

बाजरा	1300-1305
मक्का	1350-1500
ज्वार	3100-3200
जौ	1430-1440
काबुली चना	3500-4000

शुगर

चीनी एस	4280-4380
चीनी एम	4280-4380
मिल डिलीवरी	3620-3720
गुड़	4250-4350

दाल-दलहन

चना	6100-6200
दाल चना	7100-7200
मसूर काली	7300-7400
उड़द दाल	8900-9000
मूंग दाल	9300-9300
अरहर दाल	7650-7750

पेट्रोल और डीजल की कीमतें अपरिवर्तित

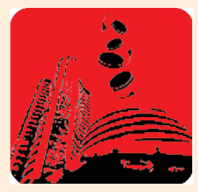

नई दिल्ली। अंतराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में तेजी जारी रहने के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम अपरिवर्तित रहे, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपए प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपए प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपए प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपए प्रति लीटर पर रहा।

रेलवे के 100 प्रतिशत इलेक्ट्रिफिकेशन के लिए सरकार प्रतिबद्ध : अश्विनी वैष्णव

■ **रिन्यूएबल एनर्जी का उपयोग बढ़ेगा**

हमारा अगला उद्देश्य रिन्यूएबल एनर्जी का अधिक से अधिक इस्तेमाल करना है। भारतीय रेलवे ने अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए 4,260 मेगावाट (इंस्टॉल्ड) सोलर और 3,427 मेगावाट (इंस्टॉल्ड) विंड पावर के लिए करार किया हुआ है: अश्विनी वैष्णव, केंद्रीय मंत्री

नई दिल्ली, 25 फरवरी (एजेंसियां)। भारत सरकार रेलवे के लिए 'नेट जीरो' उत्सर्जन को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है और वित्त वर्ष 2025-26 में रेलवे का इलेक्ट्रिफिकेशन 100 प्रतिशत पर पहुंच जाएगा। केंद्रीय रेलवे, इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने यह बयान दिया।

मध्य प्रदेश के 'ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2025' को वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए संबोधित करते हुए केंद्रीय मंत्री ने कहा कि हमारा अगला उद्देश्य रिन्यूएबल एनर्जी का अधिक से अधिक इस्तेमाल करना है। भारतीय रेलवे ने अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए 4,260 मेगावाट (इंस्टॉल्ड) सोलर और 3,427 मेगावाट (इंस्टॉल्ड) विंड पावर के लिए करार किया हुआ है। उन्होंने आगे कहा कि इस दृष्टिकोण के साथ भारतीय रेलवे पहले ही 1,500 मेगावाट रिन्यूएबल एनर्जी के लिए अनुबंध कर चुका है।साथ ही रिन्यूएबल एनर्जी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराते हुए कहा कि मध्य प्रदेश सरकार के साथ एक महत्वपूर्ण 170 मेगावाट बिजली खरीद समझौते (पीपीए) पर हस्ताक्षर किए गए हैं। यह अनुबंध भारत की सबसे सस्ती सोलर पावर की खरीद को दर्शाता है, जिसकी कीमत 2.15 रुपऐ प्रति किलोवाट घंटा है।

मध्य प्रदेश सरकार रीवा अल्ट्रा मेगा सोलर पावर लिमिटेड (आरयूएमएसएल) के माध्यम से अपने सबसे बड़े सोलर पार्क से भारतीय रेलवे को सोलर पावर की आपूर्ति कर रही है। वैष्णव ने राज्य में रेलवे विकास को आगे बढ़ाने में सक्रिय भूमिका के लिए राज्य के मुख्यमंत्री मोहन यादव की सराहना की।

उन्होंने देश के परिवहन नेटवर्क के लिए एक टिकाऊ और हरित भविष्य के लिए भारत सरकार की मजबूत प्रतिबद्धता को दोहराया। केंद्रीय मंत्री ने कहा, 'भारतीय रेलवे नेट जीरो' उत्सर्जन प्राप्त करने और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने, तेल आयात को कम करने और समग्र रसद लागत को कम करने के लिए सड़क से रेल परिवहन में बदलाव करने के लिए प्रतिबद्ध है।'

अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था के कुछ वर्षों में 44 अरब डॉलर होने की उम्मीद : जितेन्द्र सिंह

प्रधानमंत्री ने भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र को अनलॉक करने के लिए एक अनूठा निर्णय लिया, मोदी सरकार द्वारा बनाए गए सक्षम वातावरण को श्रेय दिया, जिसने श्रीहरिकोटा के द्वार को निजी क्षेत्र के लिए और अंतरिक्ष क्षेत्र को निजी क्षेत्र की भागीदारी के लिए खोल दिया: जितेन्द्र सिंह, केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री

नई दिल्ली, 25 फरवरी (एजेंसियां)। भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था अगले कुछ वर्षों में 8 अरब डॉलर से बढ़कर 44 अरब डॉलर हो जाने की उम्मीद है, जिससे मूल्य संवर्धन होगा।

केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, परमाणु ऊर्जा विभाग और अंतरिक्ष विभाग तथा कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने मंगलवार को यहां एक बिजनेस कॉन्क्लेव में यह बात कही। उन्होंने भारतीय अंतरिक्ष क्षेत्र द्वारा हासिल की गई उल्लेखनीय प्रगति पर प्रकाश डाला, तथा इस सफलता के पीछे अंतरिक्ष बजट में वृद्धि को एक प्रमुख कारक बताया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अंतरिक्ष बजट लगभग तीन गुना बढ़ गया है। वर्ष 2013-14 में 5,615 करोड़ रुपए से बढ़कर 2025-2026 में 13,416 करोड़ रुपए हो गया है, जो अंतरिक्ष क्षेत्र में विकास को बढ़ावा देने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

डॉ. सिंह ने 2014 को भारत की अंतरिक्ष यात्रा के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ बताया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र को अनलॉक करने के लिए एक अनूठा निर्णय लिया, जो सरकारी नीतियों में एक सक्रिय बदलाव को दर्शाता है। उन्होंने मोदी सरकार द्वारा बनाए गए सक्षम वातावरण को श्रेय दिया, जिसने श्रीहरिकोटा के द्वार को निजी क्षेत्र के लिए और अंतरिक्ष क्षेत्र को निजी क्षेत्र की भागीदारी के लिए खोल दिया, जिससे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) आया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के व्यक्तिगत हस्तक्षेप से शुरू किया गया यह रणनीतिक दृष्टिकोण न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड और इन-स्पेस जैसे ढाँचों के माध्यम से सरकारी और गैर-सरकारी क्षेत्रों के बीच तालमेल बना रहा है, जिससे अंतरिक्ष उद्योग में नवाचार और अवसरों को बढ़ावा मिल रहा है।

टाटा पावर असम में स्वच्छ ऊर्जा क्षेत्र में पांच वर्ष में करेगी 30 हजार करोड़ रुपए का निवेश

■ **राज्य में सौर, पवन, जल विद्युत और ऊर्जा भंडारण सहित 5000 मेगावाट तक की अक्षय और स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाओं को जोड़ना लक्ष्य**

गुवाहाटी, 25 फरवरी (एजेंसियां)। टाटा समूह की कंपनी टाटा पावर ने असम में अक्षय ऊर्जा और स्वस्थ विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को आगे बढ़ाने की दिशा में यहां चल रहे एडवांटेज असम 2.0 के दौरान मंगलवार को राज्य सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए जिसके तहत कंपनी अगले पांच वर्षों में राज्य में सौर, पवन, जल विद्युत और ऊर्जा भंडारण सहित 5000 मेगावाट तक की अक्षय और स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाओं को जोड़ने और उनके लिए जरूरी सहायक सुविधाओं पर 30,000 करोड़ रुपये का निवेश करेगी।

टाटा पावर की एक विज्ञप्ति के अनुसार इस समझौता ज्ञापन पर असम सरकार के प्रमुख सचिव विद्युत डॉ. कृष्ण कुमार द्विवेदी और टाटा पावर के सीईओ और एमडी डॉ. प्रवीर सिन्हा ने असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा और असम सरकार के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति में हस्ताक्षर किए। इसके अंतर्गत असम सरकार पट्टे के आधार पर लगभग 20,000 एकड़ अतिक्रमण-मुक्त सरकारी भूमि की पहचान और आवंटन में सहायता करेगी और सौर, पवन, जलविद्युत और ऊर्जा भंडारण परियोजनाओं के लिए उपयुक्त निजी भूमि के अधिग्रहण में सहायता करेगी।

सेबी ने डेरिवेटिव्स मार्केट में स्टॉक्स में हेराफेरी को रोकने के लिए दिया नया प्रस्ताव

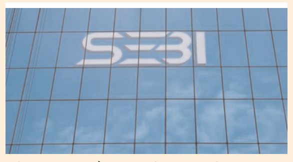

नोशनल वैल्यू मेथड में सभी फ्यूचर्स और ऑप्शंस कॉन्ट्रैक्ट्स की कुल वैल्यू को बिना वास्तविक मार्केट रिस्क को देखे जोड़ा जाता है और इससे लगता है कि स्टॉक में काफी ज्यादा कारोबार हुआ है: सेबी

मुंबई, 25 फरवरी (एजेंसियां)। भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने इक्विटी डेरिवेटिव्स मार्केट के ओपन इंटरेस्ट (ओआई) के कैलकुलेशन के तरीके में बड़े बदलाव का प्रस्ताव दिया है। सेबी की ओर से जारी बयान में कहा गया कि इक्विटी डेरिवेटिव्स मार्केट के ओआई के कैलकुलेशन के लिए मौजूदा 'नोशनल वैल्यू' की जगह 'फ्यूचर इक्विलेंट' पद्धति पर जाने का सुझाव दिया गया है। इस बदलाव के पीछे सेबी का उद्देश्य उस प्रथा को रोकना है, जिसके तहत डेरिवेटिव्स शेयरों को हेराफेरी के जरिए बैन में धकेल दिया जाता है।

सेबी ने बताया कि मौजूदा नोशनल वैल्यू मेथड में सभी फ्यूचर्स और ऑप्शंस कॉन्ट्रैक्ट्स की कुल वैल्यू को बिना वास्तविक मार्केट रिस्क को देखे जोड़ा जाता है और इससे लगता है कि स्टॉक में काफी ज्यादा कारोबार हुआ है। इस स्थिति में स्टॉक बैन में चला जाता है, जब रिस्क ज्यादा भी नहीं होता। वहीं, प्रस्तावित फ्यूचर इक्विलेंट मेथड में ओपन इंटरेस्ट का कैलकुलेशन कुल वैल्यू की जगह स्टॉक के साथ कॉन्ट्रैक्ट कितना चलता है, इस आधार पर की जाएगी। यह बाजार जोखिम की अधिक सटीक तस्वीर प्रस्तुत करेगा और अनावश्यक ट्रेडिंग प्रतिबंधों को कम करेगा।

डेरिवेटिव्स मार्केट में कोई स्टॉक तभी बैन में जाता है, जब उसकी ट्रेडिंग लिमिट टूट जाती है। इस स्थिति में ट्रेडर अपनी मौजूदा पॉजिशन को समाप्त कर सकता है, लेकिन फ्यूचर्स और ऑप्शंस में नई पॉजिशन नहीं ले सकता है।

सार संक्षेप

भारत में मजबूत सेल्स, सर्विस और सपोर्ट नेटवर्क बनाने की तैयारी कर रही टेस्ला

नई दिल्ली। अरबपति कारोबारी एलन मस्क की कंपनी टेस्ला भारत में मजबूत सेल्स, सर्विस और सपोर्ट नेटवर्क बनाने की तैयारी कर रही है। यह जानकारी मंगलवार को एक रिपोर्ट में दी गई। लीडिंग डेटा और एनालिटिक्स कंपनी ग्लोबल डेटा की रिपोर्ट में बताया गया कि टेस्ला भारत में अपने नियुक्ति प्रयासों को बढ़ा रहा है, जो देश में उसकी उपस्थिति को मजबूत करने की रणनीति में एक महत्वपूर्ण कदम है। साथ ही बताया कि भारत में भर्ती शुरू करना, देश के ईवी मार्केट पर कंपनी के बढ़ते फोकस को दिखाता है। रिपोर्ट में कहा गया कि कंपनी द्वारा मुंबई और पुणे में निकाली गई 15 भर्ती से पता लगता है कि कंपनी भारत में मजबूत सेल्स, सर्विस और सपोर्ट नेटवर्क बनाने की तैयारी कर रही है।

युवाओं को सशक्त बनाने के लिए केंद्र ने स्टैटिक्स हैकथॉन किया लॉन्च

नई दिल्ली। सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (एमओएसपीआई) माईगव के सहयोग से 'इनोवेट विद गोआईस्टेट्स' टाइटल से एक रोमांचक डेटा-विजुअलाइजेशन हैकथॉन लॉन्च कर रहा है, जो 'विकसित भारत के लिए डेटा-ड्रिवन इनसाइट' थीम पर केंद्रित है। एक आधिकारिक बयान के अनुसार, हैकथॉन का उद्देश्य भारत के युवा और तेज दिमाग वाले छात्रों और शोधकर्ताओं को राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) द्वारा तैयार किए गए विशाल आधिकारिक आंकड़ों का इस्तेमाल कर इनोवेटिव डेटा-ड्रिवन इनसाइट बनाने के लिए प्रेरित करना है। यह हैकथॉन माईगव प्लेटफॉर्म पर 25 फरवरी से 31 मार्च तक चलेगा। स्नातक या स्नातकोत्तर अध्ययन करने वाले या शोध करने वाले छात्र इसमें भाग ले सकते हैं।

एडवांटेज असम 2.0 समिट में आए निवेश से राज्य के आर्थिक विकास को मिलेगी रफ्तार: इंडस्ट्री लीडर्स

गुवाहाटी। एडवांटेज असम 2.0 इन्वेस्टमेंट और इन्फ्रास्ट्रक्चर समिट 2025 जैसे आयोजनों से राज्य के इन्फ्रास्ट्रक्चर को बूस्ट मिलेगा और साथ ही आर्थिक विकास में भी तेजी आएगी। यह बयान मंगलवार को इंडस्ट्री लीडर्स द्वारा दिया गया। स्टार सीमेंट लिमिटेड के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर, प्रदीप पुरोहित ने कहा कि स्टार सीमेंट असम में 20 वर्षों से है। यहां हम अपना प्लांट लगाने के साथ-साथ अहम पुलों और प्रोजेक्ट्स को सीमेंट की आपूर्ति देकर इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि एडवांटेज असम 2.0 समिट में देश के बड़े-बड़े उद्योगपति आए हैं। इससे राज्य को काफी सारा निवेश मिला है। निवेश आने से असम के इन्फ्रास्ट्रक्चर को बूस्ट मिलेगा और साथ ही आर्थिक विकास को भी रफ्तार मिलेगी।

सेंसेक्स चढ़ा, निफ्टी फिसला

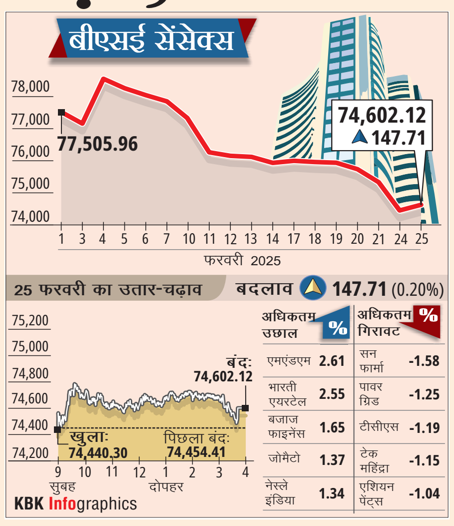

■ **सेंसेक्स 147.71 अंक की तेजी लेकर 74,602.12 अंक पर पहुंचा वहीं निफ्टी 5.80 अंक फिसलकर 22,547.55 अंक पर रहा**

मुंबई, 25 फरवरी (एजेंसियां)। विश्व बाजार के मिलेजुले रुख के बीच स्थानीय स्तर पर महिंद्रा एंड महिंद्रा, भारती एयरटेल, जोमैटो, मारुति, आईसीआईसीआई बैंक और इंफोसिस समेत 17 कंपनियों में हुई लिवाली की बदौलत आज सेंसेक्स में तेजी लौट आई वहीं बिकवाली के दबाव में निफ्टी मामूली गिरावट के साथ बंद हुआ।

बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 147.71 अंक की तेजी लेकर 74,602.12 अंक पर पहुंच गया जबकि नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 5.80 अंक फिसलकर 22,547.55 अंक पर आ गया। हालांकि बीएसई की दिग्गज कंपनियों के विपरीत मझौली और छोटी कंपनियों के शेयरों में जमकर बिकवाली हुई, जिससे मिडकैप 0.57 प्रतिशत लुढ़ककर 39,831.17 अंक और स्मॉलकैप 0.45 प्रतिशत कमजोर रहकर 45,052.21 अंक पर रहा। इस दौरान बीएसई में कुल 4062 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 1678 में लिवाली जबकि 2253 में बिकवाली हुई वहीं 131 में कोई बदलाव नहीं हुआ। इसी तरह निफ्टी की 31 कंपनियां लाल जबकि 19 हरे निशान पर बंद हुईं। बीएसई के सात समूहों में तेजी का रुख रहा। इससे सीडी 0.04, एफएमसीजी 0.26, दूरसंचार 0.66, ऑटो 0.43, बैंकिंग 0.02, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स 0.37 और टेक समूह के शेयर 0.01 प्रतिशत मजबूत रहे। वहीं, कमोडिटीज 0.98, ऊर्जा 1.10, इंडस्ट्रियल्स 0.71, आईटी 0.59, कैपिटल गुड्स 0.62, धातु 1.69, तेल एवं गैस 1.34, रियल्टी 1.27, सर्विसेज 1.27 और फोकस्ड आईटी समूह के शेयर 0.70 प्रतिशत चढ़ गए। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मिलाजुला रुख रहा। ब्रिटेन का एफटीएसई 0.43 और जर्मनी के डैक्स में 0.05 प्रतिशत की तेजी रही जबकि जापान का निक्केई 1.39, हांगकांग का हैंगसेंग 1.32 और चीन का शंघाई कंपोजिट 0.80 प्रतिशत गिर गया। शुरूआती कारोबार में सेंसेक्स 14 अंक फिसलकर 74,440.30 अंक पर खुला और बिकवाली होने से थोड़ी देर बाद ही 74,400.37 अंक के निचले स्तर तक टूट गया। वहीं, लिवाली होने से यह दोपहर से पहले 74,785.08 अंक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। अंत में पिछले दिवस के 74,454.41 अंक के मुकाबले 0.20 प्रतिशत बढ़कर 74,602.12 अंक हो गया।

वहीं, निफ्टी 37 अंक गिरकर 22,516.45 अंक पर खुला और सत्र के दौरान 22,513.90 अंक के निचले जबकि 22,625.30 अंक के उच्चतम स्तर पर रहा। अंत में पिछले सत्र के 22,553.35 अंक की तुलना में 0.03 प्रतिशत फिसलकर 22,547.55 अंक पर बंद हुआ। इस दौरान सेंसेक्स की तेजी पर रही कंपनियों में महिंद्रा एंड महिंद्रा 2.61, भारती एयरटेल 2.55, बजाज फाइनेंस 1.65, जोमैटो 1.37, नेस्ले इंडिया 1.34, बजाज फिनसर्व 0.99, अडानी पोर्ट्स 0.92, मारुति 0.88, हिंदुस्तान यूनिलीवर 0.80, टाइटन 0.80, आईटीसी 0.75, आईसीआईसीआई बैंक 0.60, एचडीएफसी बैंक 0.47, इंडसइंड बैंक 0.40, इंफोसिस 0.23, कोटक बैंक 0.14 और एक्सिस बैंक 0.04 प्रतिशत शामिल है।

वहीं, सन फार्मा 1.58, पावरग्रिड 1.25, टीसीएस 1.19, टेक महिंद्रा 1.15, एशियन पेंट 1.04, टाटा मोटर्स 0.97, एलटी 0.93, अल्ट्रासिम्को 0.93, रिलायंस 0.89, एसबीआई 0.75, एचसीएल टेक 0.46, टाटा स्टील 0.44 और एनटीपीसी के शेयर 0.36 प्रतिशत गिरावट पर रहीं।

जेनएआई का इस्तेमाल कर 10 में से 8 भारतीय डेवलपर अपनी प्रोडक्टिविटी बढ़ाने में सक्षम : रिपोर्ट

■ **कंपनियां अपने वर्कफ्लो में एआई को तेजी से इंटीग्रेट कर रही : बीसीजी**

मुंबई, 25 फरवरी (एजेंसियां)। भारत में दस में से आठ डेवलपर्स ने जनरेटिव एआई का इस्तेमाल कर अपनी प्रोडक्टिविटी बढ़ने की जानकारी दी है। एक लेटेस्ट रिपोर्ट के अनुसार, नई टेक्नोलॉजी देश में आईटी-इनेबल्ड सर्विस इंडस्ट्री को बदल रही है। रिपोर्ट में कहा गया है कि कंपनियां अपने वर्कफ्लो में एआई को तेजी से इंटीग्रेट कर रही हैं, जेनएआई अभी शुरुआत है। अगला बड़ा विकास एजेंटिक एआई होगा, जहां एआई सिस्टम असिस्टेंस से आगे बढ़कर स्वायत्त रूप से कार्यों को करने, विफलताओं को प्रीडिक्ट करने और रियल टाइम में संचालन को अनुकूलित करने का काम करते हैं। बोस्टन कंसल्टिंग ग्रुप (बीसीजी) की रिपोर्ट के अनुसार, एआई-ड्रिवन ऑटोमेशन के इस लेवल से सॉफ्टवेयर रिलीज तेज हो सकते हैं, परिचालन लागत कम हो सकती है और डाउनटाइम लगभग शून्य हो सकता है। हालांकि, इस भविष्य को प्राप्त करना आज जेनएआई में एक मजबूत नींव बनाने पर निर्भर करता है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि यह तकनीक अब केवल एक एक्सपेरिमेंट नहीं है। यह सॉफ्टवेयर विकास में क्रांति ला रही है, कोडिंग, टेस्टिंग और डिप्लॉयमेंट को तेज और अधिक कुशल बना रही है। दशकों से, भारत ग्लोबल आईटी सर्विस की रीढ़ रहा है, जो सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट और डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन में बेहतरीन है।

हालांकि, जैसे-जैसे एआई इंडस्ट्री को नया आकार दे रहा है, कंपनियों को पारंपरिक तरीकों से आगे बढ़ना चाहिए और अपने वर्कफ्लो में जेनएआई को पूरी तरह से इंटीग्रेट करना चाहिए।

सरसों और वनस्पति तेल महंगा

नई दिल्ली, 25 फरवरी (एजेंसियां)। विदेशी बाजारों के मिलेजुले रुख के बीच स्थानीय स्तर पर उठाव बढ़ने से आज दिल्ली थोक जिंस बाजार में सरसों तेल और वनस्पति तेल महंगा हो गया वहीं अन्य जिंसों के भाव स्थिर रहे।

तेल-तिलहन: वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में मार्च का पाम ऑयल वायदा नौ रिंगिट फिसलकर 4722 रिंगिट प्रति टन पर आ गया। वहीं, मार्च का अमेरिकी सोया तेल वायदा 0.35 सेंट की तेजी के साथ 46.65 सेंट प्रति पौंड बोला गया।

इस दौरान घरेलू बाजार में सरसों तेल 365 रुपए और वनस्पति तेल 292 रुपए प्रति क्विंटल की तेजी को छोड़कर अन्य खाद्य तेलों में टिकाव रहा। मूंगफली तेल, सूरजमुखी तेल, सोया रिफाइंड, और पाम ऑयल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ।

गुड़-चीनी : मीठे के बाजार में स्थिरता रही। इस दौरान चीनी और गुड़ के भाव पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर टिके रहे।

दाल-दलहन : दाल-दलहन के बाजार में टिकाव रहा। चना, दाल चना, मसूर दाल, मूंग दाल उड़द दाल और अरहर दाल के भाव पिछले दिवस के स्तर पर पड़े रहे।

अनाज : अनाज मंडी में भाव स्थिर रहे। इस दौरान गेहूं और चावल के दाम पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर टिके रहे।

जनवरी में बढ़ा क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल खर्च में दोहरे अंकों की वृद्धि

■ **जनवरी 2025 में सालाना आधार पर 10.8 प्रतिशत बढ़कर 1.84 लाख करोड़ रुपए हो गया**

मुंबई, 25 फरवरी (एजेंसियां)। आरबीआई द्वारा जारी लेटेस्ट आंकड़ों के अनुसार क्रेडिट कार्ड के जरिए उपभोक्ता व्यय जनवरी 2025 में सालाना आधार पर 10.8 प्रतिशत बढ़कर 1.84 लाख करोड़ रुपए हो गया है, जिसमें एचडीएफसी बैंक और आईसीआईसीआई बैंक ने सबसे अधिक वृद्धि दर्ज की है। देश के लीडिंग क्रेडिट कार्ड जारीकर्ता एचडीएफसी बैंक ने जनवरी में सालाना आधार पर 15.91 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करते हुए 50,664 करोड़ रुपए खर्च किए गए, जबकि आईसीआईसीआई बैंक का क्रेडिट कार्ड खर्च 20.25 प्रतिशत बढ़कर 35,682 करोड़ रुपए हो गया।

हालांकि, एसबीआई ने 6 प्रतिशत की गिरावट दर्ज करते हुए 28,976 करोड़ रुपए दर्ज किए। इसी तरह, एक्सिस बैंक के ग्राहकों का खर्च जनवरी में 0.45 प्रतिशत घटकर 20,212 करोड़ रुपए रह गया। महीने के दौरान प्रति कार्ड व्यय 16,910 रुपए रहा, जो पिछले साल के इसी महीने की तुलना में 1.09 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। एचडीएफसी बैंक ने जनवरी में 2,99,761 नए क्रेडिट कार्ड जारी किए, जबकि एसबीआई कार्ड्स ने 2,34,537 नए कार्ड जोड़े और आईसीआईसीआई बैंक ने 1,83,157 क्रेडिट कार्ड जारी किए। हालांकि, महीने के दौरान एक्सिस बैंक के नेट क्रेडिट कार्ड में 14,862 की गिरावट आई। आरबीआई के आंकड़ों के अनुसार, पिछले पांच वर्षों में क्रेडिट कार्ड की संख्या दोगुनी से अधिक बढ़कर लगभग 10.8 करोड़ हो गई है, लेकिन डेबिट कार्ड की संख्या स्थिर रही है।

आरबीआई के ऑनलाइन लेनदेन को अपनाने को मापने वाले सूचकांक के अनुसार, सितंबर 2024 तक पूरे भारत में डिजिटल भुगतान में सालाना आधार पर 11.1 प्रतिशत की दोहरे अंकों की वृद्धि दर्ज की गई है। आरबीआई ने हाल ही में अपनी एक रिपोर्ट में इस बात पर भी प्रकाश डाला है कि यूपीआई अपनी उपयोगिता और उपयोग में आसानी के कारण भारत में डिजिटल भुगतान के विकास में सबसे महत्वपूर्ण योगदानकर्ता रहा है।

रिपोर्ट के अनुसार, देश के डिजिटल भुगतानों में यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) की हिस्सेदारी 2019 में 34 प्रतिशत से बढ़कर 2024 में 83 प्रतिशत हो गई है।

खेल जगत

मैं केकेआर की कप्तानी के लिए निश्चित रूप से तैयार हूं : वेंकटेश अय्यर

कोलकाता। वेंकटेश अय्यर को अगर मौका मिलता है, तो वह कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) की कप्तानी करने के लिए 'निश्चित रूप से तैयार' हैं। हालांकि अय्यर (30) ने कभी भी प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में कप्तानी नहीं की है। रिटेन ना करने के बाद केकेआर ने बड़ी नीलामी में अय्यर को 23.75 करोड़ रूपये के बड़े मूल्य पर खरीदा था। वह अजिंक्य रहाणे के साथ केकेआर की कप्तानी के प्रबल दावेदार हैं। पिछले साल केकेआर को खिताब जिताने के बाद श्रेयस अय्यर अब पंजाब किंग्स की तरफ जा चुके हैं। तब से केकेआर के कप्तान की जगह खाली है। ईएसपीएनक्रिकइंफो से बात करते हुए अय्यर ने कहा कि मैंने हमेशा यह कहा है कि कप्तानी बस एक पद है, मैं लीडरशिप पर भरोसा करता हूं। यह एक बड़ी भूमिका है। कई बार कप्तानी ना होते हुए भी आप ड्रेसिंग रूम के लीडर हो सकते हैं।

इंग्लैंड और अफगानिस्तान दोनों के लिए 'करो या मरो' का मुकाबला आज

■ ग्रुप बी में अभी भी सभी चार टीमों की उम्मीदें अंतिम चार में प्रवेश करने पर टिकी हैं

लाहौर, 25 फरवरी (एजेंसियां)। लाहौर में बुधवार को अफगानिस्तान और इंग्लैंड में से एक टीम का सफर चैंपियंस ट्रॉफी से खत्म हो सकता है। इंग्लैंड को पहले मैच में ऑस्ट्रेलिया के हाथों 350 रन से ज्यादा बनाने के बावजूद हार मिली थी जबकि अफगानिस्तान को दक्षिण अफ्रीका ने 107 रनों से करारी शिकस्त दी थी। ग्रुप ए में जहां दो टीमों ने सेमीफाइनल का टिकट ले लिया है तो ग्रुप बी में अभी भी सभी चार टीमों की उम्मीदें अंतिम चार में प्रवेश करने पर टिकी हैं। इंग्लैंड के लिए ये इतना आसान भी नहीं होने वाला क्योंकि आखिरी बार जब वनडे में इन दोनों टीमों की भिड़ंत हुई थी तो जीत का सेहरा अफगानिस्तान के सिर बंधा था। 2023 विश्व कप में अफगानिस्तान ने दिल्ली में इंग्लैंड को 69 रन से मात दी थी।

इंग्लैंड के सलामी बल्लेबाज बेन डकेट ने पिछले मैच में चैंपियंस ट्रॉफी इतिहास का सबसे बड़ा व्यक्तिगत स्कोर बनाया था जिसकी बदौलत इंग्लैंड ने भी इस प्रतियोगिता का सबसे बड़ा स्कोर बना डाला था। लेकिन ये रिकॉर्ड कुछ ही घंटे तक रहा क्योंकि इंग्लैंड के गेंदबाज 351 रन के स्कोर को भी डिफेंड नहीं कर पाए। ऑस्ट्रेलिया ने चैंपियंस ट्रॉफी इतिहास के सबसे बड़े चेज को अंजाम दे दिया था। इंग्लैंड की परेशानी उनकी गेंदबाजी है - मार्क वुड और जोफ्रा आर्चर जैसे अनुभवी तेज गेंदबाज के रहते हुए भी पिछले मुकाबले में रनों के पहाड़ की भी रक्षा नहीं कर पाए थे। साथ ही साथ तेज गेंदबाज ब्राइडन कार्स भी चोट की वजह से टूर्नामेंट से बाहर हो गए हैं, कार्स की जगह लेग स्पिनर रेहान अहमद को दल में जोड़ा गया है। दूसरी तरफ अफगानिस्तान की परेशानी ये है कि अगर उनकी सलामी जोड़ी, रहमानउल्लाह गुरबाज और इब्राहिम जादरान, चल जाती है तो ये टीम बिल्कुल अलग लगती है। लेकिन इस जोड़ी को जल्दी तोड़ दिया गया तो फिर अफगानिस्तान का मिडिल ऑर्डर बिखर जाता है।

लाहौर की पिच का पेंच : लाहौर की पिच बल्लेबाजों के लिए जन्नत है जिसकी झलक यहां खेले गए ऑस्ट्रेलिया बनाम इंग्लैंड मुकाबले में हमने देखी थी। ऐसे में एक बार फिर रनों की बारिश की संभावना की जा सकती है। साथ ही शाम में शबनम (ओस) के आने के बाद गेंदबाजों के लिए और भी मुश्किल हो सकती है। लिहाजा टॉस जीतने वाली टीम यहां पहले गेंदबाजी करना ही चाहेगी।

इंग्लैंड से मुकाबले के लिए हम तैयार: शाहिदी

लाहौर। अफगानिस्तान के कप्तान हशमतुल्लाह शाहिदी ने अपनी टीम को आत्ममुग्धता से बचने की अपील करते हुये कहा कि उनकी टीम इंग्लैंड से मुकाबले के लिये पूरी तरह तैयार है। उन्होने टीम के सदस्यों को आत्ममुग्धता से बचने की सलाह देते हुये मैदान में बने रहने के महत्व पर जोर दिया। टूर्नामेंट शुरू होने से पहले ही अफगानिस्तान की काफी प्रशंसा की गई, जिसमें कई क्रिकेटर्स भी शामिल थे। दक्षिण अफ्रीका से हार के बाद इंग्लैंड के खिलाफ महत्वपूर्ण मुकाबले की तैयारी कर रहे कप्तान शाहिदी ने स्वीकार किया कि उनकी टीम को परिणाम देने पर ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है।

दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया का मैच बारिश के चलते रद्द

रावलपिंडी, 25 फरवरी (एजेंसियां)। रावलपिंडी से अच्छी खबर नहीं है। बारिश के चलते दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के मैच को रद्द करने का फैसला लिया गया है। इस मैच के रद्द होने के चलते ग्रुप बी से सेमीफाइनल की दौड़ रोचक हो गई है। कल इसी ग्रुप से इंग्लैंड और अफगानिस्तान का मुकाबला खेला जाना है जो इस ग्रुप की स्थिति का फैसला करेगा। ग्रुप बी की अंक तालिका में दक्षिण अफ्रीका अभी भी शीर्ष पर बरकरार है। हालांकि ग्रुप बी अब पूरी तरह से खुल गया है और कोई भी टीम इस समय सेमीफाइनल की दौड़ से बाहर नहीं हुई है। ऑस्ट्रेलिया के कप्तान स्टीव स्मिथ ने मैच रद्द होने के बाद कहा : हमें नहीं लगा था कि मैच रद्द हो जाएगा। अब समीकरण स्पष्ट है। अगर हम अंतिम मैच अफगानिस्तान के खिलाफ जीत गए तो सीधा सेमीफाइनल में पहुंच जाएंगे। अफगानिस्तान एक खतरनाक टीम है वो किसी भी टीम को हराने का माद्दा रखती है। दक्षिण अफ्रीका के कप्तान तेम्बा बावुमा ने कहा : अब हम अगले मैच की ओर देख रहे हैं, हम अब तक अपने प्रदर्शन से संतुष्ट हैं और आत्मविश्वास से भरे हुए हैं। इंग्लैंड के खिलाफ अफगानिस्तान वाले मैच पर हमारी नजरें रहेंगी क्योंकि इससे अंक तालिका की तस्वीर और साफ हो जाएगी।

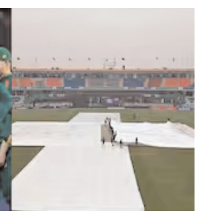

भारत को आत्मसंतुष्ट होने की जरूरत नहीं : देवजीत सैकिया

नई दिल्ली, 25 फरवरी (एजेंसियां)। चैंपियंस ट्रॉफी में पाकिस्तान पर भारत की छह विकेट की शानदार जीत के बाद, बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया ने टीम के प्रयासों की सराहना की और उन्हें आत्मसंतुष्ट न होने तथा आगे के बड़े मैचों पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह दी। विराट कोहली के शानदार नाबाद शतक की बदौलत भारत ने 242 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए 42.3 ओवर में लक्ष्य हासिल कर लिया।

उनकी पारी में सात चौके शामिल थे, जिसमें उनके बेहतरीन कवर ड्राइव भी शामिल थे, जिससे उनके आलोचकों को उनके पुराने दिनों की याद आ गई। मैच के दौरान, कोहली 14,000 वनडे रन पूरे करने वाले सबसे तेज बल्लेबाज बन गए और उन्होंने वनडे में क्षेत्ररक्षक के रूप में भारत के लिए सबसे ज्यादा कैच लेने के मोहम्मद अजहरुद्दीन के रिकॉर्ड को भी पीछे छोड़ दिया। उन्हें उनकी दोहरी वीरता के लिए प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। गेंदबाजी में कुलदीप यादव ने तीन विकेट लिए, जबकि ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या ने अपने आठ ओवरों में 2-31 के आंकड़े के साथ वापसी की।

■ मैच के दौरान, कोहली 14,000 वनडे रन पूरे करने वाले सबसे तेज बल्लेबाज बन गए
■ स्टेडियम में मौजूद 70 प्रतिशत भीड़ टीम इंडिया का समर्थन कर रही थी

सैकिया ने कहा कि हमें आत्मसंतुष्ट होने की जरूरत नहीं है... हमें आगे के बड़े मैचों (सेमीफाइनल और फाइनल) पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। पूरी टीम अच्छा प्रदर्शन कर रही है, रोहित (शर्मा) रन बना रहे हैं, विराट (कोहली) ने शानदार शतक लगाया और हार्दिक पांड्या ने वास्तव में अच्छी गेंदबाजी की। इसलिए, हम पाकिस्तान पर जीत से बहुत खुश हैं। स्टेडियम (दुबई में) में मौजूद 70 प्रतिशत भीड़ टीम इंडिया का समर्थन कर रही थी और माहौल बहुत शानदार था। सभी को टीम पर गर्व है। ग्रुप ए में बांग्लादेश और पाकिस्तान के खिलाफ लगातार जीत दर्ज करने के बाद, रोहित शर्मा की अगुवाई वाली टीम अब 2 मार्च को अपने अंतिम ग्रुप मैच में न्यूजीलैंड से भिड़ेगी।

भारत और न्यूजीलैंड दोनों ने ग्रुप ए से सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई कर लिया है, जबकि मेजबान पाकिस्तान और बांग्लादेश टूर्नामेंट में लगातार हार के बाद जल्दी बाहर हो गए हैं। भारत और न्यूजीलैंड ने आखिरी बार 2023 विश्व कप सेमीफाइनल में एक दूसरे का सामना किया था, जहां मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में मैन इन ब्लू ने 70 रनों से जीत दर्ज कर फाइनल में जगह बनाई थी। दूसरी ओर, ग्रुप बी से दो सेमीफाइनल स्थानों के लिए दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और अफगानिस्तान मैदान में हैं। दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया ने अपने अभियान की शुरुआत क्रमश: अफगानिस्तान और इंग्लैंड के खिलाफ जीत के साथ की।

प्रशंसकों और टीम प्रबंधन से 'बहुत देखभाल और प्यार मिला' : रवींद्र

रावलपिंडी, 25 फरवरी (एजेंसियां)। न्यूजीलैंड के युवा बल्लेबाज रचिन रवींद्र ने आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी से पहले मैदान पर एक अजीब दुर्घटना का सामना करने के बाद शानदार वापसी के लिए प्रशंसकों और टीम प्रबंधन से मिले प्यार और समर्थन को श्रेय दिया, जिसे उन्होंने 'अजीब पल' करार दिया। इस महीने की शुरुआत में वनडे त्रिकोणीय श्रृंखला के दौरान, पाकिस्तान के खिलाफ मैच के 38वें ओवर में कैच लेने के प्रयास में माथे पर गेंद लगने के बाद रवींद्र को मैदान से बाहर जाना पड़ा था। पाकिस्तान के खिलाफ महीने की शुरुआत में हुई घटना से एक बुरी तरह से घायल होने और साथ ही वापसी के प्रोटोकॉल का पालन करने के बावजूद, रवींद्र ने अपनी प्रतिकूल टूर्नामेंट तैयारियों के कारण बाधा उत्पन्न होने का कोई संकेत नहीं दिया। 25 वर्षीय स्टार ने न केवल बांग्लादेश के खिलाफ शानदार वापसी की, बल्कि एक ऐसा प्रदर्शन भी किया जिसने उन्हें इतिहास के पन्नों में दर्ज कर दिया। वह आईसीसी पुरुष क्रिकेट विश्व कप और चैंपियंस ट्रॉफी दोनों में डेब्यू पर शतक बनाने वाले इतिहास के पहले खिलाड़ी बन गए। इस प्रक्रिया में, उन्होंने अपनी 26वीं पारी में वनडे क्रिकेट में 1000 रन भी पूरे किए, जो न्यूजीलैंड के लिए पांचवें सबसे तेज रन है। रचिन ने चैंपियंस ट्रॉफी में अपने डेब्यू पर 105 गेंदों पर 112 रन की शानदार शतकीय पारी खेली, जिससे न्यूजीलैंड ने सोमवार शाम को बांग्लादेश के खिलाफ पांच विकेट से आसान जीत के साथ आईसीसी के इस बड़े इवेंट के सेमीफाइनल में जगह बना ली। न्यूजीलैंड की जीत के बाद उन्होंने मीडिया से कहा कि उस अजीब पल के बाद वापस आकर अपने क्रिकेट का लुत्फ उठाना बहुत अच्छा लगा। ब्लैक कैप्स सेटअप के संदर्भ में, कोच, (डॉक्टर) और फिजियो का शुक्रिया, मैं इससे काफी हद तक बाहर आ पाया हूं। उन्होंने आगे कहा कि मुझे बहुत देखभाल और प्यार मिला है और यह जानकर मुझे वाकई बहुत खुशी होती है कि कितने लोग मेरी परवाह करते हैं और मैं उन सभी का बहुत आभारी हूं जिन्होंने मेरा साथ दिया और अपना समर्थन दिया, इसलिए इसके लिए धन्यवाद। मैं सभी के प्यार और समर्थन के लिए बेहद आभारी हूं।'और जहां रवींद्र ने बल्ले से धमाल मचाया, वहीं न्यूजीलैंड को दाएं हाथ के स्पिनर माइकल ब्रेसवेल की गेंदबाजी से भी फायदा हुआ, जिन्होंने अपने 10 ओवरों में 4-26 विकेट लिए। 'बीस्टी' (ब्रेसवेल) ने अपनी पूरी ताकत से गेंदबाजी की। पिछले कुछ सालों में एक क्रिकेटर के रूप में उनका विकास देखना अद्भुत रहा है। वह अपनी कला को इतनी अच्छी तरह से सीख रहे हैं और उन्हें इतना लगातार खेलते देखना, जैसा कि वह हाल ही में कर रहे हैं, अद्भुत है। इससे हमारे स्पिन आक्रमण को बहुत गहराई मिलती है। रविंद्र ने कहा कि जाहिर है कि टीम की अगुआई 'सैंट' (मिशेल सैंटनर) करेंगे, जो विश्व स्तरीय गेंदबाज हैं और दुनिया के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजों में से एक हैं। उनके साथ 'माइक' (ब्रेसवेल) जैसे गेंदबाज का होना शानदार है।

■ रचिन ने चैपियंस ट्रॉफी में अपने डेब्यू पर 105 गेंदों पर 112 रन की शानदार शतकीय पारी खेली

आईपीएल 2025 दिल्ली कैपिटल्स ने मैथ्यू मॉट को सहायक कोच नियुक्त किया

नई दिल्ली, 25 फरवरी (एजेंसियां) दिल्ली कैपिटल्स (डीसी) ने आईपीएल 2025 से पहले मैथ्यू मॉट को सहायक कोच नियुक्त किया है, जिसकी घोषणा फ्रेंचाइजी ने मंगलवार को की। मॉट हेमंग बदानी की सहायता करेंगे, जिन्हें पिछले साल अक्टूबर में नया मुख्य कोच नियुक्त किया गया था। फ्रेंचाइजी में क्रिकेट के निदेशक वेणुगोपाल राव और भारत के पूर्व तेज गेंदबाज मुनाफ पटेल भी उनके गेंदबाजी कोच हैं। इससे पहले, मॉट ने कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के सहायक कोच के रूप में काम किया था, जब जॉन बुकानन 2008 और 2009 में टूर्नामेंट के पहले दो सत्रों में मुख्य कोच थे। मॉट की आखिरी बड़ी नौकरी इंग्लैंड की पुरुष राष्ट्रीय टीम के व्हाइट-बॉल कोच के रूप में थी। उन्होंने इंग्लैंड की 2022 टी20 विश्व कप जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, लेकिन मिश्रित कार्यकाल के बाद पिछले साल जुलाई में पद छोड़ दिया। इंग्लैंड की सफेद गेंद की नौकरी से बाहर होने के बाद, मॉट को पिछले सितंबर में तीन साल के सौदे पर बीबीएल में सिडनी सिक्सर्स द्वारा सहायक कोच के रूप में नियुक्त किया गया था। ऑस्ट्रेलियाई महिला क्रिकेट में 2015 से 2022 तक उनके कार्यकाल के दौरान सबसे सफल टीमों में से एक बनी हुई थी। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया की महिलाओं को दो टी 20 विश्व कप और 50 ओवर के विश्व कप खिताब दिलाए। उनके कार्यकाल में, ऑस्ट्रेलियाई महिलाएं चार एशेज श्रृंखलाओं में अपराजित रहीं। डीसी, जो 2020 में लीग के 16 संस्करणों में केवल एक बार आईपीएल के फाइनल में पहुंची है, पिछले संस्करण में छठे स्थान पर रही। अधिकांश बड़े खिलाड़ियों को जाने देने के बाद, डीसी ने केवल अक्षर पटेल, कुलदीप यादव, ट्रिस्टन स्टब्स और अभिषेक पोरेल को बरकरार रखा।

■ मॉट की आखिरी बड़ी नौकरी इंग्लैंड की पुरुष राष्ट्रीय टीम के व्हाइट-बॉल कोच के रूप में थी

सार संक्षेप

प्लेऑफ की दौड़ से बाहर हो चुकी हैदराबाद एफसी

कोलकाता। ईस्ट बंगाल एफसी बुधवार को शाम 7:30 बजे यहां विवेकानंद युवा भारती क्रीड़ांगन में खेले जाने वाले इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) 2024-25 मुकाबले में हैदराबाद एफसी की मेजबानी करेगी। रेड एंड गोल्ड ब्रिगेड लगातार दो जीत के बाद इस मुकाबले में उतरेगी। अंतिम तीन मुकाबलों में जीत शीर्ष-6 में जगह बनाने की उसकी रही-सही संभावनाएं बनाए रखेगी। ईस्ट बंगाल एफसी 21 मैचों में सात जीत, तीन ड्रा और 11 हार से 24 अंक लेकर तालिका में नौवें स्थान पर है और छठे स्थान पर मौजूद मुम्बई सिटी एफसी (32) से नौ अंक पीछे है। हैदराबाद एफसी के लिए स्थिति बिल्कुल अच्छी नहीं है, जिसे पिछले पांच मैचों में दो जीत और दो हार मिली है। हैदराबाद एफसी 21 मैचों में चार जीत, पांच ड्रा और 12 हार से 17 अंक लेकर 13 टीमों की अंक तालिका में 12वें स्थान पर है और वह जीत से मेजबान टीम का प्लेऑफ समीकरण बिगाड़ना चाहेगी।

भारत ने दृष्टिहीनों की टी20 क्रिकेट श्रृंखला जीती

बेंगलुरु। टीम इंडिया ने दृष्टिहीन पुरुषों की द्विपक्षीय टी20 क्रिकेट सीरीज में शानदार प्रदर्शन करते हुए बांग्लादेश पर नौ विकेट से बड़ी जीत हासिल की। मणिपाल यूनिवर्सिटी कैंपस में इस जोरदार जीत के साथ भारत ने सीरीज 3-0 से अपने नाम कर ली। टॉस जीतकर पहले क्षेत्ररक्षण करते हुये भारत ने शानदार गेंदबाजी का मुजाहिरा किया और बांग्लादेश को 20 ओवरों में चार विकेट पर 173 रन पर रोक दिया। सलमान 38 गेंदों में 50 रन बनाकर बांग्लादेश के लिये सर्वाधिक योगदान देने वाले बल्लेबाज बने वहीं भारत की ओर से टी. दुर्गा राव ने तीन विकेट लेकर प्रभावित किया। जवाब में बल्लेबाजी करने उतरे भारत के सुनील रमेश ने सिर्फ 46 गेंदों में नाबाद 96 रन बनाकर मैच को अपनी टीम के पक्ष में कर दिया। नकुल बदनायक ने 31 गेंदों में 50 रन बनाए।

आथर्टन ने भारत-पाक मुकाबले को 'एकतरफा' बताया

नई दिल्ली, 25 फरवरी (एजेंसियां)। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल आथर्टन ने चैंपियंस ट्रॉफी के ग्रुप ए मैच में भारत की जीत के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तीव्र प्रतिद्वंद्विता को 'एकतरफा' बताया है। 2025 चैंपियंस ट्रॉफी में भारत-पाकिस्तान के बीच बहुप्रतीक्षित मुकाबला एक और एकतरफा साबित हुआ, जिसमें रोहित शर्मा की टीम ने दुबई में छह विकेट से शानदार जीत हासिल कर सेमीफाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली स्काई स्पोर्ट्स पॉडकास्ट पर बोलते हुए, आथर्टन ने इस बात पर प्रकाश डाला कि इस मैच को लेकर इतनी चर्चा के बावजूद, यह मैच उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा। आथर्टन ने कहा कि खैर, यह पूरी तरह से एकतरफा था। बहुत दूर से देखने पर यह बहुत ही अनुमानित लग रहा था। पाकिस्तान की बल्लेबाजी लाइन-अप कमजोर थी, जैसा कि न्यूजीलैंड के खिलाफ पहले मैच में था। बल्लेबाजी में थोड़ी ऊर्जा और गतिशीलता की कमी दिखी। उस मुकाबले में थोड़ी समस्या है, है न? क्योंकि यह सभी तरह के कारणों से एक बहुप्रतीक्षित मुकाबला है।

केरल का लक्ष्य फाइनल मुकाबले में पहला खिताब जीतना

नागपुर, 25 फरवरी (एजेंसियां)। केरल की नजरें अपने पहले रणजी ट्रॉफी खिताब पर टिकी हैं, जब वे दो बार के चैंपियन विदर्भ के खिलाफ फाइनल मुकाबला खेलेंगे, जो बुधवार से जामथा के वीसीए स्टेडियम में खेला जाएगा। केरल का यह सीजन शानदार रहा है, वे अपने इतिहास में दूसरी बार सेमीफाइनल में पहुंचे हैं, इससे पहले उन्होंने 2018-19 सीजन में यह उपलब्धि हासिल की थी। हालांकि, तब से वे कभी भी इस चरण से आगे नहीं बढ़ पाए हैं। लेकिन, मुख्य कोच अमय खुरसिया के मार्गदर्शन में, टीम ने लंबे समय से चली आ रही इस बाधा को तोड़ दिया और गुजरात के खिलाफ पहली पारी में दो रन की मामूली बढ़त लेने के बाद अपने पहले रणजी ट्रॉफी फाइनल में पहुंचकर इतिहास रच दिया। फाइनल तक पहुंचने के दौरान, केरल ने अपने सभी चार ग्रुप-स्टेज मैच ड्रॉ किए, जिसमें मध्य प्रदेश, हरियाणा, बंगाल और कर्नाटक का सामना करना पड़ा और नॉकआउट चरण में आगे बढ़ गया। सचिन बेबी की अगुआई वाली टीम ने जम्मू-कश्मीर के खिलाफ क्वार्टर फाइनल मैच ड्रॉ किया और पहली पारी में बढ़त के साथ अपने दूसरे सेमीफाइनल में पहुंच गई। सेमीफाइनल में नाटकीय जीत के साथ उन्होंने पहली बार फाइनल में जगह बनाई।

केरल के फाइनल में पहुंचने की दौड़ में उनके 38 वर्षीय अनुभवी जलज सक्सेना और सलमान निजार का अहम प्रदर्शन रहा। सक्सेना ने सीजन की शुरुआत में 6000 रन और 400 विकेट का दुर्लभ रणजी डबल पूरा किया, जबकि निजार 86.71 की औसत से 607 रन बनाकर उनके सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी रहे। तेज गेंदबाज एमडी निधीश एक मजबूत ताकत बन गए हैं और उन्होंने क्वार्टर फाइनल में दस विकेट भी लिए।

■ केरल के फाइनल में पहुंचने की दौड़ में उनके 38 वर्षीय अनुभवी जलज सक्सेना और सलमान निजार का अहम प्रदर्शन रहा

डब्ल्यूटीटी यूथ कंटेंडर में उतरेंगे 165 भारतीय खिलाड़ी

वडोदरा, 25 फरवरी (एजेंसियां)। डब्ल्यूटीटी यूथ कंटेंडर वडोदरा, डब्ल्यूटीटी यूथ सीरीज का एक हिस्सा है, जो पहली बार भारत में 25 फरवरी से 1 मार्च तक समा इंडोर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में खेला जाएगा। कुल 165 भारतीय खिलाड़ी 12 श्रेणियों में प्रतिस्पर्धा करेंगे, जिसमें आठ देशों के प्रतिभागी शामिल होंगे, सभी शीर्ष पुरस्कार के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगे। स्पॉटलाइट वडोदरा पर होगी, जो पहली बार यूथ कंटेंडर की मेजबानी कर रहा है, जो भविष्य के मार्की इवेंट्स के लिए माहौल तैयार कर रहा है। इस इवेंट की शुरुआत पहले दिन अंडर/17 और अंडर/13 लड़कों और लड़कियों की श्रेणियों से होगी, जहां दिव्यांशी भौमिक और अभिनंद प्रथिवादी पसंदीदा के रूप में शुरुआत करेंगे। अंकुर भट्टाचार्जी, सयाली वानी और दिव्यांशी भौमिक जैसे बड़े नाम अपनी प्रतिभा दिखाने और अपने-अपने वर्गों में अपना दबदबा साबित करने के लिए कोर्ट में उतरेंगे।

सिमंस की दमदार पारी की बदौलत ऑस्ट्रेलिया को 7 विकेट से रौंदा

नवी मुंबई, 25 फरवरी (एजेंसियां)। बकी 44 गेंदों पर खेली गई 94 रनों की आक्रामक पारी ने शेन वॉटसन के 48 गेंदों पर बनाए गए शतक को पीछे छोड़ दिया और वेस्टइंडीज मास्टर्स ने डीवाई पाटिल स्पोर्ट्स स्टेडियम में खेले गए पहले इंटरनेशनल मास्टर्स लीग (आईएमएल) टूर्नामेंट में ऑस्ट्रेलिया मास्टर्स को 7 विकेट से हरा दिया। आईएमएल में हाई-स्कोरिंग मैच बनाने के चलन को जारी रखते हुए, स्टेडियम में मौजूद दर्शकों को वॉटसन के सिग्नेचर स्ट्रोक्स देखने को मिले, जिसमें वेस्टइंडीज के महान बल्लेबाज ब्रायन लारा द्वारा टॉस जीतकर फील्डिंग करने का फैसला करने के बाद पुरानी यादें ताजा हो गईं। 43 वर्षीय वॉटसन ने कभी ऐसा अहसास नहीं कराया कि उन्होंने खेलना छोड़ दिया है, क्योंकि उन्होंने वेस्टइंडीज के गेंदबाजों की धज्जियां उड़ाते हुए मात्र 27 गेंदों पर अपना अर्द्धशतक पूरा किया और अपना अगला अर्द्धशतक 21 गेंदों पर पूरा किया। इस प्रक्रिया में, वॉटसन ने कुछ बड़ी साझेदारियों में भी भाग लिया, जिसने विशाल लक्ष्य की नींव रखी। बेन डंक (11 गेंदों पर 15 रन) के साथ पारी की शुरुआत करने उतरे वॉटसन ने 34 रनों की साझेदारी की और फिर कैलम फर्ग्यूसन (15 गेंदों पर 13 रन) के साथ दूसरे विकेट के लिए 83 रनों की साझेदारी की। उन्होंने डेनियल क्रिश्चियन (15 गेंदों पर 32 रन) के साथ तीसरे विकेट के लिए 54 रनों की साझेदारी की, जिसने ऑस्ट्रेलियाई टीम के लिए विशाल स्कोर की नींव रखी। दूसरे छोर पर अपने साझेदारों को खोने के बावजूद, वॉटसन ने सुनिश्चित किया कि वह मध्यक्रम में बने रहें और ऑस्ट्रेलियाई पारी को गति प्रदान करें। उन्होंने बाएं हाथ के स्पिनर सुलेमान बेन को विशेष रूप से पसंद किया और उनकी गेंदों पर दो छक्के और इतने ही चौके जड़कर पारी के 9वें ओवर में 21 रन बटोरे। वॉटसन, जिन्हें 80 रन पर एश्ले नर्स द्वारा कैच छोड़ने पर जीवनदान मिला था, अंततः उसी गेंदबाज की गेंद पर आउट हो गए, लेकिन तब तक वे 52 गेंदों में 107 रन बनाकर अपना काम कर चुके थे, जिसमें नौ चौके और इतने ही छक्के शामिल थे। इस बीच, नर्स विंडीज के सबसे सफल गेंदबाज रहे, उन्होंने 3-16 के आंकड़े हासिल किए, जबकि जेरोम टेलर और रवि रामपॉल ने दो-दो विकेट लिए।

■ इस प्रक्रिया में, वॉटसन ने कुछ बड़ी साझेदारियों में भी भाग लिया, जिसने विशाल लक्ष्य की नींव रखी

छत्तीसगढ़ ओपन गोल्फ के उद्घाटन संस्करण में हिस्सा लेंगे माने, गंडास, सातो जैसे सितारे

रायपुर (छत्तीसगढ़), 25 फरवरी (एजेंसियां)। ओलंपियन उदयन माने सहित प्रोफेशनल गोल्फ टूर ऑफ इंडिया (पीजीटीआई) के कुछ शीर्ष खिलाड़ी छत्तीसगढ़ ओपन गोल्फ चैंपियनशिप में भाग लेंगे। यह राज्य में पहला पीजीटीआई इवेंट है, जिसमें 1 करोड़ रुपये की पुरस्कार राशि है। यह 25 से 28 फरवरी तक नया रायपुर के फेयरवे गोल्फ एंड लेक रिसॉर्ट में खेला जाएगा। टूर्नामेंट में 123 प्रोफेशनल और तीन एमेच्योर सहित 126 खिलाड़ी हिस्सा लेंगे। यह इवेंट स्ट्रोक-प्ले फॉर्मेट में खेला जाएगा, जिसमें 18 होल के चार राउंड होंगे। दो राउंड के बाद शीर्ष 50 खिलाड़ी और टाई कट में जगह बनाएंगे। पीजीटीआई ने सोमवार को यहां घोषणा की कि कोर्स का पार 69 है। टूर्नामेंट में दिग्गजों से सजे खिलाड़ियों में प्रमुख भारतीय पेशेवर खिलाड़ी ओम प्रकाश चौहान, राशिद खान, मनु गंडास, अमन राज और चिक्कारंगप्पा एस शामिल हैं। टूर्नामेंट में सात अलग-अलग देशों के 13 विदेशी खिलाड़ी भाग ले रहे हैं। विदेशी खिलाड़ियों में बांग्लादेशी जमाल हुसैन, बादल हुसैन, मोहम्मद अकबर हुसैन और मोहम्मद सोमरत सिकदर, श्रीलंकाई एन. थंगाराजा और के. प्रबागरन, अमेरिकी कोइचिरो सातो और डोमिनिक पिकिरिलो, नेपाल के सुकरा बहादुर राय और सुभाष तमांग, चेक गणराज्य के स्टीफन दानेक, इटली के फेडेरिको जुचेट्टी और युगांडा के जोशुआ सील शामिल हैं। फेयरवे गोल्फ एंड लेक रिसॉर्ट, नया रायपुर, 450 एकड़ की झांझ झील के किनारे स्थित है और लगभग 500 एकड़ के जंगल से घिरा हुआ है। पीजीटीआई ने अब तक भारत भर में 16 राज्यों, दो केंद्र शासित प्रदेशों और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में कार्यक्रम आयोजित किए हैं। एसईसीएल छत्तीसगढ़ ओपन गोल्फ चैंपियनशिप के आयोजन के साथ, पीजीटीआई छत्तीसगढ़ राज्य में अपना पहला कदम रख रहा है।

■ यह राज्य में पहला पीजीटीआई इवेंट है, जिसमें 1 करोड़ रुपये की पुरस्कार राशि है